04 - समावेशी समाज के लिए बुद्ध और डॉ. आंबेडकर जरूरी

05 - भटकी हुई पत्रकारिता को नारद के आदर्श की जरूरत

A Daily News Magazine
इंदौर
शुक्रवार, 24 मई, 2024

06- गौनापुर वाटर पार्क में पुलिस की छापामार कार्रवाई

07- प्रो. बिशम्भरनाथ मिश्र: लीक से हटकर फैसले लेने वाले महंत

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 9 अंक 215, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

फॉर्म 17C क्या है, क्यों उठ रही इसे सार्वजनिक करने की मांग

मोहन कुमार

लोकसभा चुनाव के बीच वोटिंग के आंकड़ों को लेकर लगातार सवाल उठाए जा रहे हैं। क्यों वोटिंग के आंकड़े चुनाव खत्म होने के कई-कई दिन बाद जारी हो रहे हैं। राजनीतिक दल बार-बार कह रहे हैं कि चुनाव के दिन वोटिंग का प्रतिशत कुछ और, और एक हफ्ते बाद कुछ और कैसे हो सकता है? इसी बीच फॉर्म 17-सी की चर्चा खूब हो रही है। राजनीतिक दल इसके लिए सुप्रीम कोर्ट पहुंच गए हैं, वहीं चुनाव आयोग ने फॉर्म 17-सी के डेटा को सार्वजनिक करने से इनकार कर दिया है।

चुनाव आयोग की ओर से जारी वोटिंग के आंकड़ों पर आपत्ति जताते हुए ADR ने सुप्रीम कोर्ट में 9 मई को एक याचिका दायर की थी। याचिका में चुनाव आयोग से '2024 लोकसभा चुनाव के प्रत्येक चरण की वोटिंग के बाद मतदान केन्द्रवार फॉर्म 17C भाग-I में दर्ज आंकड़े और निर्वाचन क्षेत्रवार वोटिंग के आंकड़े' जारी करने की मांग की है। इसके साथ ही याचिका में चुनाव आयोग की वेबसाइट पर फॉर्म 17C भाग-II की स्कैन की गई कॉपियां भी अपलोड करने की अपील की गई है, जिसमें 2024 के लोकसभा चुनावों के परिणामों के संकलन के बाद उम्मीदवार-वार मतगणना का परिणाम शामिल हो।

17 मई 2024 को इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ ने चुनाव आयोग को 24 मई तक जवाब दाखिल करने का आदेश दिया।

सुनवाई के दौरान ADR की ओर से पेश हुए वकील प्रशांत भूषण ने कहा कि चुनाव बूथ पर मौजूद हर मतदान अधिकारी को फॉर्म 17सी भरकर रिटर्निंग ऑफिसर को जमा करना होता है। इस फॉर्म में मतदान के वास्तविक आंकड़े होते हैं, जिसे चुनाव आयोग द्वारा अपलोड किया जाना आवश्यक है।

22 मई को चुनाव आयोग ने सुप्रीम कोर्ट में अपना जवाब दाखिल करते हुए कहा कि फॉर्म 17C (मतदान का रिकॉर्ड) को वेबसाइट पर अपलोड करने से गड़बड़ी हो सकती है, तस्वीरों के साथ छेड़छाड़ की संभावना है, जिससे 'व्यापक असुविधा और अविश्वास' पैदा हो सकता है।

चुनाव संचालन नियम, 1961 के अनुसार, दो फॉर्म हैं जिनमें निर्वाचकों और मतदाताओं की संख्या का डेटा होता है- फॉर्म 17A और 17C। फॉर्म 17A मतदाताओं का रजिस्टर है, जिसमें पोलिंग ऑफिसर बूथ पर आने वाले प्रत्येक मतदाता का डिटेल दर्ज करता है। वहीं फॉर्म 17C दर्ज किए गए वोटों का लेखा-जोखा होता है। वोटिंग खत्म होने के बाद सभी उम्मीदवारों को उनके पोलिंग एजेंटों के जरिए फॉर्म 17C उपलब्ध कराया जाता है। फॉर्म 17C में एक बूथ पर कुल रजिस्टर्ड वोटर्स और उनमें से कितनों ने वोट किया, इसकी जानकारी होती है। यह जानकारी वोटर टर्नआउट ऐप पर उपलब्ध नहीं होती है।

फॉर्म 17C में भी दो भाग होते हैं। पहले भाग में दर्ज वोटों का हिसाब होता है तो वहीं दूसरे भाग में गिनती का नतीजा होता है। पहला भाग वोटिंग के दिन बाद में भरा जाता है। इसमें बूथ पर इस्तेमाल की जाने वाली EVM का ID नंबर होता है। बूथ पर आवंटित मतदाताओं की कुल संख्या, मतदाता रजिस्टर (फॉर्म 17A) में दर्ज मतदाताओं की कुल संख्या, वैसे मतदाताओं की संख्या जिन्होंने हस्ताक्षर करने के बाद वोट नहीं दिया, कितने लोगों को वोट नहीं करने दिया गया, कितने टेस्टिंग वोट हटाए जाने हैं और प्रति वोटिंग मशीन में दर्ज कुल वोटों की जानकारी होती है। इस फॉर्म के दूसरे भाग में फाइनल नतीजा होता है, जो काउंटिंग के दिन भरा जाता है।

चुनाव संचालन नियम, 1961 के नियम 49S के मुताबिक, हर बूथ के पोलिंग ऑफिसर का दायित्व होता है कि हर EVM में कितने वोट पड़े, उसका रिकॉर्ड रखना। हर पार्टी का पोलिंग एजेंट पोलिंग ऑफिसर से यह डाटा मांग सकता है और पोलिंग ऑफिसर द्वारा यह डाटा फॉर्म 17C में उनके हस्ताक्षर के साथ देना अनिवार्य है।

चुनावों में किसी प्रकार की धांधली, बोगस वोटिंग या फिर EVM से छेड़छाड़ रोकने के लिए फॉर्म 17C जरूरी होता है। जानकारों के मुताबिक, फॉर्म 17C के जरिए बैलटिंग यूनिट (बीयू), कंट्रोल यूनिट (सीयू) और वीवीपैट सीरियल नंबर में हेरफेर को चुनावी याचिका दायर कर चुनौती दी जा सकती है। वहीं फॉर्म 17C नहीं होने पर कोर्ट का रास्ता बंद हो सकता है।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने 6 मई को चुनाव आयोग द्वारा जारी वोटिंग के आंकड़ों में कथित गड़बड़ी और रजिस्टर्ड मतदाताओं की सूची प्रकाशित नहीं करने के संबंध में इंडिया गठबंधन के नेताओं को एक पत्र लिखा था। इस पत्र में उन्होंने लोकसभा चुनाव के पहले और दूसरे चरण के वोटिंग के आंकड़ों को देरी से जारी करने को लेकर सवाल उठाए थे। हालांकि, चुनाव आयोग 10 मई को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के आरोपों का खंडन किया था। वहीं 26 अप्रैल को दूसरे चरण की वोटिंग के बाद रात 9 बजे जारी चुनाव आयोग की प्रेस रिलीज में बताया गया कि शाम 7 बजे तक 60.96% मतदान हुआ था। 7 मई को तीसरे चरण की वोटिंग के बाद चुनाव आयोग ने सबसे पहले रात 8 बजे 61.45% मतदान का अनुमान जारी किया और फिर रात 11.40 बजे इसे संशोधित कर 64.4% कर दिया। अगले दिन मतदान का यह आंकड़ा 65.68% पर अपडेट किया गया। वहीं 11 मई को आयोग की ओर से जारी फाइनल आंकड़े में बदलाव नहीं हुआ। 13 मई को चुनाव आयोग ने चौथे चरण की वोटिंग के बाद रात 11:45 बजे बताया कि लगभग 67.25% मतदान हुआ है। इसके बाद 17 मई को बताया कि चौथे चरण में 96 सीटों पर 69.16% मतदान दर्ज किया गया है।

वोटिंग खत्म होने और फाइनल आंकड़े प्रकाशित होने में देरी की वजह से भी प्रक्रिया पर सवाल उठ रहे हैं। 2019 लोकसभा चुनाव तक मतदान का एकदम सटीक नंबर जारी किया जाता रहा है। लेकिन इस बार आयोग की ओर से मतदान प्रतिशत बताया जा रहा है, जिससे भी लोगों में संदेह पैदा हो रहा है।

चुनाव आयोग के मुताबिक, शुरुआती आंकड़े एक प्रारंभिक अनुमान होता है, जो बदलता रहता है। चुनाव आयोग के अधिकारियों का कहना है कि बढ़े हुए अंतिम आंकड़े का मतलब यह नहीं है कि वोटिंग खत्म होने के बाद भी वोट डाले गए थे। ऐसा इसलिए भी हो सकता है क्योंकि रिटर्निंग ऑफिसर (आरओ) ने अपडेट किया गया डाटा देरी से भेजा हो।

(द क्विंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

उफ्फ ये गर्मी!

लू ने बरपाया 'कहर', भट्टी की तरह जल रहे हैं 'शहर'

- एमपी-यूपी और पंजाब में हाल बेहाल, हीटवेव का अलर्ट
- राजस्थान के 19 शहरों में पारा 45 डिग्री के पार, एक मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। मौसम विभाग ने राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में चार दिन के लिए हीटवेव का रेड अलर्ट जारी किया है। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, दिल्ली और महाराष्ट्र में भी लू का अलर्ट है। बुधवार को देश में सबसे गर्म शहर राजस्थान का बाड़मेर रहा। यहां अधिकतम तापमान 48 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। राजस्थान में आने वाले दिनों में तापमान 50 डिग्री तक पहुंच सकता है। राज्य के 19 शहरों में बुधवार को तापमान 45 डिग्री के पार रिकॉर्ड किया गया था। वहीं गर्मी से राजस्थान के बालोतरा जिले की निर्माणाधीन रिफाइनरी में काम कर रहे एक मजदूर की मौत हो गई। बुधवार को कश्मीर में भी सीजन की पहली हीटवेव चली थी। जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश छोड़कर हीटवेव के अलर्ट वाले राज्यों के 50 से ज्यादा शहरों में लगातार आठवें दिन तापमान 43 डिग्री से ज्यादा दर्ज किया गया है। मौसम विभाग ने कहा है कि राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश में आने वाले 5 दिनों तक तापमान 44 डिग्री के पार ही बना रहेगा। वहीं, पंजाब, दिल्ली, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, ओडिशा, तेलंगाना में तापमान 40 से 44 डिग्री के बीच रहेगा। उधर, दक्षिण भारत के राज्यों में गर्मी से राहत देखने को मिल रही है। यहां बारिश का दौर चल रहा है। केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु में भारी बारिश की चेतावनी जारी की गई है।

वहीं, नॉर्थ-ईस्ट के राज्यों में भी बारिश का अलर्ट है। गोवा में बुधवार को बिजली गिरने के कारण मनोहर इंटरनेशनल एयरपोर्ट की रनवे की लाइट खराब हो गई। इससे 6 फ्लाइट्स को डायवर्ट करना पड़ा। एयरपोर्ट के प्रवक्ता ने कहा- बुधवार शाम करीब 5 बजे बिजली गिरी थी। रनवे की लाइट्स 8 बजे तक ठीक कर ली गईं। ऐसी प्राकृतिक आपदा हमारे कंट्रोल में नहीं रहतीं। पैसेंजर्स को हुई असुविधा के लिए हमें खेद है। आईएमडी के मुताबिक प्रदेश में बीते सप्ताह, यानी 9 मई से 15 मई के बीच में औसत बारिश के मुकाबले 55 फीसदी कम बारिश रिकॉर्ड की गई। औसतन अभी तक 3.9 मिलीमीटर बारिश हो जाती है, लेकिन अभी तक प्रदेश में सिर्फ 1.8 मिलीमीटर बारिश ही दर्ज की गई है। हालांकि, मौसम विज्ञानियों के मुताबिक मानसून में इस बार अच्छी बारिश के संकेत हैं। राजस्थान पिछले 7 दिनों से तप रहा है।

सुप्रभात

मैं महाप्रलय के बाद भी
जीवित रहना चाहूँगा
महासृजन के लिए
मैं फिर से जीना चाहूँगा
आदम का जीवन
और हव्वा का हाथ थामे-थामे
नाप लेना चाहूँगा
ब्रह्मांड
बिताना चाहूँगा
शताब्दियों पर शताब्दियाँ
मैं उस फल की तलाश में भटकूँगा
जिसकी वजह से
सिरजा संसार
शताब्दी से शताब्दियों तक
और जन्म से जन्मान्तर ।

– मोहन सगोरिया

कांग्रेस पूरे देश से राम के नाम को हटाना चाहती है

- हरियाणा के महेन्द्रगढ़ में पीएम मोदी ने कांग्रेस पर बोला जबरदस्त हमला
- कहा-आरक्षण छीन मुसलमानों को देगी, बंसीलाल से मेरी बहुत नजदीकी थी

महेन्द्रगढ़ (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुवार को हरियाणा के महेंद्रगढ़ पहुंचे। यहां उन्होंने चुनावी जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने उनके समर्थकों को भी साधने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि हमने चौधरी बंसीलाल के साथ मिलकर सरकार चलाई। वो हरियाणा के विकास के लिए कटिबद्ध थे। बंसीलाल से मेरी बहुत निकटता थी। उनके पास अनुभव की इतनी बातें हुआ करती थी कि कभी-कभी रात 1-1 बजे तक बातें करते थे। वो मुझे बहुत प्यार करते थे। सब महापुरुषों से प्रेरणा लेकर ये मेरी गारंटी है कि हरियाणा का विकास नहीं रुकने देंगे। रैली में मुख्यमंत्री नायब सैनी, केंद्रीय राज्यमंत्री व गुरुग्राम से बीजेपी कैंडीडेट राव इंद्रजीत सिंह, बीजेपी कैंडीडेट चौधरी धर्मबीर सिंह, कुलदीप बिश्नोई, कृषि मंत्री जेपी दलाल, पूर्व सांसद सुधा यादव के अलावा अन्य सीनियर नेता मौजूद रहे।

कांग्रेस पर खुलकर हमला बोला। पीएम मोदी ने कहा- कांग्रेस पूरे देश से राम के नाम को हटाना चाहती है। दलित, पिछड़ों और ओबीसी का आरक्षण छीनकर मुसलमानों को देना चाहती है, लेकिन जब तक मोदी है तब तक ऐसा नहीं होने दूंगा। इसके साथ ही पीएम ने भिवानी-महेंद्रगढ़ सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल का नाम लेकर पीएम मोदी की हरियाणा में यह तीसरी रैली थी। इससे पहले वह अंबाला और सोनीपत में रैली कर पार्टी कैंडीडेट्स के लिए वोट देने की अपील कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़कर ज्यादा से ज्यादा मतदान कराना है। मेरा एक पर्सनल काम है। मैं भी तो हरियाणा वाला हूं।

ठाणे की केमिकल फैक्ट्री में बॉयलर फटा, 4 की मौत

- 50 घायल, धमाके 3 किमी दूर तक सुनाई दिए

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के ठाणे जिले के डोंबिवली में गुरुवार को एक केमिकल फैक्ट्री में बॉयलर फटने से आग लग गई। हादसे में 4 की मौत हो गई और 50 लोग घायल हो गए। यह कंपनी एमआईडीसी के फेज टू में स्थित है। स्थानीय लोगों ने बताया कि छोटे-

छोटे लगातार तीन धमाके हुए। ये इतने तेज थे कि लगभग 3 किमी तक सुनाई दिए। आसपास की इमारतों के कांच के शीशों में दरारें आ गईं। वहीं, विस्फोट की वजह से आसपास के कई घर क्षतिग्रस्त हो गए। हादसे की वजह अभी साफ नहीं हो पाई है। डोंबिवली आग की घटना पर महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने ट्वीट किया।

श्रद्धालुओं ने वैशाख पूर्णिमा पर स्नान-ध्यान और दान किया

नर्मदा-शिप्रा घाटों पर उमड़े भक्त; बौद्ध विहारों में हुई विशेष वंदना

नर्मदापुरम/उज्जैन/खंडवा/खरगोन (नप्र)। वैशाख पूर्णिमा के पावन अवसर पर गुरुवार को श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगाई। नर्मदापुरम, जबलपुर, ओंकारेश्वर, महेश्वर, अमरकंटक में नर्मदा के तटों पर सुबह 5 बजे से ही भक्तों का पहुंचना शुरू हो गया था। उज्जैन में शिप्रा के तट पर भी भीड़ है। सुबह से ही स्नान-धान, पूजा-पाठ और धार्मिक अनुष्ठान का सिलसिला जारी था।

नर्मदापुरम के सेठानी समेत सभी घाटों पर पवित्र स्नान करने के लिए श्रद्धालु दूर-दूर से आए हैं। शाम को सेठानी घाट पर महाआरती और दीपदान होगा। सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस और होमगार्ड जवानों की तैनाती की गई है। श्रद्धालुओं को गहरे पानी से जाने से रोकने के लिए अनाउंसमेंट किया जा रहा है।

वैशाख माह की पूर्णिमा को भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था इसीलिए इसे बुद्ध पूर्णिमा भी कहा जाता है। इस अवसर पर प्रदेश के बौद्ध विहारों में भी झंडा वंदन और धम्म पूजन किया जा रहा है।

अनुराधा नक्षत्र, शिवयोग और सर्वार्थ सिद्धि योग का संगम था

गुरुवार को वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा अनुराधा नक्षत्र की उपस्थिति और शिवयोग के संयोजन में मनाई जा रही है। पूर्णिमा पर तीर्थस्थलों में स्नान करने से पूरे वैशाख मास में स्नान का फल मिलता है। इस दिन श्रद्धालु व्रत रखते हैं। स्नान के बाद दान किया जाता है। लोग घरों में सत्यनारायण की कथा करते हैं। वैशाख पूर्णिमा के दिन भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था इसलिए इसे बुद्ध पूर्णिमा भी कहा जाता है। आज वैशाख पूर्णिमा पर सर्वार्थ सिद्धि योग भी है। इस योग में किए गए दान, स्नान और पूजा-पाठ का विशेष पुण्य फल प्राप्त होता है। इस दिन खरीदारी, शुभ मांगलिक कार्य, तीर्थ यात्रा और दीक्षा का संकल्प श्रेष्ठ कर्म माने जाते हैं।

इस लोकसभा चुनाव में वरुण गांधी की पहली रैली

- सुल्तानपुर में मेनका के मंच से किया 'मां' वाला ऐलान

सुल्तानपुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी मेनका गांधी के समर्थन में उनके बेटे वरुण गांधी गुरुवार को उतरे। पहली बार वे चुनावी मैदान में उतरे हैं। लोकसभा चुनाव के मैदान से अब तक वरुण गांधी बाहर रहे हैं। पीलीभीत लोकसभा सीट से टिकट कटने के बाद पहली बार किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में पहुंचे वरुण गांधी ने अपनी मां के लिए वोट मांगा। उन्होंने सुल्तानपुर की जनता से भावनात्मक अपील करते हुए कहा कि मैं यहां सुल्तानपुर की मां के लिए आया हूं। इस चुनावी सभा के दौरान वरुण गांधी ने एक बार भी पीएम मोदी या सीएम योगी का जिक्र नहीं किया। उनका पूरा फोकस सुल्तानपुर, मां और मेनका तक सिमटा रहा। वरुण गांधी ने अपने संबोधन में कहा कि यह देश का इकलौता ऐसा निर्वाचन क्षेत्र है, जहां पर लोग सांसद को सांसद नहीं कहकर माता जी कहते हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 42 °c | न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शुक्रवार, 24 मई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

चिदंबरम बोले-सरकारी नीति की आलोचना विपक्ष का अधिकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग ने 22 मई को कांग्रेस अध्यक्ष को नोटिस भेजा है। जिसमें निर्देश दिया है कि उनकी पार्टी अग्निवीर योजना जैसे मामलों पर सेना का राजनीतिकरण न करे। इस निर्देश के एक दिन बाद सीनियर कांग्रेस नेता और पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने कहा कि चुनाव आयोग

का यह निर्देश गलत है। सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने लिखा- एक नागरिक के तौर पर यह कहना मेरा अधिकार है कि चुनाव आयोग का कांग्रेस को अग्निवीर योजना का राजनीतिकरण न करने का निर्देश देना गलत है। राजनीतिकरण का क्या मतलब है। क्या इसका मतलब आलोचना है। ईसी ने भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा को भी नोटिस भेजा है। आयोग ने दोनों पार्टियों के अध्यक्षों और स्टार प्रचारकों से अपने भाषण को सही करने, सावधानी बरतने और मर्यादा बनाए रखने के लिए कहा है। कांग्रेस के नेता अपने भाषणों में अग्निवीर स्कीम की बात करते हैं।

नहीं थम रहा बम की धमकियों का सिलसिला

- दिल्ली के बाद अब बेंगलुरु के होटलों को उड़ाने का ईमेल

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु के तीन पांच सितारा होटलों को बम से उड़ाने की धमकी मिली लेकिन जांच के बाद यह फर्जी निकली। खास बात है कि यह मामला ऐसे समय पर सामने आया है, जब शहर के ही रामेश्वरम ब्लास्ट की जांच जारी है। इसके अलावा एक दिन पहले ही नॉर्थ ब्लॉक को भी बम से उड़ाने की धमकी मिली थी, जो जांच के बाद अफवाह निकली।

पुलिस सूत्रों ने गुरुवार को बताया कि बेंगलुरु के तीन होटलों को उड़ान की धमकी मिली थी, जिसके बाद जांच में यह फर्जी निकली। उन्होंने बताया कि होटलों को कथित रूप से ईमेल से धमकी मिली है जिसके बाद व्यापक तलाशी अभियान चलाया गया और धमकी फर्जी साबित हुई। नॉर्थ ब्लॉक को बुधवार को बम से उड़ाने की धमकी कुछ भी संदिग्ध नहीं मिलने के बाद अफवाह घोषित कर दी गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अब ताइवान को 'निगलने' की तैयारी कर रहा ड्रैगन!

- चीन की सेनाओं ने शुरू किया 'दंड अभ्यास', भड़केगी आग

ताइपे (एजेंसी)। ताइवान में नए राष्ट्रपति के रुप में लाई चिंग-ते के सत्ता में आते ही चीन पूरी तरह से बौखला उठा है। सोमवार को लाई ने ताइवान की कमान संभाली और गुरुवार को ही चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने चीनी सेना को ताइवान के चारों लगा दिया। दरअसल चीन की सेना ने बृहस्पतिवार को ताइवान के चारों तरफ दो दिवसीय व्यापक

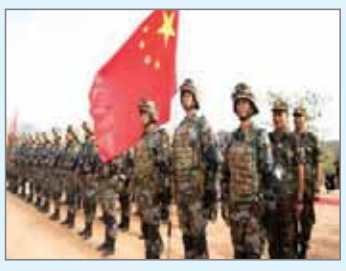

दंड अभ्यास शुरू किया। इसमें उसकी सेना, नौसेना, वायु सेना और रॉकेट बल भाग ले रहे हैं। यह सैन्य अभ्यास दो दिनों तक चलेगा। इस अभ्यास को जॉइंट सोर्ट 2024 नाम दिया गया है। चीन ने यह अभ्यास ऐसे वक्त में किया है जब स्व-शासित द्वीप ताइवान के नए राष्ट्रपति लाई चिंग-ते ने देश पर चीन की संप्रभुता के दावे को अस्वीकार किया है। ताइवान एशिया के पूर्वी हिस्से में आता है।

चुनाव आयोग बूथ वार वोटिंग डेटा देने के खिलाफ

- सुप्रीम कोर्ट में कहा-इसमें बैलेट पेपर के आंकड़े भी होंगे, इससे वोटर्स में भ्रम फैलेगा
- चुनाव आयोग बोला-चुनाव प्रक्रिया को लेकर संदेह पैदा करने का अभियान चल रहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग ने चुनाव के 48 घंटे के भीतर बूथ वार वोटिंग का डेटा सार्वजनिक करने की मांग का विरोध किया है। सुप्रीम कोर्ट में दाखिल एफिडेविट में आयोग ने बुधवार को कहा, फॉर्म 17सी (हर मतदान केंद्र पर डाले गए वोटों का रिकॉर्ड) के आधार पर वोटिंग डेटा का खुलासा करने से मतदाताओं के बीच भ्रम पैदा होगा, क्योंकि इसमें बैलेट पेपर की गिनती भी शामिल होगी। आयोग ने कहा, ऐसा कोई कानून नहीं है, जिसके आधार पर सभी मतदान केंद्रों का फाइनल वोटिंग डेटा जारी करने के लिए कहा जा सके। फॉर्म 17सी केवल पोलिंग एजेंट को दे सकते हैं। इसे किसी अन्य व्यक्ति या संस्था को देने की अनुमति नहीं है। फॉर्म 17सी वह प्रमाण पत्र है, जिसे पीठासीन अधिकारी सभी प्रत्याशियों को प्रमाणित करके देता है। चुनाव आयोग ने कहा, कई बार जीत-हार का अंतर नजदीकी होता है। आम वोटर फॉर्म 17सी के अनुसार बूथ पर पड़े कुल वोटों और

बैलेट पेपर को आसानी से नहीं समझ सकते। ऐसे में इसका इस्तेमाल गलत तरीके से चुनावी प्रक्रिया पर कलंक लगाने के लिए किया जा सकता है, जिससे मौजूदा चुनाव में अव्यवस्था फैल सकती है। दरअसल, एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका लगाई है। इसमें वोटिंग के 48 घंटे के भीतर सभी बूथ का फाइनल डेटा आयोग के वेबसाइट पर जारी करने की मांग की गई है।

एडीआर ने चुनाव आयोग पर लोकसभा चुनाव के पहले दो चरणों में वोटिंग पर्सेंट जारी करने में देरी का आरोप लगाया। याचिका में कहा गया कि पहले तो डेटा जारी करने में देरी हुई। इसके बाद शुरुआती डेटा के मुकाबले फाइनल डेटा में वोटिंग पर्सेंट काफी बढ़ गया। याचिका के मुताबिक, चुनाव आयोग ने 19 अप्रैल को पहले चरण के मतदान के 11 दिन बाद और 26 अप्रैल को दूसरे चरण के मतदान के चार दिन बाद 30 अप्रैल को फाइनल वोटिंग पर्सेंट जारी किया था। इसमें वोटिंग के दिन जारी शुरुआती आंकड़े के मुकाबले वोटिंग पर्सेंट लगभग 5-6 प्रतिशत ज्यादा था। सुप्रीम कोर्ट ने 17 मई को एडीआर की याचिका पर सुनवाई करते हुए चुनाव आयोग से एक हफ्ते में जवाब मांगा था। बुधवार (22 मई) को आयोग ने कहा, चुनाव प्रक्रिया को लेकर भ्रामक दावों और निराधार आरोपों से संदेह पैदा करने का अभियान चल रहा है। इसे समझना होगा। सच सामने आने तक नुकसान हो चुका होगा।

चाबहार 'डील' पर छाया अमरीकी प्रतिबंध का साया!

भौगोलिक दृष्टि से भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण है यह बंदरगाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान के चाबहार बंदरगाह को लेकर भारत उत्सुक है। ईरान ने अगले 10 साल के लिए चाबहार बंदरगाह को भारत को सौंप दिया है। जहाजरानी और बंदरगाह मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने सोमवार को ईरान में चाबहार बंदरगाह पर ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते पर हस्ताक्षर होते ही भारत को पहली बार विदेशी बंदरगाह संचालित करने का अवसर मिला। 2015 से ही चाबहार के शाहिद बहिश्ती बंदरगाह के उपयोग के लिए भारत-ईरान समझौते में हर साल नए आयाम जुड़ते गए। नए समझौते के परिणामस्वरूप, भारत को लगातार 10 वर्षों तक बंदरगाह का प्रबंधन मिला है। चाबहार बंदरगाह भौगोलिक दृष्टि से

बहुत महत्वपूर्ण है। चाबहार का निकटतम बंदरगाह गुजरात में कांडला है। जिसकी दूरी 550 समुद्री मील है। मुंबई से चाबहार की दूरी 786 समुद्री मील है। यह बंदरगाह भारत, पश्चिम एशिया, यूरेशिया के बीच कनेक्टिविटी बढ़ाने और परिवहन लागत और समय को कम करने का केंद्र बन सकता है। चाबहार पर नियंत्रण पाने से भारत अफगानिस्तान, ईरान और रूस के माध्यम से जलमार्ग परिवहन पर अपनी पकड़ बना सकता है।

नंदीग्राम में जबरदस्त तनाव टीएमसी-बीजेपी आमने-सामने

- बीजेपी महिला कार्यकर्ता की मौत, सुरक्षा बलों ने संभाला मोर्चा

कोलकाता (एजेंसी)। लोकसभा चुनावों के बीच पश्चिम बंगाल के नंदीग्राम एक बार फिर सुलग उठा है। नंदीग्राम में बीजेपी ने महिला कार्यकर्ता की मौत के विरोध में जहां प्रदर्शन कर रही है तो वहीं इलाके में बीजेपी और टीएमसी कार्यकर्ताओं के बीच टकराव भी हुआ है। बीजेपी का आरोप है कि टीएमसी कार्यकर्ताओं ने महिला कार्यकर्ता को निशाना बनाया। नंदीग्राम तामलुक लोकसभा सीट में आता है। यहां से कलकत्ता हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस अभिजीत गंगोपाध्याय बीजेपी के कैंडीडेट हैं। नंदीग्राम में 25 मई को वोट डाले जाने हैं। इसके पहले महिला कार्यकर्ता की मौत पर नंदीग्राम सुलग उठा है। स्थिति को संभालने के लिए पुलिस के साथ केंद्रीय बलों की तैनाती की गई है। राज्य के पूर्व मेदिनीपुर में आने वाले नंदीग्राम में बुधवार रात को एक घटना हुई थी।

सेना की अग्निपथ योजना में हो सकते हैं बड़े बदलाव

- अग्निवीरों पर आंतरिक सर्वे करा रही है सेना, पूछे जा रहे 10 सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सैन्य सेवाओं में भर्ती की नई व्यवस्था अग्निपथ योजना में बदलाव हो सकते हैं। हालांकि, इसे लेकर सरकार या सेना की ओर से आधिकारिक तौर पर कुछ नहीं कहा गया है। खबरें हैं कि सेना एक आंतरिक सर्वे करा रही है, जिसमें अग्निवीरों से जुड़े सवाल पूछे जा रहे हैं। इसका मकसद भर्ती प्रक्रिया पर योजना के असर को जानना है। संभावनाएं हैं कि सर्वे इस महीने के अंत तक खत्म हो सकता है। रिपोर्ट के अनुसार, सेना एक आंतरिक सर्वे करा रही है, जिससे मिलने वाली जानकारी के आधार पर आने वाली सरकार के सामने योजना में कुछ बदलाव की सिफारिशें की जा सकती हैं। रिपोर्ट के अनुसार, अधिकारियों का कहना है कि सेना के

सर्वे में अग्निवीरों, भर्ती और ट्रेनिंग स्टाफ समेत सभी हितधारकों से कुछ जानकारियां मांगी गई हैं। इस महीने के अंत तक डेटा जुटाया जाएगा।

यूपी में नया सियासी घमासान, योगी सरकार का बड़ा दांव

ओबीसी आरक्षण में मुस्लिमों की होगी समीक्षा, तैयारी शुरू

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ सरकार ने अति पिछड़ा वर्ग आरक्षण की समीक्षा कराने पर विचार शुरू कर दिया है। ओबीसी आरक्षण के तहत मुसलमानों को दिए जाने वाले आरक्षण के आधार की जांच कराई जाएगी। उत्तर प्रदेश में 24 से ज्यादा मुस्लिम जातियों को आरक्षण का लाभ मिलता है। ओबीसी वर्ग में मुसलमान के आरक्षण के मामले पर सरकार ने जांच करने की तैयारी शुरू कर दी है। मीडिया रिपोर्ट आने के बाद ओबीसी आरक्षण पर चर्चा का बाजार गरमा गया है। लोकसभा चुनाव के छठे चरण की वोटिंग से पहले मुस्लिम आरक्षण पर यह बड़ा मामला सामने आ गया है। मुस्लिमों को आरक्षण के आधार पर जांच कराए जाने की तैयारी है। मुसलमानों को सामाजिक और शैक्षिक स्थिति के आधार पर आरक्षण दिए जाने का

मामला सामने आया है। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने धर्म के आधार पर आरक्षण के मसले पर पिछले दिनों लगातार कई बयान दिए हैं। वहीं, लोकसभा चुनाव के मैदान में भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर सीएम योगी आदित्यनाथ तक धर्म के आधार पर आरक्षण के मसले पर कांग्रेस को घेरते रहे हैं। ऐसे में यूपी में योगी सरकार ने धार्मिक आधार पर आरक्षण दिए जाने को लेकर अब जांच कराने की तैयारी कर ली है। उत्तर प्रदेश में मुसलमानों जातियों को ओबीसी आरक्षण का लाभ मिलता है। सरकार यह जांच कराएगी कि आखिर मुसलमानों को किस आधार पर आरक्षण दिया जा रहा है। दरअसल, मुसलमान में जातियों का कॉन्सेप्ट नहीं होने का दावा किया जाता है। संविधान में धार्मिक आधार पर आरक्षण न दिए जाने की बात कही गई है।

4 जून को रिकॉर्ड बनाएगा बाजार इकोनॉमी में लोगों को भरोसा

पीएम बोले-10 साल में डीमैट अकाउंट 2.3 करोड़ से 15 करोड़ हुए

मुंबई (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक अंग्रेजी अखबार को दिए एक इंटरव्यू में कहा, मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि 4 जून को, जैसे ही बीजेपी रिकॉर्ड संख्या को छुएगी, शेयर बाजार भी नई रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच जाएगा। इस बयान का पॉजीटिव असर बाजार पर दिख रहा है। मोदी ने कहा- शेयर बाजार का हम पर जो भरोसा है, वह पिछले दशक के उसके प्रदर्शन से स्पष्ट है। जब हमने कार्यभार संभाला तो सेंसेक्स 25,000 अंक के आसपास था। आज, यह लगभग 75,000 अंक पर है। हाल ही में, हम पहली बार 5 ट्रिलियन डॉलर मार्केट कैप तक पहुंचे। पीएम मोदी इस बयान का बाजार पर भी असर दिख रहा है। बाजार सुबह फ्लैट खुला था, लेकिन अब ये ऑल टाइम हाई पर है। सेंसेक्स ने 75,407 का हाई बनाया है। वहीं निफ्टी ने 22,959 का लेवल छुआ। सेंसेक्स अभी 1000 पॉइंट से ज्यादा कि तेजी के साथ 75,200 के स्तर पर है। पिछले 10 साल और भाजपा सरकार के दो कार्यकालों के बारे में बात करते हुए, उन्होंने कहा, यदि आप सिर्फ डीमैट अकाउंट की संख्या पर नजर डालें, तो आप समझ जाएंगे कि नागरिकों ने भारतीय अर्थव्यवस्था में कैसे

विश्वास दिखाना शुरू कर दिया है। डीमैट खातों की संख्या 2.3 करोड़ से बढ़कर अब 15 करोड़ से अधिक हो गई है। म्यूचुअल फंड निवेशकों की संख्या 1 करोड़ से बढ़कर 4.5 करोड़ हो गई है।

रेलवे ने अपने लाखों कर्मचारियों की अब ली सुध

कई फैसिलिटी बढ़ाई, प्रमोशन देने की भी है तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रेल में प्रतिदिन 22,000 हजार से अधिक यात्री ट्रेनें व मालगाड़ियों के सुरक्षित परिचालन की जिम्मेदारी निभा रहे लाखों रेल संरक्षा कर्मियों को समय पर सुरक्षा उपकरण व वर्दी मिलेगी। रेलवे बोर्ड ने इस बाबत नए आदेश जारी किए हैं। रेलवे बोर्ड के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि कई जोन में रेल संरक्षा कर्मियों गेटमैन, प्वाइंटमैन, केबिनमैन, लीवरमैन आदि को समय पर वर्दी-सुरक्षा उपकरण नहीं उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इसको लेकर रेलवे बोर्ड ने उक्त संरक्षा कर्मियों (शंटिंग स्टाफ) को सुरक्षा उपकरण व वर्दी वितरित करने के आदेश जारी किए हैं। इसमें वॉटरप्रूफ रेनकोट के लिए सालाना 1200 रुपये, सर्दियों में जैकेट के लिए दो साल में 2500 रुपये मिलेंगे। वैकल्पिक व्यवस्था के तहत जैकेट, ट्राउजर, दस्ताने, स्नो बूट, कैप आदि के लिए 10,000 रुपये का प्रावधान किया।

जेडीएस सांसद प्रज्वल रेवन्ना की और ज्यादा बढ़ेंगी मुश्किलें

बेंगलुरु (एजेंसी)। हजारों महिलाओं के यौन उत्पीड़न के आरोप झेल रहे सांसद प्रज्वल रेवन्ना की मुश्किलें बढ़ने वाली हैं। नेता को पहले ही जेडीएस पार्टी से निलंबित कर चुकी है और कर्नाटक की सिद्धारमैया सरकार द्वारा गठित एसआईटी उनके खिलाफ जांच कर रही है। अब

कांग्रेस सरकार ने मोदी सरकार को पत्र लिखकर रेवन्ना का राजनयिक पासपोर्ट रद्द करने की मांग की है। सूत्रों के अनुसार, विदेश मंत्रालय सिद्धारमैया सरकार के अनुरोध पर विचार कर रहा है। मामले की जानकारी रखने वालों लोगों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि प्रज्वल रेवन्ना का पासपोर्ट रद्द करने की मांग करने वाला कर्नाटक सरकार का पत्र मंगलवार को विदेश मंत्रालय को मिल गया है। हालांकि यह जानकारी नहीं मिल पाई है कि पासपोर्ट रद्द करने की प्रक्रिया में कितना समय लगेगा। इस मामले में कर्नाटक के गृह मंत्री जी परमेश्वर का कहना है कि राज्य सरकार ने केंद्र से हासन से सांसद रेवन्ना का

- ऐक्शन ले सकता है विदेश मंत्रालय, सिद्धारमैया सरकार ने भेजा था लेटर

राजनयिक पासपोर्ट रद्द करने का आग्रह किया है। रेवन्ना जेडीएस प्रमुख और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के पोते हैं। इससे पहले 2 मई को विदेश मंत्रालय ने स्वीकार किया था कि रेवन्ना ने राजनयिक पासपोर्ट पर जर्मनी की यात्रा की। हालांकि अधिकारियों के अनुसार, रेवन्ना को वीजा उपलब्ध कराने में विदेश मंत्रालय की कोई भूमिका नहीं थी।

इंदौर में 5 दिन और बहुत तेज गर्मी का अलर्ट

नौतपा में 45 डिग्री तक जा सकता है पारा, ऐसा रहेगा प्रदेश का मौसम

इंदौर (नप्र)। इंदौर में इस साल नौतपा भी खूब तप सकता है। मौसम विभाग ने यह अनुमान लगाया है। इधर, गर्मी ने लगातार 5 दिन तक 42 डिग्री से ज्यादा तापमान का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। मौसम विभाग से जुड़े सूत्रों का कहना है कि 10 साल में कभी गर्मी का ऐसा लंबा ट्रेंड नहीं रहा है। 25 मई से नौतपा शुरू होने जा रहा है, उसी के साथ हीट वेव का अलर्ट भी जारी कर दिया गया है जो कि 28 मई तक चलती रहेगी। विभाग का अनुमान है कि इन तीन दिनों में इंदौर का तापमान 45 डिग्री या उससे पार भी जा सकता है। बता दें कि आखिर बार इंदौर में 2016 में मई का अधिकतम तापमान 44.5 डिग्री तक पहुंचा था। उसके बाद कभी इतनी गर्मी नहीं रही।इस सप्ताह में आगे पारा 45 डिग्री तक जाने की संभावना बताई है। अगर ऐसा होता है तो मई 2024 दशक का सबसे गर्म मई होगा। इतनी गर्मी की वजह पश्चिम विक्षोभ का सही तरीके से सक्रिय नहीं होना बताया जा रहा है। शहर में गर्मी के हालात यह है कि सड़कों में पैदल चलने वालों को धूप और तपन से बचने के लिए दुपट्टे और तौलिये का सहारा लेना पड़ रहा है।

तापमान 44 डिग्री तक पहुँच सकता है

नौतपा से पहले 23 और 24 मई को भी दो दिन शहर का तापमान 43 से 44 डिग्री के आसपास रहेगा। इस दौरान रात भी गर्म रहेंगी। नौतपा के दौरान रात का तापमान 30 डिग्री तक जा सकता है। 23 मई को दोपहर तक अधिकतम तापमान 44 तक जाने अनुमान जताया गया है। उत्तरी-पश्चिमी हिस्से में गर्म हवाएं चलेंगी। 28 मई तक हीट वेव चलेगी।

शहर पर असर

गर्मी से बचने के जतन शुरू हो गए हैं। लेटर्न चौराहे पर रेड लाइट पर लोगों के लिए ग्रीन नेट लगाई गई है। वाहन चालक इससे राहत महसूस कर रहे हैं। इंदौर के क्षेत्रीय पार्षद की पहल पर यह हुआ था। उधर, चिड़ियाघर में भी वन्यप्राणी भी गर्मी से बेहाल हैं। उनके लिए भी कूलर चलाए जा रहे हैं। बायपास से जुड़ी कॉलोनियों में ट्यूबवेल दम तोड़ रहे हैं।

राहत कब

सीनियर वैज्ञानिक डॉ. वेद प्रकाश सिंह सहित अन्य एक्सपर्ट्स बताते हैं कि अभी एक चक्रवाती घेरा सक्रिय है। इसके साथ ही एक वेस्टर्न और टर्फ लाइन गुजर रही है। इस वजह से अगले 24 घंटे में पूर्वी हिस्से के कुछ जिलों में धूल भरी हवाएं चलेंगी।

नया रिकॉर्ड

इंदौर में एयरपोर्ट पूर्वी इंदौर पर मौसम विभाग से मिले आंकड़ों के अनुसार, लगातार 5 दिन से तापमान 42 पार है। 10 साल में यह पहला मौका है। लगातार 5 दिन से (19 से 23 मई तक) अधिकतम तापमान 42 से 44 डिग्री के बीच है। 19-20 मई को 43.1 डिग्री, 21 को 42.8 डिग्री जबकि बुधवार को 43.4 डिग्री पहुंच गया। गुरुवार दोपहर 2 बजे 42 को छूलिया।

ऐतहासिक फैक्ट - इंदौर में मई में तापमान 46 डिग्री तक दर्ज हुआ था, यह रिकॉर्ड 31 मई 1994 को दर्ज किया गया था। पिछले साल 2023 मई में अधिकतम तापमान 42.7 डिग्री दर्ज किया गया था। यह इस बार की गर्मी तोड़ चुकी है।

इंदौर में बी.फार्मा स्टूडेंट और दोस्त की करंट से मौत

इंदौर (नप्र)। इंदौर में बी. फार्मा के स्टूडेंट और उसके दोस्त की करंट लगने से मौत हो गई। तीसरा दोस्त घायल हो गया। तीनों को फ्लैट की बालकनी के सामने से गुजर रही हाईटेंशन लाइन से करंट लगा। लाइन बालकनी से महज 4 फीट की दूरी पर है। घटना सिलिकॉन सिटी में बुधवार देर रात की है। पुलिस शवों का पोस्टमॉर्टम कराने के बाद मामले की जांच कर रही है।

राऊ पुलिस ने बताया कि देवास निवासी मनन सैंधव और दिव्यांश कानूनगो इंदौर के सेज यूनिवर्सिटी में बी.फार्मा फर्स्ट ईयर के स्टूडेंट हैं। दोनों सिलिकॉन सिटी में किराये का फ्लैट लेकर रहते हैं। देवास के ही रहने वाले नीरज मनोहर पटेल से भी उनकी दोस्ती है। वह प्राइवेट नौकरी करता है। नीरज बुधवार रात उनसे मिलने आया था। सबसे पहले दिव्यांश करंट की चपेट में आया। उसे बचाने में नीरज भी झुलस गया। दोनों तड़प रहे थे, तभी आवाज सुनकर किचन से मनन उन्हें देखने पहुंचा। इसी दौरान उसे भी बिजली का झटका लगा। दिव्यांश और नीरज की मौत हो गई जबकि मनन अस्पताल में भर्ती है। घटना को लेकर बिजली कंपनी की ओर से फिलहाल कोई बयान नहीं आया

तीसरा साथी बोला-बालकनी से 4 फीट दूर हाईटेंशन लाइन से चिपके लेकिन कैसे, पता नहीं

है। मनन सैंधव कराड़िया माहौर देवास का रहने वाला है। उसकी हालत अब स्थिर है। मनन सैंधव कराड़िया माहौर देवास का रहने वाला है। उसकी हालत अब स्थिर है।

घायल ने सिलसिलेवार सुनाया पूरा घटनाक्रम

घायल मनन ने मीडिया को बताया, दिव्यांश देवास में कमलापुर का रहने वाला था। उसके पिता मनोज कानूनगो पत्रकार हैं। दिव्यांश और मैंने बी.फार्मा फर्स्ट ईयर में इंदौर के कॉलेज में एडमिशन लिया था। सिलिकॉन सिटी में किराये के रूम में ऊपर वाली मंजिल पर रह रहे थे। नीरज मनोहर पटेल विजयागंज मंडी, देवास का रहने वाला था। बुधवार रात नीरज हमारे रूम पर आया। 12 से 1 बजे के बीच दिव्यांश और नीरज बालकनी में गपशप कर रहे थे। मैं किचन में रोटी गर्म कर रहा था। बिजली बार-बार आ-जा रही थी इसलिए हम खाना खाने में लेट हो गए थे।मैंने आवाज लगाई कि खाना गर्म कर लिया है, तुम दोनों आ जाओ। दिव्यांश ने जवाब दिया कि तुम अपनी थाली लगा लो। हम आते हैं। कुछ ही पल गुजरे थे कि दिव्यांश की चीख सुनाई दी, उसके बाद नीरज भी चीखने लगा। मैं दौड़कर आया तो देखा कि दिव्यांश बालकनी के सामने 4 फीट दूर हाईटेंशन लाइन से चिपका था। नीरज उसे बचाने की कोशिश में करंट की चपेट में आ गया।मैं उनके करीब पहुंचा तो करंट का झटका लगा। मैं वापस आ गिरा। शायद अर्थिंग मिल जाने से मेरी जान बच गई थी। जब मुझे हल्का होश आया तो देखा कि दोनों दोस्तों की मौत हो गई है। मुझे समझ नहीं आ रहा है उनके साथ क्या हुआ? हाईटेंशन लाइन बालकनी से 4 फीट दूर है। ऐसा हो सकता है कि लाइन ने दिव्यांश को अपनी तरफ खींच लिया हो।

अक्षय बम की नाम वापसी पर विजयवर्गीय का बयान

बोले-कोई प्लान नहीं था, वो अचानक आए; मैंने फॉर्म नहीं उठवाया, सेल्फी जरूर ली

इंदौर (नप्र)। इंदौर में कांग्रेस प्रत्याशी रहे अक्षय कांति बम की नाम वापसी और फिर बीजेपी में एंट्री को लेकर कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि सब कुछ अचानक हुआ, कुछ भी प्लान नहीं था। विजयवर्गीय एक टीवी चैनल से चर्चा कर रहे थे। जिसका वीडियो उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किया है। वे बम के बीजेपी में आने और इस घटनाक्रम के प्री-प्लांड होने के विपक्ष के आरोपों पर जवाब दे रहे थे। मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा- 'कुछ भी प्लान नहीं था। अचानक सब कुछ हुआ। मैं फॉर्म वापस करवाने गया भी नहीं था। मैं रास्ते में मिला था, क्योंकि कांग्रेस के कुछ कार्यकर्ताओं ने उन्हें घेर लिया था। इसलिए मैं रास्ते में पहुंचा। हम लोगों ने बात की। विजयवर्गीय ने कहा- सेल्फी खींची ये बात सही है और हमने ट्वीट कर दिया। पर वो ट्वीट इतना बड़ी चर्चा में आ जाएगा इसकी कल्पना मुझे भी नहीं थी।

ठीक है, राजनीति में कुछ करते हैं तो

कुछ न कुछ तो होता है। उसमें हुआ है। मैं ऐसा कह सकता हूं कि हमें सफलता मिली है।'

29 अप्रैल को वापस लिया था नामांकन

बता दें इंदौर लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी अक्षय बम ने नामांकन वापसी के अंतिम दिन 29 अप्रैल को नाटकीय घटनाक्रम के तहत कलेक्टर ऑफिस पहुंच कर अपना फॉर्म वापस ले लिया था। उनके साथ मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के खास और दो नंबर विधानसभा से विधायक रमेश मेंदोला और उनकी टीम थी। फॉर्म उठाने के कुछ देर बाद ही मंत्री विजयवर्गीय ने बम के साथ सेल्फी सोशल मीडिया पर पोस्ट की थी तो जमकर वायरल हुई।

इंदौर में छात्रा का मोबाइल लूटने वाला पकड़ाया

बुआ के घर जा रही थी तब की वारदात, लोगों ने पुलिस को सौंपा

इंदौर (नप्र)। इंदौर में छात्रा का मोबाइल लूटने वाले एक आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। छात्रा जब बुधवार रात अपनी बुआ के यहां जा रही थी तब आरोपी ने वारदात को अंजाम दिया था। एडिशनल डी-सीपी अमरेन्द्र सिंह के मुताबिक शिवानी गोस्वामी रात करीब साढ़े आठ बजे अपनी बुआ के यहां स्कीम नंबर 78 में जा रही थी। तभी अटल खेल परिसर के पास एक बदमाश ने शिवानी के हाथ पर झपट्टा मारा और उसका मोबाइल छीन लिया। इस दौरान छात्रा ने उसका चेहरा देख लिया। लोगों को मदद के लिए आवाज लगाई। इस पर लोगों ने आरोपी आकाश तायड़े निवासी महालक्ष्मीर नगर को पकड़ा और पुलिस के सुपुर्द कर दिया। पुलिस ने आरोपी से मोबाइल जब्त किया है।

ताला नहीं टूटा, आभूषण चोरी हो गए- कनाड़िया में एक अपार्टमैंट से महिला के आभूषण चोरी हो गए। बताया जाता है कि उसने पार्टी से आने के बाद आभूषण ड्रॉज में रखे थे। इस दौरान किसी ने उसे चुरा लिया। पुलिस के मुताबिक साक्षी तनवानी निवासी रेसीडेंसी अपार्टमैंट बिचौली मर्दाना ने बताया कि वह 17 मई को अपने पति के साथ होटल जॉर्डन में गई थी। यहां से रात में वापस आई तो उसने एक डायमंड का सेट, कंगन और अन्य ज्वेलरी उतारी। जिसे उसने बेड रूम के ड्रेसिंग टेबल के ड्रॉज में रख दी। इसके बाद 19 मई को ड्रॉज खोल कर देखा तो ज्वेलरी नहाँ थी। इसके बाद पति को जानकारी दी।

पत्नी सूट पहनती थी इसलिए पति ने कर दी पिटाई

इंदौर में बीच बचाव करने पहुंची साली के मुंह पर मारी ईंट; साले का मोबाइल तोड़ा

इंदौर (नप्र)। इंदौर के द्वारकापुरी इलाके में पति ने पत्नी की पिटाई कर दी। पत्नी सलवार सूट पहनती थी, इससे पति नाराज था। द्वारकापुरी पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक सुरजीत तंवर निवासी प्रजापत नगर की शिकायत पर उसके पति चेतन तंवर, जेठ योगेश और ननदोई विनोद जाधव के खिलाफ मारपीट कर धमकाने और तोड़फोड़ करने के मामले में केस दर्ज किया है।

सुरजीत के मुताबिक वह एमपीपीएससी की तैयार कर रही है। दोपहर में बहन गुलवीर का कॉल आया और उसने कहा कि तुम्हारे लिए सूट लेकर आए हैं। घर आ जाना। मैं बहन के घर जाने के लिए सूट पहनकर तैयार हुई तो पति ने कहा कि सूट में नहीं ले जाउंगा। साडी पहनकर चलो। सुरजीत ने पति चेतन की इस बात से इनकार कर दिया और घर में ही बैठी रही।बुधवार रात रात करीब 11:30 बजे भाई राजपाल, बहन नीतू और गुलवीर घर आए। उन्होंने सुरजीत से कहा कि दीदी हम आपको लेने आए हैं। इस बात पर पति नाराज हो गए और मारपीट शुरू कर दी। मुझे भाई और बहनों के सामने उठाकर जमीन पर पटक दिया।बहन और भाई ने मारपीट करने से रोका तो जेठ योगेश और ननदोई विनोद अपशब्द कहने लगे। इस बीच चेतन ने ईंट उठाकर बहन गुलवीर के मुंह पर मार दी। तीनों ने भाई को पकड़कर बुरी तरह पीटा और उसका मोबाइल फोड़ दिया।

साली से छेड़छाड़, कहा पत्नी को तलाक दे दूंगा- जूनी इंदौर पुलिस ने साली की शादी के तीन दिन बाद ही उससे छेड़छाड़ करने और मारपीट करने के मामले में जीजा पर केस दर्ज किया है। पुलिस के मुताबिक 23 साल की युवती ने अपनी बहन के साथ आकर बताया कि उसकी शादी 19 मई को हुई है।

इंदौर में कैफे संचालक भाईयों पर हमला

दो एक्टिवा से आए चार बदमाशों ने गाड़ी अड़ाकर पीटा; गार्ड ने बचाया

इंदौर (नप्र)। इंदौर के एरोड्रम में कैफे संचालक भाईयों के साथ दो बदमाशों ने मारपीट कर दी। मामले में पुलिस ने कैफे संचालक की शिकायत पर केस दर्ज किया है। एरोड्रम पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक राज मकासरे की शिकायत पर एक्टिवा सवार चार लोगों के खिलाफ हमले की धाराओं में केस दर्ज किया है। पुलिस ने मुताबिक राज ने बताया कि उनका जनशक्ति नगर में द रनवे कैफे है। गुरूवार रात करीब 1 बजे दोनों अपनी एक्टिवा से घर कालानी नगर के लिए निकले थे। एयरपोर्ट रोड़ पर दोनों जा रहे थे। तभी दो एक्टिवा पर चार लड़के आए और भाई की एक्टिवा के आगे अपनी गाड़ी लगा दी। मारपीट करने लगे। आगे बैठे लड़कों ने उनके पास से कैश छीनने का भी प्रयास किया। इस दौरान आकाश को पेवर ब्लॉक उठाकर सिर में मार दिया। और राज के पैर पर हमला कर दिया। दोनों ने बचाव के लिए मदद मांगी। इस दौरान नजदीक ही खड़ा गार्ड वहां दौड़ते हुए पहुंचा। उन्हें देखकर आरोपी मौके से भाग गए। पुलिस ने मामले में हमला करने की धाराओं में केस दर्ज किया है।

इंदौर आने-जाने वाली 1 दर्जन फ्लाइट 2 घंटे लेट

सबसे ज्यादा फ्लाइट दिल्ली की लेट हुई, वजह-खराब मौसम

इंदौर (नप्र)। इंदौर एयरपोर्ट से आने जाने वाली 1 दर्जन से ज्यादा फ्लाइट बुधवार शाम से देर रात तक लेट रही। यात्रियों को घंटों परेशान होना पड़ा। बताया जा रहा है कि कल

कुल 14 फ्लाइट्स अपने तय शेड्यूल से 2 घंटे तक लेट थी। जिससे सबसे ज्यादा संख्या दिल्ली की फ्लाइट की थी। एयरपोर्ट से मिली जानकारी के अनुसार दिल्ली, मुंबई, सूरत, हैदराबाद और बेंगलुरु की फ्लाइट अपने तय शेड्यूल पर नहीं थी।इंदौर एयरपोर्ट से मिली जानकारी के अनुसार इंदौर से सूरत जाने वाली फ्लाइट 3.55 पर जाने की जगह कल 4.40 बजे रवाना हुई। इंदौर से मुंबई 4 बजे जाने वाली फ्लाइट 2 घंटे लेट यानी शाम 6 बजे रवाना हुई। इसी तरह दिल्ली जाने वाली 3 फ्लाइट अपने तय शेड्यूल से 2 घंटे लेट रवाना हुई।इंदौर से दिल्ली जाने वाली रात 10.40 बजे की फ्लाइट कल देर रात 12.55 बजे रवाना हुई। वहीं रात 9 बजे बेंगलुरु जाने वाली फ्लाइट रात 11 बजे रवाना हुई। इसी तरह इंदौर आने वाली फ्लाइट्स भी अपने शेड्यूल से 2 से 2.30 घंटे लेट इंदौर पहुंची।

इंदौर के हॉस्टल में स्टूडेंट से मारपीट

गर्ल्स होस्टल पर फेंके पत्थर

इंदौर (नप्र)। इंदौर के भंवरकुआ में एक हॉस्टल में छात्र के साथ हॉस्टल मालिक और उसके साथी ने मारपीट कर दी। एक छात्र का सिर फोड़ दिया। बाद में हॉस्टल मालिक और उसके साथियों ने नजदीक के गर्ल्स हॉस्टल पर पत्थर फेंके। पुलिस ने इस मामले में आरोपी छात्रों के खिलाफ केस दर्ज किया है।भंवरकुआ पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक घटना आरजी हॉस्टल सर्वानंद नगर की है। यहां स्टूडेंट अक्षत तिवारी ने बताया कि वह अपने दोस्त शुभम और दीपक के साथ हॉस्टल की छत पर बैठा हुआ था। यहां हॉस्टल के मालिक पुष्पेन्द्र त्रिपाठी का कॉल आया। उसने पूछा कि छत पर क्या कर रहो। तब अक्षत ने कहा कि बिजली गुल है, इसलिए बैठे हैं। इसके कुछ देर बाद पुष्पेन्द्र अपने साथी ऋषभ को लेकर ऊपर आया और सभी को नीचे ले गया। नीचे आते ही पुष्पेन्द्र और ऋषभ गाली-गलौज करने लगे। रोकने पर ऋषभ ने रॉड लेकर शुभम के सिर पर दे मारी। इसके बाद अक्षत और साथी छात्र के साथ धक्का मुक्की की।

कालिंदी गोल्ड में बिजली कटौती से रहवासी परेशान

इंदौर में बिजली कंपनी परिसर में प्रदर्शन; बोले- 8-10 घंटे गुल रहती है लाइट

इंदौर (नप्र)। इंदौर में गुरुवार को पोलोग्राउंड स्थित बिजली कंपनी कार्यालय के रहवासियों ने घेराव कर दिया। मामला सांवेर क्षेत्र की कालिंदी गोल्ड कॉलोनी से जुड़ा है। यहां एक हफ्ते से बिजली कटौती को लेकर रहवासियों में काफी आक्रोश है। गुरुवार को उन्होंने पोलोग्राउण्ड स्थित बिजली कंपनी का घेराव कर प्रदर्शन किया।रहवासियों ने कहा कि शहर में भीषण गर्मी है। तापमान 43 डिग्री से ज्यादा है। कॉलोनी में रोज 8-10 घंटे बिजली गुल रहती है। भीषण गर्मी में रहना मुश्किल हो गया है। बच्चे बीमार पड़ने लगे हैं।ग्राम पंचायत भांगिया के क्षेत्र की इस कॉलोनी के

जसपालसिंह ठाकुर व अन्य का कहना है कि बिजली गुल होने से पानी की परेशानी तो है, पंखे, कूलर नहीं चलने से परेशानियां बढ़ गई हैं। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में ट्रांसफॉर्मर बार-बार खराब होने से ऐसी स्थिति बन रही है। उन्होंने नए ट्रांसफॉर्मर लगाने की मांग की। इस पर अधिकारियों ने आश्वस्त किया कि वे दो ट्रांसफार्मर बढ़ा रहे हैं। रहवासियों का कहना था कि इसे आज ही लगाए, इसके बाद ही हम जाएंगे।

इंदौर-महू सिटी बस वसूल रही ज्यादा किराया

एआईसीटीएसएल बारात-पिकनिक फंक्शन के परमिट पर दौड़ा रहा बस, अधिकारियों ने साधी चुप्पी

इंदौर (नप्र)। मप्र के नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के निर्देश पर आनन-फानन में शुरू हुई इंदौर से महू की सीटी बस में यात्रियों से ज्यादा किराया वसूला जा रहा है। साथ ही उन्हें टिकट भी नहीं दिया जा रहा है। इसके साथ ही एआईसीटीएसएल अधिकारियों ने मंत्री को खुश करने और जन सुविधा के नाम पर नियमों को ताप पर रखते हुए एक और कारनामा किया है। अधिकारी इंदौर से महू के बीच चलने वाली सिटी बस को स्थाई परमिट की जगह बारात और फंक्शन के परमिट पर ही दौड़ा रहे हैं। वहीं इस पूरे मामले को लेकर अधिकारियों ने चुप्पी साध ली है।सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार मंगलवार से शुरू हुई इंदौर से महू के बीच सिटी बस को फंक्शन और बारात के परमिट पर चलाया जा रहा है। एआईसीटीएसएल सूत्रों ने बताया कि इंदौर से महू के बीच एमपी 09 एफए 8523 नंबर की बस को चलाया जा रहा है जो की गलत परमिट पर चल रही है। वहीं इस नंबर की बस का परमिट चेक किया तो यह बात सामने आई कि इस बस को इंदौर-महू रूट पर चलाने के लिए एआईसीटीएसएल ने सात दिन का अस्थाई परमिट लिया है।

यह परमिट आरटीओ ऑफिस द्वारा बारात, फंक्शन और पिकनिक जैसे आयोजनों के लिए जारी किया जाता है। जिसका इस्तेमाल नियमित यात्री वाहन के लिए नहीं किया जा सकता है।एआईसीटीएसएल अधिकारी मंत्री के निर्देश को पूरा करने के लिए नियमों को ताक पर रख बस का संचालन कर रहे हैं। एआईसीटीएसल जिस परमिट पर अभी बस का संचालन कर रही है। यह परमिट आसानी से ऑनलाइन मिल जाता है। वहीं इस पूरे मामले को लेकर एआईसीटीएसल की पीआरओ माला सिंह ठाकुर से बात की तो उनका कहना था कि इस विषय में विभाग के वरिष्ठ अधिकारी ही बात करेंगे। वहीं महापौर से बात नहीं हो सकी। एआईसीटीएसएल के प्रभारी मनोज पाठक का मोबाइल लगातार कवरेज क्षेत्र के बाहर था।

इसलिए चलाना पड़ रही इंदौर-महू सिटी बस- रेलवे द्वारा 16 से 31 मई तक राऊ से महू के बीच रेलवे ट्रैक का दोहरीकरण किया जा रहा है। इसके चलते इंदौर से महू के बीच रेल यातायात पूरी तरह बंद है। दोनों शहरों के बीच अप डाउन करने वाले 8 हजार यात्रियों को रेल मार्ग बंद होने से आवाजाही करने में परेशान हो रहे हैं। यात्रियों की इसी परेशानी के नाम पर एआईसीटीएसएल ने इंदौर में लक्ष्मीबाई नगर से महू के बीच चार बस चलाने का निर्णय लिया है।

विजयवर्गीय की टीम ने सोशल मीडिया पर जारी किया था बस के संचालन का मैसेज

एआईसीटीएसल द्वारा यह बस चलाने के एक दिन पहले यानी सोमवार को मंत्री विजयवर्गीय की टीम ने सोशल मीडिया पर यह मैसेज वायरल किया था...। महू एवं इंदौर के बीच मंगलवार से सिटी बस का संचालन प्रारंभ हो जायेगा। मप्र के यशस्वी नगरीय प्रशासन मंत्री तथा महू से विशेष प्रेम रखने वाले श्री कैलाश विजयवर्गीय जी से गुरुवार को हुई चर्चा के बाद इस मामले को गंभीरता से संज्ञान लिया उन्होंने ए आई सी टी सी एल के संचालक को आदेशित किया की महू एवं इंदौर के मध्य सिटी बस चलाई जाए। ए आई सी टी सी एल द्वारा मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय जी के निर्देश पर महू एवं इंदौर के बीच मंगलवार से सिटी बस का नियमित संचालन प्रारंभ कर दिया जाएगा जिससे डेली अप डाउनर्स को काफी राहत मिलेगी।

इंदौर के ट्रांसपोर्ट नगर में नहीं होती सफाई

जगह-जगह कचरे का अंबार, कारोबारी कहते हैं- यहां वोट नहीं इसलिए सुविधाएं नहीं

इंदौर (नप्र)। ट्रांसपोर्ट नगर स्कीम नंबर 44 में जहां-तहां कचरा और गंदगी फैली हुई है। स्वच्छता में देश में नंबर वन शहर में गंदगी के ये हालात यहां के कारोबारियों और नियमित रूप से आने वालों को शर्मिंदा कर रहे हैं। गौरतलब है कि ट्रांसपोर्ट नगर से नगर पालिका निगम रेड जोन का प्रॉपर्टी टैक्स लेता है, कचरा संग्रह का शुल्क भी लिया जाता है फिर भी साफ-सफाई नहीं हो रही है, कचरे का अंबार लगा है।

न अफसर ध्यान देते हैं न जनप्रतिनिधि

इंदौर ट्रक ऑपरेटर एंड ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष सीएल मुकाती ने बताया कि ट्रांसपोर्ट नगर में 300 से 400 वाहन रोज आते जाते हैं जिनके ड्राइवर क्लीनर गाड़ियों में ही खाना बनाते हैं, खाना खाते हैं और रात्रि विश्राम भी करते हैं। यहां से जुड़े लोग कचरे और गंदगी के कारण आए दिन बीमार होते रहते हैं। जोन पर जाकर और सफाई दरोगा को कई बार शिकायत की, मगर कोई कार्रवाई नहीं होती है और न ही साफ-सफाई होती है।

मुकाती ने कहा कि ट्रांसपोर्ट नगर नंबर वन शहर के बीचों बीच टाट के पैबंद की तरह है। यहां की सफाई को लेकर न तो अधिकारी और न ही जन प्रतिनिधि गंभीर हैं। ट्रांसपोर्ट नगर के कारोबारी कहते हैं कि यहां वोट नहीं है इसलिए साफ-सफाई नहीं होती है। यहां कोई सुविधा नहीं दी जा रही है। पीने का पानी भी नहीं मिलता है। स्ट्रीट लाइट भी नहीं है। मुकाती ने कहा कि एसोसिएशन द्वारा नगर निगम में कई बार लिखित एवं फोन पर शिकायत की गई, मगर कोई ध्यान नहीं देते हैं।

संपादकीय

अकेला पड़ रहा इजराइल

यूरोप के तीन देशों द्वारा फिलीस्तीन को मान्यता देने से आग बबूला इजराइल ने इन तीनों देशों से अपने राजदूत वापस बुला लिए हैं। ये घटना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि फिलिस्तीन के मुद्दे पर अब इजराइल अकेला पड़ता जा रहा है। वहां के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की जिद के चलते वह गाजा पर हमले रोकने के लिए तैयार नहीं है। ऐसे में अमेरिका भी अब उसकी मदद को ज्यादा उत्सुक नहीं है। खास बात यह है कि जिन तीन देशों ने फिलिस्तीन को मान्यता दी है, उनमें से स्पेन और स्वीडन तो अमेरिकी सैन्य संगठन नाटो के सदस्य हैं। मंगलवार को नॉर्वे, स्पेन और आयरलैंड ने घोषणा की है कि वो औपचारिक रूप से अगले सप्ताह से फ़िलस्तीन को एक राष्ट्र रूप में मान्यता दे देंगे। नॉर्वे के प्रधानमंत्री जोनस गार स्तोर ने कहा कि उनका देश फ़लस्तीन को राष्ट्र के तौर 28 मई को मान्यता देगा। वहीं स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज़ ने कहा है कि इसराइल दो-राष्ट्र समाधान को जोखिम में डाल रहा है। उन्होंने फ़िलस्तीन पर इसराइल की नीति को दर्द और तबाही की नीति कहा है। इसराइल ने इसे लेकर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए इन तीन देशों से अपने राजदूत वापस बुला लिए हैं। इसराइली सरकार के प्रवक्ता ने कहा कि मान्यता दिए जाने से न तो फ़िलस्तीनी लोगों को मदद मिलेगी और न ही इसराइलियों को। इसराइल के विदेश मंत्री काट्ज़ ने कहा कि ये 'हमास के हत्यारों को स्वर्ण पदक देने' जैसा है। वहीं हमास और फ़िलस्तीनी अथॉरिटी ने इस फ़ैसले का स्वागत किया है। अरब देशों ने भी इसे सकारात्मक कदम बताया है। दरअसल हमास द्वारा अक्टूबर में इजराइल पर किए हमले और दो सौ से अधिक लोगों को बंदी बनाए जाने के बाद इजराइल के प्रति जो सहानुभूति दुनिया भर में उपजी थी, वह अब धीरे धीरे खत्म होती जा रही है। 1200 इजराइलियों के बदले वो 35 हजार से ज्यादा फिलिस्तीनियों को मार चुका है। इनमें ज्यादातर वो लोग हैं, जिनका हमास की आंतकी गतिविधियों से कोई सरोकार नहीं है। इस नरसंहार के चलते दुनिया भर से इजराइल के खिलाफ आवाज उठ रही है। लेकिन प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू हमास को खत्म करने की अपनी जिद से एक इंच भी पीछे हटने को तैयार नहीं हैं। सवाल यह है कि यह सब कब तक चलेगा। आखिर फिलिस्तीनी समस्या का कोई तो समाधान करना होगा। उन्हें कभी तो अपना देश देना होगा। आज दुनिया के ज्यादातर देश, जिनमें भारत भी शामिल है, फिलिस्तीनी समस्या के शांतिपूर्ण हल और दो राष्ट्र सिद्धांत के पक्ष में हैं। इसका अर्थ यही है कि विश्व के नक्शे पर इजराइल और फिलिस्तीन दोनों देश रहें और उनमें सौहार्द्रपूर्ण रिश्ता हो। लेकिन इजराइल इस सिद्धांत का हमेशा विरोध करता आया है। इसके पीछे उसके अपने स्वार्थ और आशंकाएं हैं। वह केवल वेस्ट बैंक को ही फिलिस्तीन स्वीकार करेगा। गाजा पट्टी को पूरी तरह हथियाना चाहता है ताकि उसकी पश्चिमी सीमा पूरी तरह सुरक्षित हो जाए। लेकिन यह एक तरह से दूसरे देश पर कब्जा करना ही है। यह सोच सही नहीं है। फिलिस्तीन जैसे जटिल मसले का हल सकारात्मक सोच के साथ ही हो सकता है। प्रधानमंत्री नेतन्याहू की अहंमन्यता का आलम यह है कि अब वो उस अमेरिका की भी बात नहीं सुन रहे, जो हमेशा इजराइल के बचाव में आगे रहा है। खुद इजराइल में लोगों ने बड़े पैमाने पर नेतन्याहू के खिलाफ जंगी प्रदर्शन हुए हैं। इसके बाद भी नेतन्याहू अपनी जिद से रत्ती भर भी टस से मस नहीं हो रहे। अगर ऐसा ही रहा तो दुनिया में इजराइल के दोस्त भी साथ छोड़ जाएंगे।

'मुठभेड़' में उलझ चुका है आदिवासियों का जीवन

नजरिया

विवेकरंजन सिंह

जंगल के असली हकदारों की सुध आखिर किसे है। सबकी गिद्ध नजरें इसी पर टिकी हैं कि कैसे उनके जमीनों को कब्जाया जाए और उनमें छिपे खजानों को निकालकर मालामाल बना जाए। आजादी के बाद से अब तक अगर किसी का जीवन आज भी सबसे ज्यादा अस्त व्यस्त है तो वो है आदिवासियों का। सरकारें जो भी आईं सबने अपने अपने अनुकूल उनका उपयोग किया, झांसे में रखा और विकास के नाम पर उनका शोषण किया। सत्तर के दशक में उठा एक जनविद्रोह जो नक्सल मूवमेंट के रूप में जाना गया,आज उसपर भी सवाल खड़े हो गए हैं। जिन उद्देश्यों को लेकर यह विद्रोह शुरू हुआ था वह आज सत्ता विरोध और वोट के बहिष्कार तक सीमित हो चुका है।

पिछले एक महीने में देखा जाए तो सुरक्षा बलों द्वारा सौ से ज्यादा नक्सलियों को मारा गया है। सरकार इसको अपनी उपलब्धि बता रही है और दावा कर रही है कि आने वाले समय में नक्सलवाद का नामों निशान नहीं रहेगा। आदिवासी अस्मिता को नजरंदाज कर जिस तरह का खेल माओवादियों और सरकार के बीच चल रहा है उससे साफ जाहिर होता है कि आदिवासियों को इससे कुछ भी नहीं मिलने वाला। छत्तीसगढ़ के अलग अलग नक्सल प्रभावित इलाकों से माओवादियों के आत्मसमर्पण की घटनाएं आती रहती हैं। मीडिया भी इस घटना को सरकार के नजरिए से पेश करने में लगी है। आज की मीडिया के लिए माओवादी आंतरिक खतरा बन चुके हैं, मगर कभी मीडिया हसदेव जंगल कटने को लेकर उन आदिवासियों के बेबस चेहरे उजागर नहीं करती जो सदियों से इन जंगलों में रहते आए हैं और अपनी विशिष्ट संस्कृति और रहन सहन को बचाए हुए हैं। विश्व में कुछ ही ऐसे देश हैं जहां जनजातियों की बहुलता हैं,जिसमे भारत का नाम भी आता है।मगर आंकड़ों को उठाकर देखें तो कई जनजातियां विलुप्ति के कगार पर पहुंचने को हैं और जो हैं वो लगातार अपनी पहचान के लिए जूझ रही हैं।

पुलिस और माओवादियों की मुठभेड़ में जो भी मारे जा रहे हैं वो कौन लोग हैं? ये कौन लोग हैं जो सीने पर गोली खाने को तैयार जंगलों में घूम रहे हैं? सरकारों के पास आत्मसमर्पण कराने के बाद उनके लिए क्या योजनाएं हैं? हसदेव जंगल का ही मामला उठा लीजिए। कोई नया मामला नहीं है। एक दशक से भी ऊपर हो गया इस मामले को चलते हुए।तब से छत्तीसगढ़ में कांग्रेस और भाजपा की ही सरकारें बनती आई हैं। 2010 से ही इस जंगल को न काटने के लिए आंदोलन चलता आ रहा है। सरकारों ने बस आश्वासन दिए मगर दूसरी ओर अडानी जैसे उद्योगपतियों को भी कहा कि वो आरी कुल्हाड़ी लेकर तैयार रहे। आदिवासी आंदोलन करते रहे और आज भी कर रहे। बीजेपी ने तो अपने घोषणा पत्र में हसदेव जंगल कटने को 'धोखा' बताया मगर सत्ता में आने

के बाद वही काम शुरू कर दिया।

आदिवासियों की लड़ाइयां,उनके विद्रोह को हमेशा से ही छिपाया और दबाया जाता रहा है। वो बस एक मोहरा रहे सरकारों के लिए। जबरन गांव खाली कराने, नक्सली घोषित कर मार दिए जाने जैसी हजार घटनाएं आंखों से सामने से गुजर चुकी हैं मगर उनके मूल विकास को कभी ध्यान नहीं दिया गया। प्राथमिकता में वो कभी नहीं रहे बल्कि रही तो उनकी जमीन और उनके जंगल। नून भात खाकर गुजारा कर लेने वाले ये आदिवासी सरकार के करोड़ों बजट का रती भर भी हिस्सा नहीं मांगते,और सरकार भी उनकी इस भावना का फायदा उठाती है। वो बस सुकून चाहते हैं कि उन्हें उनके जंगल से वंचित न किया जाए। एक बात हमें आपको खुद से पूछनी होगी कि हम नागर समाज के लोग अरण्य की संस्कृति को कितना अच्छे से जानते हैं? हमारी संवेदनाएं क्या उनके इलाकों तक पहुंच पाती हैं? क्या उनकी खबरें हमें विचलित करती हैं? फिर हम कैसे एकतरफा उनको दोषी मान लेते हैं कि वो विकास के धुर विरोधी हैं? यही बात हमें माओवादी या जिन्हें नक्सलवादी कहा जाता है, उनके प्रति भी सोचनी होगी। हम सरकार के बयानों को अपना आधार बनाकर कैसे किसी के बारे में धारणा बना सकते हैं। मेरा कहना यह बिलकुल नहीं कि मैं नक्सलियों के कार्य व्यवहार का पक्षधर हूं मगर हमें उनकी इस हालत के जिम्मेदार लोगों को ढूंढना होगा। उन तत्वों की खोज करनी होगी जिन्होंने उन्हें ऐसा बनने पर विवश किया।

सोनभद्र के उम्भा गांव की घटना याद है आपको? आदिवासी जमीनों को कैसे आला अधिकारियों ने घूस और पैसे खाकर उनकी जमीनों की खरीद फरोख्त की और स्थिति ये आ गई कि कई आदिवासियों को जान गंवानी पड़ी। अब सरकारें बाद में मुआवजा देकर मामले को घुमा देने या शून्य बना देने में माहिर हो चुकी हैं। जंगलों की बात करने वाले दलों या आदिवासियों की सहायता करने वाले, उनके अधिकारों के लिए लड़ने वाले लोगों को सरकार जनता की नजर में अपराधी और माओवादी या अर्बन नक्सल करार दे रही है। वो ऐसी छवि गढ़ने में लगी है कि कल हक और अधिकार मांगने वाले को मार भी दिया जाए तो जनता उसे सरकार का सही और उचित कदम ठहराए और ऐसा होने भी लगा है। नक्सल और माओवादियों के बारे में सतही ज्ञान रखने वाले लोग फिल्में बनाकर जनता में एक नैरेटिव सेट करने में लगे हैं। ये दौर एजेंडा बनाकर मलाई खाने का दौर है।छत्तीसगढ़ की मौजूदा सरकार को अब जवाब देना चाहिए कि कांग्रेस के समय में आदिवासियों के साथ 'धोखा' उनकी सरकार में 'भला' कैसे हो गया। जबकि जंगल पर नजर रखे उद्योगपतियों को दोनों ने ही अपनी गोदी में खिलाया है। राजस्थान सरकार को बिजली की कमी पड़ी तो छत्तीसगढ़ सरकार ने जंगल कटा कर खुदाई शुरू कर दी। ठीक बात है कि विकास के लिए कुछ नुकसान झेलना होता है और कुछ दोस्ती भी निभानी पड़ती है।

मगर हर बार नुकसान आदिवासी ही क्यों उठाएं। जब खबर इसकी लगती है कि फला जगह कोयला है,फला जगह सोना है या फला जगह हीरा हैं तभी सरकार क्यों उत्साहित होती है अपने विकास का रथ इन आदिवासी इलाकों में ले जाने को। तभी इनकी सड़कें, इनकी गाड़ियां इनके डंपर,इनके बुलडोजर या बड़ी बड़ी मशीनें जंगलों में पहुंच जाती हैं। बड़े बड़े अस्थाई घर बन जाते हैं। क्यों इससे पहले नहीं दिखती उनको आदिवासियों की बेबसी,विकास की राह देखती उनकी आंखें। सवाल माओवादियों पर भी उठता है कि ऐसी घटनाओं पर उनकी चुप्पी क्या संकेत देती है? सिर्फ चुनाव का बहिष्कार करना या फिर कांग्रेस भाजपा का झूठा विरोध करना उनका काम रह गया है? उनकी जो खूनी लड़ाई जंगलों के बीच चोरी चुपके,छिपते छिपाते चल रही उनको चाहिए कि हथियार त्याग कर वो एक नागरिक की तरह सही मायनों में आदिवासियों का साथ दें। मगर ऐसी उम्मीद करना भी ख्याली पुलाव जैसा ही है। सरकारें इसे बनाए रखना चाहती हैं जिससे आदिवासी और उनकी जमीन को डर और भय का माहौल बनाकर लूटा जाता रहे।

सरकारों की बयानबाजियों और रोज होती मुठभेड़ में आदिवासी जीवन पिसता जा रहा है। उन्हें पुलिस का भी भय है और माओवादियों का भी भय है। ऐसे में वो खुद जंगलों को छोड़ने पर विवश हो रहे हैं। उनको दोहरी मार का सामना करना पड़ रहा है। अब इनके अधिकारों के लिए लड़ने वालों की संख्या भी सिमटती जा रही है। मुश्किल ही है कि कोई महाश्वेता देवी आए जिनको ये मां कह सकें। शहरों में सांस ले रहे और बिजली से सुख का जीवन भोग रहे लोगों को इनके अंधेरे जीवन का दर्द कब महसूस होगा, चिंता का विषय है।

दृष्टिकोण

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

समावेशी समाज के लिए बुद्ध और डॉ. आंबेडकर जरूरी

तथागत बुद्ध को बुद्ध पूर्णिमा के दिन हम सब सेलीब्रेट करते हैं। बुद्ध के रूप में एक ऐसी दिव्य ज्योति जो सम्पूर्ण एशिया में तो शांति के लिए सुप्रसिद्ध हुई लेकिन वैश्विक स्तर पर जो प्रभाव छोड़ी, वह किसी से छुपा नहीं है। डॉ. आंबेडकर ने बुद्ध के इसी प्रकाश में स्नान कर जीवन की सार्थकता समझी। पूरब से लेकर पश्चिम तक। उत्तर से लाकर दक्षिण तक बुद्ध के प्रति लोगों का आकर्षण इसलिए रहा है क्योंकि वह चाहते थे कि सबको बराबर की गरिमा मिले। पाखंड से लोग दूर हों और सबमें बुद्धत्व जागृत हो जो उन्हें असीम तपस्या के उपरांत प्राप्त हुआ था। भीमराव अंबेडकर ने वर्ष 1956 में आज ही के दिन बौद्ध धर्म अपना लिया था। नागपुर में आयोजित एक समारोह में डॉ. अंबेडकर के साथ उनके लाखों समर्थकों ने भी बौद्ध धर्म अपनाया था। श्रीलंका में लिया गया प्रण डॉ. आंबेडकर ने अपने जीवन के उत्तरार्ध में पूर्ण कर ही लिया। प्रश्न यह अवश्य मन में आता है कि आखिर बुद्ध के प्रति आंबेडकर का प्रेम क्या था? ऐसी कौन सी खूबी बुद्ध ने देखी बौद्ध धर्म में कि उन्होंने इसे ही अपनाया।

इस विषय पर बहुत लिखा पढ़ा गया है। सबने बहुत कुछ सुन रखा है कि आंबेडकर को बुध ने क्यों लुभाया। संसार को सत्य, अहिंसा, करुणा के साथ मोक्ष का आसान मार्ग दिखाने वाले बुद्ध के ये मार्ग इतने आसान और इसके विचारों में हर वंचित, त्याज्य मनुष्यों के लिए इतनी जगह थी कि समय के साथ-साथ लोग इनके विचारों में रमते गए। आंबेडकर सच्चे विश्लेषक थे। वह किसी पाबंदियों के बीच जीने से बचते रहे। ये खुले विचार ही तो आधुनिक भारत के तर्कवादी डॉ. बीआर आंबेडकर को लुभाए। भला इससे प्रभावित हुए बिना वह कैसे रह सकते थे। डॉ. आंबेडकर के अनुसार बौद्ध धर्म प्रज्ञा और करुणा प्रदान करता है, यह सबसे मुख्य बात है। दूसरी बात इसमें समता के संदेश हैं। उन्हें लगा कि इन तीनों के बिना मनुष्य जीवन वृथा है। अच्छा और सम्मानजनक जीवन ही जहाँ न हो, वह भी भला कोई जीवन है। वह चाहते थे कि कि अंधविश्वास और परलौकिक शक्तियों के खिलाफ तर्क की कसौटी पर जीवन जी कर मनुष्य प्रज्ञावान हो। दुखियों और पीड़ितों के लिए प्रेम और संवेदना से मनुष्य करुणावान हो और धर्म, जाति, लिंग, ऊंच-नीच की सोच से ऊपर उठकर हर मनुष्य को बराबर माना जाए यानी सब समतामूलक जीवन के भागीदार हों। डॉ. आंबेडकर ने इस अभीष्ट को सिद्ध करने के लिए बौद्ध धर्म को अपनाया। उन्हें यह लगा कि बौद्ध धर्म ही ऐसा धर्म है जहाँ मनुष्य शरण ले तो उसे सब मूल सकता है।

दरअसल, समाज में दलितों की स्थिति उन दिनों ठीक न थी। छुआछूत और भेदभाव से वे बहुत दुखी थे। उन्हें इसे दूर करने का हिंदू धर्म के तत्कालीन समाज में ठीक-ठीक उम्मीद नहीं दिख रही थी। सबके दुःख को समझकर वे यह समझते थे कि इस आज के भारतीय जनमानस को बदलना इतना आसान नहीं है। उन्होंने बहुत सोचा। बहुत समझा। बहुत विचार किया। वह भारत में उस दौरान विभिन्न धर्म के मानने वाले लोगों को देखा। उन्हें समझने का प्रयास किया। उनके बारे में सबकुछ पता किया कि उनमें अच्छाई क्या है, बुरी चीजें उनके धर्म में क्या है। वे उनके जीवन शैली का बारीकी से अध्ययन किए। वे इसके लिए विभिन्न अंचलों में गए भी। पंजाब भी वे आये थे सिख धर्म को समझने के लिए। लेकिन उन्हें सबमें उत्तम बौद्ध धर्म ही लगा। बौद्ध धर्म के सिद्धांतों में उम्मीद की किरण दिखी। सभी धर्मों का अध्ययन कर तुलना की और बौद्ध धर्म अपनाने का फैसला किया।

डॉ. आंबेडकर के वैचारिकी को समझने के लिए हमें निःसंदेह उनकी लिखी पुस्तकों का अवलोकन करना चाहिए। 'बुद्ध यौर धम्म' उनकी सुप्रसिद्ध पुस्तक है उसमें उन्होंने धर्म-रिलीजन-मजहब सब पर विचार किया है। वह इस नतीजे पर पहुंचाते हैं कि धर्म जिसे रिलीजन या मज़हबद् शब्द से संबोधित करते हैं अपने धर्म की समझ के लिए उसमें नैतिकता प्रभावकारी नहीं है। खैर यह एक बड़ा डिबेट है। इसे सनातन के लोग नहीं स्वीकार करेंगे। क्रिश्चियन भी नहीं स्वीकारेंगे और मुस्लिम भी नहीं लेकिन बुद्ध के मार्ग से आंबेडकर इसका विश्लेषण करते हैं कि यद्यपि धम्म में ईश्वर का कोई स्थान नहीं है, तो भी धम्म में 'नैतिकता' का वही स्थान है, जो धर्म में 'ईश्वर' का। धम्म में प्रार्थनाओं, तीर्थ-यात्राओं, कर्म-काण्डों, रीति-रिवाजों या बलियों के लिए कोई स्थान नहीं है। 'नैतिकता' ही धम्म का सार है। इसके बिना कोई 'धम्म' नहीं है। धम्म में जो नैतिकता है, वह मनुष्य-मनुष्य के बीच मैत्री करने की सीधी आवश्यकता से उत्पन्न होती है। इसमें ईश्वर की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है। यह ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए नहीं है कि मनुष्य नैतिकता का पालन करें। यह स्वयं उसके अपने कल्याण के लिए है कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से मैत्री करे। (स्रोत बुद्ध और उनका धम्म, पृष्ठ 294-295)

बुद्ध का धम्म सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया और करुणा आदि सात्विक गुणों पर आधारित है, हम सभी जानते हैं। सबसे अहम् बात यह थी बुद्ध की कि बुद्ध के कथनी और करनी में विभेद न होने के कारण वे सर्वमान्य तथा सत्यशोधक परिशोधक के रूप में मिलते हैं। तीसरी बात यह थी कि बुद्ध का धम्म अहिंसा के अतिरिक्त सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनैतिक, स्वतंत्रता, समानता और बंधुता के बुनियादी तत्वों को स्वीकार करता है। डॉ. आंबेडकर को लगा कि बुद्ध धम्म के सिद्धान्त आधुनिक हैं जिसका उद्देश्य मनुष्य को इस जीवन में विमुक्ति का मार्ग दिलाना है, न कि मृत्यु के बाद स्वर्ग-नरक नामक स्थानों को बताकर भ्रमित करना है। बौद्ध धर्म का मानवीय मूल्य बताने के उद्देश्य से बुद्ध ने अपने उपदेश तीन त्रिपिटक-सुत्त पिटक, विनय पिटक और अभिधम्म पिटक उद्घाटित किया है। यदि इन अमूल्य पिटकों का अवलोकन मनुष्य कर ले तो वह डॉ. आंबेडकर की भांति खिंचा चला आएगा, इसमें कोई दो मत नहीं।

अब समय बदला है। समाज में बदलाव आये हैं लेकिन डॉ. आंबेडकर की अपेक्षाएं जो उन दिनों थीं उसे स्मरण करने की आवश्यकता है। डॉ. आंबेडकर ने कहा था संत समाज की स्थापना पहले भगवान बुद्ध ने की। उनके जमाने में इस समाज को भिक्खु समाज कहा जाता था। भगवान बुद्ध ने भिक्षु समाज की स्थापना क्यों की? क्योंकि समाज के सभी लोग अपने प्रपंच में उलझने के कारण उनका बौद्धिक विकास नहीं हो पाता। ऐसा समाज सत्य और कुछ समय बाद समाज से भी महरूम होता है। इसीलिए समाज स्वार्थरहित और आदर्श होना चाहिए। इसी विचार से भगवान बुद्ध ने भिक्षु समाज की स्थापना की। भिक्षुओं पर उन्होंने कई निर्बंध लगाए ताकि उनका मन दोबारा प्रपंच की तरफ न मुड़े। भिक्षुओं का प्रमुख काम था, स्वधर्म का प्रचार और प्रसार करना। संतों पर समाज की जिम्मेदारी होना जरूरी है। लेकिन आज के साधू लोग करते क्या हैं? बदन में राख लगा कर समाज से दूर रहते हैं। जटाएं, बढ़ी हुई दाढ़ी, मालाएं, रंगीन कपड़ों के टुकड़ों से ही साधु नहीं बनते, ये केवल बाहरी लक्षण हुए। आज समाज में हर कहीं अधोगति के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। समाज में हर जगह जुल्म और जबर्दस्ती के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। समाज में हो रहे अत्याचार, जोर-जुल्म का प्रतिकार करना साधुओं का कर्तव्य है। वही लोक कल्याण है।

आज डॉ. आंबेडकर हमारे बीच नहीं हैं। वे होते तो दुखी होते क्योंकि समय तो बदला लोगों के स्वाभाव नहीं बदले। लोक कल्याण की भावना लुप्त होती गयी है। अधोगति की ओर मनुष्य कुछ ज्यादा बढ़ गया है। हम बुद्ध के जन्मोत्सव को मना लें। हम आंबेडकर को स्मरण कर लें। हम अपने सभ्य होने का दंभ भर लें लेकिन जिसे डॉ. आंबेडकर ने नैतिक मन से स्वीकार किया था। जिसे लाखों उनके समर्थकों ने स्वीकार किया था उस बौद्ध दीक्षा को मानने वालों में भी भटकाव है। जो बुद्ध को नहीं माने उनकी बात ही क्या की जाए। एक बार पुनः आत्म विश्लेषण करने का समय है कि हम बुद्ध को कितना अपनाए। हमने डॉ. आंबेडकर को कितना माना। आधुनिक भारत के बुद्ध डॉ. आंबेडकर ने निःसंदेह समाज की जो सच्ची तस्वीर देखी थी और जिस दिशा में बुद्ध अपनाने वालों से बढ़ने की अपेक्षा की थी वे भी तो कहीं न कहीं भटक गए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हमें डॉ. आंबेडकर के सात्विक मन और बुद्ध के सत्य को एक बार आत्मसात करना चाहिए क्योंकि सार्वभौमिक सभ्यता और मैत्री की ध्वनि तो वहीं से निकल रही है। यदि हम उन्हें अपनानायेंगे तो गी समावेशी समाज का निर्माण कर सकेंगे।

कितनी बार पलटें भिया

कटाक्ष

गोविन्द सेन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

हम तो पलट-पलट कर परेशान हो गए हैं भिया। जब आप पलटते हैं तो हमें भी पलटना ही पड़ता है। हम आपकी पलटन जो ठहरे। फालोवर हैं। अरे, लवर हैं आपके। हमको तो हर हाल में आपके पीछे ही रहना होता है। हमारा यही धर्म है। आपके कहे मुताबिक जिंदाबाद-मुर्दाबाद करना पड़ता है। तालियाँ पीटना पड़ता है द्य हम तो आपकी छाया हैं। आप हमारी काया- हम आपकी छाया।

लोग अब तो हँसने लगे हैं। पल में दाएँ, पल में बाएँ। सुबह इधर, दोपहर उधर-शाम को इधर, रात को फिर उधर। कब तक इधर-उधर होते रहें भिया द्य लोग हमसे पूछते हैं भिया कि इधर के हो या उधर के। भरतपुरी लोटा तक कहने लगे हैं। हम ऐसे कब तक लुढ़कते रहेंगे। उल्टा-पुल्टा होते रहेंगे। इतनी जल्दी तो गर्म तवे पर रोटी भी नहीं बदली जाती द्य

शादी-तलाक, तलाक-शादी का खेल कब तक चलता रहेगा। जिससे तलाक लिया, उसी से शादी। कब तक पति बदलते रहेंगे द्य कहते थे हमें लव हो गया है। शादी के बाद कहते हो कि हमसे गलती हो गई थी। हम तलाक चाहते हैं। तलाक के बाद कहते हो फिर गलती हो गई। अब पता चला कि हमें उन्हीं से लव था। उसी से ठंडा उसी से गरम। हमें तो कुछ समझ में नहीं आता भिया।

कल तो कहा था कि अब फाइनल है। बाईं तरफ ही रहेंगे। आज देखते हैं कि आप दाईं तरफ आ गए हैं। ये कब तक दाएँ-बाएँ करते रहोगे भिया। आखिर उसूल नाम की भी कोई चीज होती है कि नहीं। सुबह जिनसे गाली खाई उनसे ही शाम को गले मिल रहे हो। हम आपके फालोवर हैं, टुच्चे दलबदलू नहीं। जिसको गाली देते थे, अचानक उसके ही गीत कैसे गाने लगें हम!

क्या किसी से डरते हो या किसी ने आपको डरा-धमका दिया है। ये नहीं किया तो आपका वो कर देंगे। कुछ खाया है या कुछ खिलाकर पटाया गया है। जवाब में केवल मुस्का ही क्यों रहे हो भिया। जाने क्यों मुस्कुरा रहे हो-कौन सा गम है जो छुपा रहे हो! कुछ तो कहो भिया। या इलाही ये माजरा क्या है!

यदि डरकर पलटे हो तो वो जंघा ठोक-ठोककर खुद को शेर बताना क्या था! वो मूँछों का मरोड़ना क्या था! आपकी बहादुरी के ढिंढोरे का क्या हुआ। तुम कायरता दिखाओगे तो हम बहादुरी कैसे दिखा पायेंगे। हमारी तो पहले ही हवा खिसक जाएगी। हिम्मत ही टूट जाएगी भिया। आप ही तो हमारी हिम्मत हैं। आप हमारे सब कुछ हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव, बंधु त्वमेव च सखा त्वमेव।

यदि लालच में आ गए हो। ऊँची कीमत पर बिक गए हो। तो हमको भी बिकवा दो भिया। थोड़े कम दाम में ही सही। आजकल तो फिक्सिंग जायज़ है। हम भी कुछ दिन आपकी तरह ऐश से जी लेंगे। कुछ पैसा बना लेंगे। कहीं नौकरी ही दिलवा दो भिया। घरवाले पूछते हैं कि तुम्हें वफ़ादारी का क्या इनाम दिया है भिया ने द्य कब तक फालतू बने रहोगे द्य कभी-कभी तो आपके पालतू तक बोल देते हैं द्य

हम कब से आपकी पूँछ बने हुए हैं। उसका कुछ तो इनाम मिलना चाहिए। हम पूँछ बने तभी आप मूँछ मरोड़ने लायक बने। हम आपकी मूँछ के बाल हैं भिया। मूँछ में बाल ही न रहें तो मरोड़ोगे क्या! हम कब तक नारे बदलते रहें। कब तक जयकारा लगाते रहें। कब तक भाड़े की भीड़ बनते रहें भिया। हमारा भी कोई ठिकाना लगवा दो भिया।

यदि सामने वाले ने आपकी कमजोर नस दबा दी हो तो आपको पहले ही सतर्क रहना चाहिए था। नस को मजबूत रखना था। इतनी मजबूत कि कोई दबा न सके। या जैसे ही नस दबाने के लिए हाथ कलाई की ओर बढ़ता उसे पकड़ कर मरोड़ देते।

और हाँ भिया आखिरी बात-इतने पलटा न करें। हममें अब वो फुर्ती नहीं रही कि आपके पलटते ही हम भी पलट जाएँ। शिथिल हो गए हैं। हमारी मजबूरी समझो। लोग हमारी खिल्ली उड़ाते हैं द्य हम छोटे आदमी ठहरे द्य दस के बीच उठना-बैठना पड़ता है द्य लोग सत्रह सवाल पूछते हैं द्य हमें जवाब देना पड़ता है। दुनिया करे सवाल तो हम क्या जवाब दें। पलटने का कारण बताना पड़ता है। यदि आप पलटें और हम न पलटें तो क्या होगा। ज़रा सोचकर देखना। हम आपको ही पलट दें तो कैसा लगेगा द्य

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

असीमित बहुमत की मांग व्यर्थ है विफल पार्लियामेंट का विकल्प पंचायत ही है

व्यंग्य

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

जनता से आम चुनावों में बढ़-चढ़कर केन्द्रीकृत बहुमत मांगा जा रहा है पर लोकतंत्र तो विकेन्द्रित आम सहमति से ही चलाया जा सके, तभी चलेगा। केवल चुने हुए प्रतिनिधियों का बहुमत तो लोकतंत्र के लिए ख़तरनाक भी हो सकता है। देश और दुनिया में इसके कई उदाहरण मिलते हैं-

पहला उदाहरण तो यह है कि चुने हुए प्रतिनिधियों के केन्द्रीकृत बहुमत से लोकहित की दुहाई देकर असीमित जंगल काटे जा रहे हैं और आज हालत यह हो गयी है कि धरती का तापमान बढ़ता ही जा रहा है। वर्षा भटक रही है। सूखा, बाढ़ और अकाल के रूप में उसके प्रत्यक्ष परिणाम आ रहे हैं। अगर आम सहमति मांगी जाये तो सब यही कहेंगे कि वनों का विनाश नहीं होना चाहिए।

दूसरा उदाहरण यह है कि देश और दुनिया में सार्वजनिक संपत्तियों और साधनों को बिना किसी आम सहमति के हमारे चुने हुए प्रतिनिधि अपने मुट्ठी भर बहुमत की शक्ति से चाहे जिसे बेचने और गिरवी रखने का अपना अधिकार मान बैठे हैं और बड़ी आबादियों के अपने जीवनयापन के साधन उनसे छीनें जा रहे हैं। जल, जंगल, जमीन से जीवन को विच्छिन्न किया जा रहा है।

तीसरा उदाहरण यह है कि केन्द्रीकृत बहुमत की लालसा से भरी दलीय राजनीति आम सहमति से चलते बहुरंगी जीवन के परस्पर आश्रय को विखण्डित करके उसे किसी एक रंग में रंगने की कुटिल नीतियां बनाने लगी है जिससे परस्पर उदारता के मूल्य का मान घटने लगा है। इसका परिणाम असहायता और अशांति के रूप में ही प्रकट हो रहा है।

चौथा उदाहरण यह है कि जब व्यापक आम सहमति की परवाह किये बिना केन्द्रीकृत बहुमत का सिक्का चलने लगता है तो इस राजाश्रय में ही छोटे-छोटे स्वार्थी गिरोह पैदा होते हैं। ये गिरोह वैधानिक ओट में छिपकर अपने न्यास और समितियां बनाकर शिक्षा, स्वास्थ्य और समृद्धि पर मनमाना कब्जा जमाने लगते हैं। वे अपने स्वार्थ साधते हुए जीवन का ही मूल्य आंकना भूल जाते हैं।

पांचवां उदाहरण यह है कि विश्व के राजनीतिक मंच पर पृथ्वी के नागरिकों की सहमति का ही नहीं, उन नागरिकों से मत पाकर बनी राष्ट्रीय राज्य व्यवस्थाओं के प्रतिनिधियों का बहुमत भी दुनिया की महाशक्तियों की असहमति के आगे अक्सर काम नहीं आ रहा। पृथ्वी पूरे जीवन को बिना भेदभाव के जगह देकर अंतरिक्ष में अकेली घूम रही है और पृथ्वी पर शासकों का बहुमत जीवन को अकेला और असहाय बना रहा है।

क्या यह अब भी संभव है कि पृथ्वी, वायु, जल, आग और आकाश के पक्ष में आम सहमति की वह राजनीति, समाजनीति और अर्थनीति रची जा सके जो युद्ध विमुख इन्सानी बिरादरी के पक्ष में खड़ी हो। जीवन के संचालन के लिए यह कतई जरूरी नहीं कि कुछ लोग केन्द्रीकृत बहुमत पाकर अपने मनमाने निर्णय जीवन पर थोपने लगें। केन्द्रीकृत बहुमत एक भ्रमित करने वाला छल है, जीवन तो हरेक आदमी के प्रत्यक्ष सच से चलता है। इस जीवन को पार्लियामेंट नहीं, अपनी स्थानीयता में सुखी रहने के लिए आज भी छोटी-सी पंचायत चाहिए।

नारद जयंती पर विशेष

भटकी हुई पत्रकारिता को नारद के आदर्श की जरूरत

अमित राव पवार

लेखक स्तंभकार हैं।

वर्तमान व आधुनिकता के दौर में जहां सूचनाओं का आदान-प्रदान सुगमता से देखा जा रहा है। वही हम जब युगों-युगों से इस तंत्र की भूमिका के निर्वाह पर प्रकाश डालते है,तो देवऋषि नारदजी इस भूमिका में हमे हर युग मे नजर आते है। उन्होंने देव-दानवों, मनुष्य तक संदेशों को पहुँचाया। लोककल्याण, जनहितैषी कार्य के उद्देश्य से सदैव इन्होंने अपने कर्तव्य का पालन किया और धर्म की रक्षा करते हुए इन्होंने हमेशा उचित मार्गदर्शन भी दिया। हर एक ग्रन्थ,पुराणों में नारदजी का उल्लेख इस बात का प्रमाण है, कि इन्होंने संवाहक का कार्य करते हुये लोगों के समाचारों को देवताओं तक पहुँचाया। यही सब कार्य वर्तमान में पत्रकारिता कहलाती है। आज पत्रकार भी आम जनता की आवाज को सम्बंधित व्यक्ति तक पहुचाने का काम करते दिखाई दे रहा है। जैसे ये तीनों लोकों के संदेशों के लिए सजग रहते थे वैसे ही आज पत्रकार भी समाज के हर खबर के लिए सजक रहता है।

पत्रकारिता के समाज को नारद के चरित्र से प्रेरणा लेने की आवश्यकता महसूस होती है। पत्रकारिता को भारतीय सविधान में चौथा स्तंभ कहा जाता है। क्या आज के पत्रकार,पत्रकारिता, संवाद,संवाददाता नारद के पद चिन्हों पर ही जनकल्याण के कार्य में लगे है ? कुछ को छोड़ दिया जाए तो यह समाज के पत्रकारिता के लिए चिंतन और मनन करने का विषय होना चाहिये,क्योंकि नारदजी पत्रकारिता के जनक के रुप मे हमारे इष्ट है। यदि नारदजी के संवाद के आधार पर हम पत्रकारिता को देखे तो,तथ्यों को एकत्रित कर उनका विश्लेषण कर तत्प्रश्चात उसकी परख कर उसे दुसरो तक या सम्बंधित तक पहुँचाती है। यही तो पत्रकार का कार्य है। असुविधा अर्थात् अभाव में रहकर भी लोककल्याण, सामाजिकहित कार्यो में लगे रहता है। सामाजिक दर्द को, मनुष्य की दुःख को जिम्मेदारों तक पहुँचाता या उनको अवगत कराता है। एक उजाले की किरण की तरह मार्ग खोलता है,वही विपरीत इसके सामाजिक बुराइयों के विनाश का कारण भी गढ़ता है। पत्रकारिता का काम ही सज्जन की रक्षा करना और दुष्टो का संहार करना है। भारत में पहला हिंदी समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड 30 मई 1826' को कोलकाता से साप्ताहिक समाचार पत्र के रूप में प्रकाशित हुआ। कानपुर के रहने वाले पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने इसे शुरू किया। जिसमें इन्होंने अपने संपादकीय पर लिखा,'आज 30 मई 1826 को ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया तिथि देवऋषि नारद जयंती है।' (अतः यह कहा जा सकता है,कि सालों पूर्व देवऋषि नारद को पत्रकारिता जगत का आराध्य माना गया।) वर्तमान समय में कुछ पत्रकार 30 मई को हिंदी दिवस मनाते हैं। किंतु नारद जयंती मनाने में इनमें असुविधा अथवा

पहरेज सा महसूस दिखाई पड़ता है। इस अखबार के 71 अंक ही प्रकाशित हुए, आर्थिक हालत ठीक नहीं होने के कारण इसे 1827 में बंद करना पड़ा।

पत्रकारिता के तीन प्रमुख आयाम जो हम देख सकते है, सूचना देना,शिक्षित करना, तथा मनोरंजन करना, इसी के साथ जनमानत की भावनाएं जानना उन्हें प्रकाशित करना लोगों में सकारात्मकता पैदा करना कोई दोष या नकारात्मकता तो उसे बिना भय लोगों के सामने लाना। यही कार्य तो देव ऋषि नारद जी का था,जो सूचनाए देने का कार्य नहीं अपितु सार्थक संवाद किया करते थे। देव-दावत, मनुष्य तीनों लोकों की भावनाएं जानने का कार्य किया करते थे, जिसमें लोककल्याण का हित हो वही भावनाएं जगजाहिर करते थे, किसी भी कीमत पर समाज को सच से अवगत कराना यही तो सच्ची पत्रकारिता है जो किसी के दबाव या प्रभाव में ना आकर अपनी बात कहे। स्वयं के फायदे के लिए (अनेक डायरेक्टर) मनोरंजन-नाटकों की दुनिया में देवऋषि नारद को हास्यास्पद दर्शाया गया हो,लेकिन इनका जीवन का हर एक संवाद लोक कल्याण के लिए ही होता था। नादान और मूर्ख लोग के सामने इनका जीवन और कुछ हो सकता हो। लेकिन सही तो यह है कि नारद तो धर्म ओर समाज कल्याण के लिए सभी लोकों में घूमा करते, स्वयं के आनंद के लिए नहीं अपितु वह जनमानस के आनंद का ध्यान रखते हुए सूचनाओं का आदान-प्रदान करते थे। जहां आज 'भटकी हुई पत्रकारिता को देव ऋषि नारद के आदर्श की जरूरत है' उनके चरित्र से मार्गदर्शन लेना चाहिए आजादी के आंदोलन में जिस तरह पत्रकारिता ने एक सिपाही की भूमिका का निर्वाह किया आज यही पत्रकारिता धन्नासेठों अथवा राजनेताओं की हाथों की कठपुतली बन गई है आज भी पत्रकारिता के संपादक अपने मालिक के कहने पर कार्य करते हैं,पर ऐसा नहीं है कि सभी लोग पत्रकारिता में ऐसे लिप्त है आज भी सच्ची और अच्छी पत्रकारिता के लिए कुछ लोग महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं जिनकी संपादन की लेखनी में धार जीवित है पर उनकी भूमिका बहुत कम संख्या में हमें दिखाई देती है लोक कल्याण के लिए किया गया कार्य यही एक पत्रकारिता का चौथा स्तंभ कहलाता है लोग भले ही ना माने की नारद भगवान प्रथम पत्रकार है,पर उनके चरित्र ओर कार्यो से यह साबित होता है कि वे ही इस संसार के प्रथम संवाहक पत्रकार है। पुराणों के अनुसार ऋषि नारद ने कई ऐसे कार्य किये जिससे संसार की रक्षा हुई। योगेश्वर श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि, देवषीणाचनारदः। अर्थात् देवषियों में, मैं नारद मुनि हूँ। ऋषि नारद व्यास जी,वाल्मीकि जी और परम ज्ञानी शुकदेव जी के गुरु है। देवऋषि नारद के ज्ञान और बुद्धिमत्ता का वर्णन करना केवल कठिन ही नही अपितु असंभव है। फिर भी पुराणों ग्रँथों और जानकारी के अनुसार यह कहना होगा,कि वे हर एक युग-काल में लोककल्याण के लिए पत्रकार या पत्राचार के आधार स्तंभ थे।

नारद जयंती

पत्रकारिता के प्रथम पितृ पुरुष देवर्षि नारद

चेतनादित्य आलोक

लेखक वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं।

ब्रह्मा जी के सात मानस पुत्रों में से एक देवर्षि नारद को 'देवताओं का दिव्य दूत'एवं'संचार का अग्रणी' साधक कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार भगवान श्रीहरि विष्णु की अनुकंपा से उन्हें तीनों लोकों में कहीं भी और किसी भी समय आने-जाने का वरदान प्राप्त था। देवर्षि होने के साथ-साथ वे एक कुशल एवं सर्वथा योग्य पत्रकार भी थे। गले में वीणा लटकाए और हाथों में करताल लिए हमेशा चलायमान रहने वाले नारद जी ने ही नित्य-निरंतर एक लोक से दूसरे लोक में भ्रमण करते हुए सूचनाएं, समाचार,संदेश आदि का संकलन, संचार तथा संप्रेषण करते हुए पत्रकारिता की कला का प्रारंभ किया था। इसीलिए वे ब्रह्माजी द्वारा बनाई गई इस सृष्टि के प्रथम सूचनादाता, संदेश वाहक, समाचार प्रस्तोता, संवाददाता एवं पत्रकारिता के 'प्रथम पितृ पुरुष' भी माने जाते हैं। दरअसल, नारद जी यत्र-तत्र-सर्वत्र विचरण करते हुए संवादों का सार्थक सेतु तैयार करते थे। एक श्रेष्ठ संचारकर्ता होने के कारण उन्हें तीनों लोकों की सारी बातें पता होती थीं। गौरतलब है कि एक पत्रकार के रूप में नारद जीसदा-सर्वदा अपने कर्तव्यों का पालन पूरी लगन एवं निष्ठा से तथा पक्षपात रहित होकरकरते थे।उनकी ऐसी गरिमा और ख्याति थी कि वे तीनों लोकों में कहीं भी, कभी भी और किसी के सामने बेहिचक एवं बेधड़क प्रकट होने और निर्भीकतापूर्वक सत्य समाचार सुनाने की क्षमता रखते थे।

इतना ही नहीं, उनकी बातों पर सभी समान रूप से विश्वास भी करते थे। देखा जाए तो एक सच्चे पत्रकार का यही कर्तव्य होना चाहिए किवह प्रत्येक परिस्थिति में सत्य वचन कहने और लिखने के साहस और क्षमता का प्रदर्शन कर सके, जो आज दुर्भाग्यवश अप्राप्य है। आज मनुष्य के पास संचार के अनेक साधन उपलब्ध हैं यथा-रेडियो, टीवी, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, सोशल मीडिया के विविध प्लेटफॉर्म एवं इंटरनेट पर मौतूद अन्य साधन, जिनके माध्यम से क्षण भर में ही दुनिया भर के तमाम हिस्सों से समाचारप्राप्त किया जा सकता है, किन्तु लोक से लेकर परलोक तक में सर्वप्रथम संचार व्यवस्था स्थापित करने का श्रेय तो वस्तुतः नारद मुनि को ही प्राप्त है। सच कहा जाए तो नारद जी द्वारा प्रतिपादित संचार की प्रक्रिया एवं शैली ही बाद में मनुष्य जाति के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। बता दें कि न केवल मनुष्य, बल्कि पेड़-पौधे,पशु-पक्षी एवंकीट-पतंग आदि सभी प्राणी अपनी-अपनी भाषा में संवाद स्थापित करने का कार्य करतेहैं। तात्पर्य यह कि संचार सभी जीवों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण होता है।

आजीवन ब्रहमचारी रहने वाले देवर्षि नारद परम ज्ञानी भी थे। उन्होंने प्रह्लाद, अम्बरीष एवं ध्रुव समेत भगवान श्रीहरि विष्णु के अनेक प्रिय भक्तोंएवं ऋषि-मुनियों को ज्ञान देकर धन्य किया था। ज्ञानी होने के कारण वे देवी-देवताओं एवं ऋषि-मुनियों के बीच ही नहीं, अपितु राक्षसों, असुरों, दैत्यों, किन्नरों, गंधर्वों आदि सबके बीच समान रूप से प्रतिष्ठित एवं सम्मानित माने जाते थे। सभी उनका उचितआदर और सत्कार करते थे। देवर्षि नारद को महर्षि व्यास, महर्षि बाल्मीकि एवं महाज्ञानी शुकदेवजी के गुरु होने का गौरव भी प्राप्त है। अमरत्व का वरदान पाने वाले तथा मधुर भाषी नारद जी के चेहरे पर हमेशा मुस्कान बिखरी रहती थी। उनके संबंध में सोचने से ही प्रायः मन में 'नारायण-नारायण' की मधुर ध्वनि गुंजायमान होने लगती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार नारदजी पूर्व जन्म में 'उपबर्हण' नामक गंधर्व थे। अति रूपवान होने के कारण उन्हें अपने रूप पर बड़ा अभिमान था। एक बार अप्सराएं गंधर्व गीत और नृत्य से ब्रह्मा जी की आराधना कर रही थीं, तभी उपबर्हण वहां आ गए और स्त्रियों के साथ श्रृंगार भाव से रासलीला करने लगे,जिसके बाद क्रोधित होकर ब्रह्मा जी ने उन्हें 'शूद्र योनि' में जन्म लेने का शाप दे दिया।

तत्पश्चात् नारदजी का जन्म 'शूद्रा दासी'के पुत्र के रूप में हुआ। फिर माता और पुत्र सच्चे मन से साधू-संतो की सेवा करने लगे। नारद मुनि बालक रूप में संतों का जूठन खाते, जिससे उनके हृदय के सारे पाप नष्ट हो गए। पांच वर्ष की आयु में माता की मृत्यु हो जाने से वे एकदम अकेले हो गए, लेकिन पूर्वजन्म के पवित्र संस्कारों के कारणउन्हें परमात्मा की भक्ति करने की प्रेरणा मिली। उसके बाद तो उन्होंने परमात्मा की अत्यंत ही असाधारण भक्ति की, जिससे प्रसन्न होकर परमात्माने उन्हें एक दिन दर्शन भी दिया। ईश्वर के दर्शन के पश्चात् उनके मन में ईश्वर और सत्य को जानने की लालसा उत्पन्न हुई। देवर्षि नारद कुछ करते उससे पहले ही आकाशवाणी हुई, जिससे उन्हें ज्ञात हुआ कि उस जन्म में उन्हें दोबारा ईश्वर के दर्शन नहीं होंगे, लेकिन अगले जन्म में वे परमात्मा के पार्षद बनेंगे। कालांतर में आकाशवाणी की बातें शब्दशः सत्य सिद्ध हुईं।उसके बाद नारदजी ने भगवान श्रीहरि विष्णु को प्रसन्न करने के लिएकठोर तपस्या की, जिसके फलस्वरूप अगले जन्म में वे ब्रह्माजी के मानस पुत्र के रूप में ज्येष्ठ महीने के कृष्णपक्ष कीद्वितीया तिथि को उनके ही कंठ से प्रकट हुए, जिसका उल्लेख ब्रह्मवैवर्त पुराण में मिलता है।

हालांकि कुछ मान्यताओं के अनुसार नारद मुनि का जन्म सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी की गोद से हुआ था। बहरहाल, नारद जी के प्राकट्य की तिथि को भारतवर्ष में प्रत्येक वर्ष नारद जयंती के रूप में मनाया जाता है। प्राकट्य के बाद नारदजी को ब्रह्मर्षि का प्रतिष्ठित पद भी प्राप्त हुआ। नारद जी भगवान श्रीहरि विष्णु के परम् भक्त हैं... और श्रीहरि विष्णु को भी नारद जी अत्यंत प्रिय हैं।देवर्षि नारदश्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराण, व्याकरण, वेद, वेदांग, संगीत, खगोल, भूगोल, ज्योतिष एवं योग जैसे अनेक विधाओं एवं शास्त्रों के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने भक्तों को सन्मार्ग पर लाने के उद्देश्य से सदा ही उपदेशित किया। ऐसा माना जाता है कि उनके संपूर्ण उपदेशों का सार 'सर्वदा सर्वभावेन निश्चिन्तैः भगवानेव भजनीयः' में निहित है, जिसका तात्पर्य यह है कि सर्वदा सर्वभाव से निश्चिंत होकर केवल भगवान का ही ध्यान करना चाहिए। देवर्षि नारद को जीवन में अनेक बार शाप भोगना पड़ा था। उनके आजीवन अविवाहित रहने का कारण भी वस्तुतः एक शाप ही था, जो उनके ही मानस पिता ब्रह्मा जी ने दिया था।

शास्त्रों के अनुसार ब्रह्माजी ने विवाह के योग्य होने के बाद एक बार नारद जी से विवाह करने एवं सृष्टि के कार्यों में भाग लेने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने अपने पिता की आज्ञा का पालन करने से मना कर दिया। उसके बाद क्रोधवश ब्रह्माजी ने देवर्षि नारद को आजीवन अविवाहित रहने का शाप दे दिया। इसके अतिरिक्त एक बार प्रजापति दक्ष ने भी उन्हें शाप दिया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार राजा दक्ष को पत्नी आसक्ति से 10 हजार पुत्र हुए, लेकिन उनमें से किसी ने भी पिता की इच्छानुसार राज-पाट संभालने में रुचि नहीं दिखाई, क्योंकि नारद जी ने उन सभी को वैराग्य की शिक्षा देकर मोक्ष की राह पर चलने के लिए प्रेरित कर दिया था। उसके बाद प्रजापति दक्ष ने पंचजनी सेविवाह किया, जिससे उनके पुनः एक हजार पुत्र हुए। नारद जी ने दक्ष के उन पुत्रों को भी सभी प्रकार के मोह-मायादि से दूर रहने की शिक्षा देकर मोक्षमार्गी बना दिया था। तत्पश्चात् क्रोधित होकर प्रजापति दक्ष ने देवर्षि नारद को शाप दे दिया था कि वे एक स्थान पर अधिक समय तक टिकने के बजाएसदा-सर्वदा इधर-उधर भ्रमण करते रहेंगे। यही कारण है कि नारद जी सदा विचरण करते रहते हैं।

लोकतंत्र का महापर्व

विश्वास का, विषय का भारत का पहला आम चुनाव

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

लोकतंत्र,जनतंत्र,प्रजातंत्र, लोकशाही और जम्हूरियत ये सभी शब्द लोकतंत्र के समानार्थी है और हम सभी इन शब्दों का प्रयोग करते रहते हैं । ईसा से 422 वर्ष पूर्व,यूनानी दार्शनिक वलीआन ने लोकतंत्र को परिभाषित करते हुए कहा था कि 'लोकतंत्र वह होगा जो जनता का हो,जनता के द्वारा हो तथा जनता के लिए हो'। इन्हीं शब्दों को आधुनिक युग में अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने दोहराया था । 'जनता का जनता के लिए जनता के द्वारा किया जाने वाला शासन'। हम सभी ने लोकतंत्र की इस परिभाषा को पढ़ा,लिखा और याद किया है । लेकिन क्या हमने लोकतंत्र के निहितार्थ को आत्मसात कर लिया है ? इस सवाल का उत्तर वर्तमान समय में हम सभी के लिए अत्यंत आवश्यक है । भारतीय लोकतंत्र मध्यमार्गी प्रवृत्तियों से संपन्न उदारतावाद की श्रेणी में आता है । भारतीय लोकतंत्र का यह मॉडल दो चुनावों की अवधि में होने वाली एक खास तरह की राजनीति से संचालित होता है । इस बीच के दौर में विभिन्न हितों के प्रतिनिधि संगठन दबाव और तालमेल के जरिये राजकीय राजनीति को अपने पक्ष में मोड़ने की कोशिश करते हैं । इस प्रणाली को अलग अलग विमर्शों जैसे औपनिवेशिक, राष्ट्रवादी,सामाजिक लोकतंत्र, हिंदुत्ववादी, कम्युनिस्ट और गांधी से प्रभावित विमर्श के जरिये भी समझने का प्रयास किया गया है । प्रारंभ में पांचों विमर्श मानते थे कि जातियों को मिटाये बिना भारतीय लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता है। बहरहाल लोकतंत्र को, लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बचाए और बनाए रखने में आम चुनावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान में समय में जारी लोकसभा चुनाव 2024 की चर्चा समूचे भारत में जोर शोर से हो रही है । 2024 के लोकसभा चुनाव को लेकर कई अटकलें और आशंकाएँ हर एक व्यक्ति के द्वारा एक गम्भीर चुनावी विश्लेषक के तौर व्यक्त की जा रही है और उनमें उतनी ही विविधता है जितनी विविधता हमारे देश में है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया घराने के बड़े-बड़े न्यूज़ चैनलों पर सीटों के बंटवारे और उम्मीदवारों के चयन को लेकर बहस जारी है तो कहीं चैनलों पर चुनाव के पूर्व ही रुझानों के आधार पर नतीजे निकाले जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त चुनावी विश्लेषक परिस्थितिजन्य विश्लेषण कर रहे हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव को लोकतंत्र का महापर्व भी कहा जा रहा है। किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए चुनाव की प्रक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत का पहला आम चुनाव एक विश्वास का विषय था। एक नया - नया स्वतंत्र हुआ देश सार्वभौम मताधिकार के तहत सीधे तौर पर अपने हुक्मरानों को चुनने जा रहा था। भारत ने पश्चिमी देशों की भेदभाव परक राह न अपनाते हुए बिना भेदभाव के सभी जनों को मताधिकार प्रदान किया । जबकि पश्चिम में कामगारों और महिलाओं ने अपने अधिकारों के लिए लंबा संघर्ष किया है । भारत का पहला आम चुनाव 1952 में संपन्न कराया गया । वो भी ऐसे समय में जब जनता इस चुनावी प्रक्रिया से पूरी तरह अनभिज्ञ थी । भारत ने स्वाधीन होने के दो वर्षों के बाद ही चुनाव आयोग का गठन कर दिया था । मार्च 1950 में सुकुमार सेन को मुख्य चुनाव आयुक्त बनाया गया । इसके अगले माह जनप्रतिनिधि कानून संसद में पारित कर दिया गया । इस कानून को पेश करते हुए संसद में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने यह उम्मीद जताई थी कि वर्ष 1951 के बसंत तक चुनाव करवा लिए जाएंगे । नेहरू इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया को जल्द से जल्द संपन्न करना चाहते थे लेकिन सुकुमार सेन के लिए भारत जैसे विशाल और विविधता से भरे हुए देश में यह कार्य करवाना आसान नहीं था । सुकुमार सेन ने प्रधानमंत्री नेहरू से कुछ दिन इंतजार करने के लिए कहा । सुकुमार सेन का जन्म 1899 में हुआ था । उनकी पढ़ाई प्रेसिडेंसी कॉलेज और लंदन यूनिवर्सिटी से हुई थी । वे लंदन यूनिवर्सिटी के गोल्ड मेडलिस्ट भी थे । 1921 में उन्होंने इंडियन सिविल सर्विस जॉइन कर ली और कई जिलों में वे न्यायाधीश भी रहे । बाद में वे पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव भी बने जहां से उन्हें प्रतिनियुक्ति पर मुख्य चुनाव आयुक्त बनाकर भेजा गया । सुकुमार सेन ने कोई भी संस्मरण या दस्तावेज अपने पीछे नहीं छोड़ा जिससे हम उनके बारे में और अधिक जान सकें । पहले आम चुनाव में मतदाताओं की संख्या 17 करोड़ 60 लाख थी । 21 वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ग के 85 फीसदी लोग न तो पढ़ सकते थे और न लिख सकते थे उनका पंजीकरण करवाना तो महज पहला कदम था । असल समस्या अधिकांश अशिक्षित मतदाताओं के लिए पार्टी प्रतीक चिन्ह, मतदानपत्र और मतपेटी किस तरह की बनाई जाए यह थी । इसके अतिरिक्त मतदाता केंद्र और मतदान अधिकारी की नियुक्ति भी करनी थी । सुकुमार सेन की समस्याओं को समझने के लिए आंकड़े हमारी मदद कर सकते हैं । 4500 सीटों पर चुनाव होने थे जिनमें करीब 500 संसद के लिए और शेष प्रांतीय विधानसभाओं के लिए थे । पहले आम सभा चुनाव के लिए 224000 मतदान केंद्र बनाए गए और वहां बीस लाख लोहे की मतपेटियां भेजी गई । इन पेटियों को बनाने में 8200 टन इस्पात खर्च हुआ । 16500 क्लर्क बहाल किए गए ताकि मतदाता सूची को क्षेत्रवार ढंग से टाईप किया जा सके और उसका मिलान किया जा सके । मतदान पत्रों को छापने में करीब 380000 कागज रिम का प्रयोग किया गया । चुनाव प्रक्रिया को सुचारू रूप से संपादित करने के लिए 56000 पीठासीन अधिकारियों का चयन किया गया और इनकी सहायता के लिए 280000 सहायक बहाल किए गए साथ ही मतदाता केंद्र की सुरक्षा, हिंसा और केंद्रों पर गड़बड़ियां को रोकने के लिए 224000 पुलिस जवानों को बहाल किया गया । पहले आम सभा चुनाव में हिस्सा ले रहे मतदाता लगभग दस लाख वर्गमील में फैले हुए थे । चुनाव का क्षेत्र विशालता, विविधताओं और जटिलताओं से भरा हुआ था । सुदूरवर्ती जिलों में पहले चुनाव करवाएं जाने थे । कई सुदूर पहाड़ी गांव के मामले में आनन फानन में नदी पर पुल का निर्माण करवाया गया । हिंद महासागर के किसी छोटे से द्वीप पर चुनाव करवाने के लिए स्टीमरों नावों से मतपत्रों को मतदान केंद्रों पर पहुंचाया गया। भौगोलिक समस्याओं के साथ सामाजिक समस्याएं भी थी । मतदाता सूची में नाम लिखा जाना आवश्यक था और उत्तर भारत की महिलाएं अपना नाम लिखवाने में हिचकिचा रही थीं। इसकी जगह वे पत्नी और मां के रूप में अपना नाम को दर्ज करना चाह रही थीं ।

सुकुमार सेन इस अनोखी और बेतुकी परंपरा को देखकर झुंझला उठे थे। उन्होंने अपने अधिकारियों को निर्देश दिया कि इस तरह के मतदाताओं का ब्यौरा लिखने की जगह कड़ाई से मतदाता का नाम दर्ज करें । इस प्रक्रिया में कम से कम 28 लाख महिलाओं का नाम मतदाता सूची से काट दिया गया। महिलाओं के नाम काटे जाने से हुए उत्पन्न हंगामे को सेन ने अच्छा ही माना क्योंकि इससे अगले चुनावों के पहले तक इस पूर्वाग्रह से मुक्त होने में मदद मिली और इसके बाद महिलाओं को उनके अपने नाम से मतदाता सूची में दर्ज कर लिया गया । चुनाव चिन्हों के प्रतीकों के निर्धारण में आमलोगों के दैनिक जीवन से संबंधित चीजों को इनमें समाहित किया गया। दो जोड़ी बैल,एक झोपड़ी, हाथी,मिट्टी का लैंप को चुनाव चिन्ह के तौर पर मान्यता दी गई । इस चुनाव में बहुउद्देश्यीय मतपेटी का प्रयोग किया गया ताकि अशिक्षित मतदाता भी अपने मत का सही प्रयोग कर सके । फर्जी मतदान को रोकने के लिए भारतीय वैज्ञानिकों ने एक स्याही का आविष्कार किया था जिसे मतदाताओं की उंगली में लगा दिया जाता था और यह स्याही एक सप्ताह तक नहीं मिटती थी। स्याही की 389816 छोटी बोतलों का इस्तेमाल चुनाव में किया गया। चुनाव आयोग ने वर्ष भर लोगों को फिल्म और रेडियो के माध्यम से चुनाव की इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया से रूबरू करवाया था। तीन हजार सिनेमाघरों में मतदान की प्रक्रिया और मतदाताओं के कर्तव्यों पर एक डॉक्यूमेंट्री दिखाई जा रही थी। आल इंडिया रेडियो के द्वारा कई कार्यक्रमों के जरिए सूचनाएं प्रेषित की जा रही थी। इन माध्यमों से जनता को संविधान, वयस्क मताधिकार के उद्देश्य, मतदाता सूची की तैयारी और मतदान प्रक्रिया के बारे में बताया जा रहा था । हिमाचल प्रदेश की चिनी तहसील से आम चुनाव की शुरुआत हुई । 25 अक्टूबर 1951 में बौद्ध संप्रदाय के कुछ लोगों ने प्रथम भारतीय होने के नाते सबसे पहले अपना वोट डाला था । लेकिन भारत के पहले मतदाताओं को मतदान के परिणाम जानने के लिए महीनों इंतजार करना पड़ा था क्योंकि पूरे देश में जनवरी और फरवरी 1952 तक चुनाव नहीं हो पाए थे । पहले आम चुनाव में सबसे अधिक मतदान केरल के कोट्टायम संसदीय क्षेत्र में दर्ज किया गया जहां 80.5 प्रतिशत मतदाताओं ने मतदान में हिस्सा लिया था । जबकि सबसे कम मतदान मध्यप्रदेश के शहडोल में 18 प्रतिशत दर्ज किया गया था । पूरे देश में अशिक्षा के बावजूद 60 फीसदी पंजीकृत मतदाताओं ने चुनाव में हिस्सा लिया था । लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के एक विद्वान ने अपने वर्णन में बताया कि किस प्रकार हिमाचल प्रदेश की एक नौजवान महिला मीलों चलकर अपनी बीमार मां के साथ मतदान केंद्र पर पहुंची थी । क्योंकि उसे इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपने बहुमूल्य वोट का महत्व पता था। उड़ीसा के आदिवासी अपने पारंपरिक हथियार तीर कमान के साथ मतदान करने मतदान केंद्र पर पहुंचे थे। इस अनोखे मतदान पर मुंबई के एक साप्ताहिक में लेख भी प्रकाशित हुआ था । मदुरई में एक 110 साल के बुजुर्ग ने मतदान किया जो अपने परपोतों के साथ मतदान केंद्र पर पहुंचे थे । इसी के साथ एक 95 वर्ष की बुजुर्ग महिला जिसे सुनाई भी नहीं देता था और उनकी पीठ पर बड़ा सा कूबड़ भी था । इन दोनों खबरों को भारतीय प्रेस ने प्रमुखता से प्रकाशित किया था । भारतीय लोकतंत्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि हैदराबाद में मतदान करने वाले सबसे पहले व्यक्ति वहां के निज़ाम खुद थे । टाइम्स ऑफ इंडिया के मुताबिक 'सर्द और ओस भरे मौसम के बावजूद भी औद्योगिक क्षेत्रों में मतदान शुरू होने से काफी पहले ही मतदाताओं की लाइन लग गई थी । मिजो समुदाय के 92000 लोग जिन्होंने शताब्दियों से किसी भी मुद्दे का निर्णय तीर कमान के बल पर ही किया था,वे पहली बार मतदान के माध्यम से अपना निर्णय सुनाने के लिए सामने आए थे । एक अमेरिकी महिला फोटोग्राफर जो हिमाचल प्रदेश में चुनाव की फोटोग्राफी कर रही थी वे मतदानकर्मियों की प्रतिबद्धता को देखकर काफी प्रभावित हुई। जिलाधिकारी के द्वारा आयोजित चुनाव ट्रेनिंग प्रोग्राम के लिए एक अधिकारी छह दिन की जटिल यात्रा तय कर पहुंचा था । वहीं दूसरा अधिकारी खच्चर की सवारी कर चार दिन में ट्रेनिंग सेंटर पर पहुंचा था। वे सुदूरवर्ती इलाकों में मतदान करवाने के लिए जूट की बड़ी - बड़ी थैलियों में मतपत्र,मतपेटी,पार्टी चिन्ह और मतदाता सूची लेकर गए थे । अमेरिकी फोटोग्राफर ने चुनावी प्रक्रिया देखने के लिए दुरूह पहाड़ी गांव भूटी का चयन किया था । पहले आम चुनाव में मुख्य चुनाव आयुक्त की यह टिप्पणी अत्यंत महत्वपूर्ण थी । सुकुमार सेन ने कहा कि 'आम लोग और राजनीतिक दलों के नेता कानून का सुचारू रूप से पालन कर रहे थे'। पहले आम चुनाव के लिए मतदान का कार्य फरवरी 1952 के आखरी सप्ताह में समाप्त हो गया था। साप्ताहिक ऑर्गेनाइजर ने यह उम्मीद जाहिर की थी कि 'जवाहरलाल नेहरू एक न एक दिन भारत में सार्वभौम मताधिकार की नाकामयाबी को जरूर स्वीकार करने पर मजबूर होंगे'। इसने दावा किया कि महात्मा गांधी ने भी 'लोकतंत्र की इस अत्यधिक खुराक' के खिलाफ चेतावनी दी थी और राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने भी 'अंधकार में इस लंबी छलांग से आगाह किया था'। पहले आम चुनाव की इस प्रक्रिया के लिए समाजशास्त्री डी.पी. मुखर्जी ने कहा कि 'भारतीय इतिहास में इस पहले महान लोकतांत्रिक प्रयोग का सबसे ज्यादा श्रेय उन लोगों को जाता है, जिन्होंने इस चुनाव को सुचारू रूप से संपन्न करवाया । एक ईमानदार प्रधानमंत्री के द्वारा यहां की नौकरशाही को जो काम सौंपा गया उसका उसने सचमुच ही सुचारू और ईमानदार तरीके से निर्वहन किया और अपनी अहमियत को जाहिर किया'।

अष्टापद बद्री विशाल तीर्थ यात्रा के लिए निकले श्रद्धालु

धार। दिगंबर जैन समाज धार के 31 सदस्य 12 दिवसीय अष्टापद बद्रीविशाल धार्मिक यात्रा के लिए समाज अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल के नेतृत्व में बुधवार को दिल्ली के लिए रवाना हुए। मीडिया प्रभारी पारस जैन गंगवाल ने बताया कि यात्रा दिल्ली से अष्टापद बद्रीविशाल की यात्रा बस द्वारा प्रारंभ होगी जो हरिद्वार ऋषिकेश होते हुए बद्री विशाल के साथ अष्टापद 27 तारीख को पहुंचेंगी वापसी में हस्तिनापुर के दर्शन लाभ लेते हुए दिल्ली आएंगे इस अवसर पर दिगंबर जैन समाज, युवा संगठन, महिला मंडल, महिला महासमिति के सदस्यो ने लाल बाग में यात्रियों का बहुमान कर मंगल यात्रा की शुभकामनाए दी।

इंडिया स्किल कॉम्पटिशन के विजेता हुए सम्मानित

बैतूल की बेटियों ने बढ़ाया गौरव

बैतूल। विगत दिनों दिल्ली में आयोजित इंडिया स्किल प्रतियोगिता का आयोजन मिनिस्ट्री ऑफ स्किल डेवलपमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप ने आयोजित किया। जिसमें विभिन्न विद्याओं की 900 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। जिसमें बैतूल जिले से विजेता खुशबू पंवार, फ्लोरिस्ट्री से कांस्य पदक और मिताली दियावार कॉस्टयूम डिजाइन में कांस्य पदक प्राप्त किया। इनकी उपलब्धि पर शासकीय आईटीआई बैतूल और एकलव्य महिला आईटीआई के द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम पॉलीटेक्निक प्राचार्य अरुण भदौरिया एवं उद्योग संघ के अध्यक्ष ब्रज आशीष पांडे, जिला शिक्षा अधिकारी डॉ.अनिल कुशवाह, जिला महाप्रबंधक उद्योग विभाग रोहित डॉवर, आईएमसी चेयरमैन पियुष तिवारी के आतिथ्य में और प्राचार्य केशव सातपुते की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन दिलीप सूर्यवंशी और विवेक शुक्ला ने एवं आभार महिला आईटीआई प्राचार्य रेवाशंकर पंडाग्रे ने व्यक्त किया।

अवैध उत्खनन करती जेसीबी मशीन पटवारी ने पकड़ी, फिर छोड़ दी

बैतूल। आमला के ग्राम पंचायत रमली मे बीते 21 मई मंगलवार को ग्रामीणों द्वारा ग्राम के शासकीय तालाब मे जैसीबी मशीन से मुरुम का अवैध उतखनन कर मुरुम परिवहन की जानकारी राजस्व विभाग को दी गई थी। जिस पर नायब तहसीलदार द्वारा मौके पर हलका पटवारी को मशीन जप्त करने पहुंचाया गया, पटवारी ने जेसीबी मशीन पकड़ी जरूर पर कुछ ही देर में छोड़ दी। जिससे राजस्व विभाग पर तरह तरह के आरोप लग रहे है ।

गौरतलब है की नगर से 2 किमी दूरी पर ग्राम रमली मे शासकीय तालाब का पानी गर्मी मे सुख गया है इसलिए ग्राम के कुछ भवन निर्माण करने वाले लोगो ने तालाब मे मुरुम खोदने जेसीबी किराए पर बुला ली। मुरुम खुदाई के लिए ग्राम पंचायत या तहसील से कोई अनुमति नही ली गई और जैसीबी से मुरुम का अवैध उतखनन करवाकर ट्रेक्टर ट्रालियों के माध्यम से आर्डर पर बेचने का काम शुरु कर दिया गया। मामले की शिकायत जागरूक ग्रामीणों ने पत्रकारों सहित राजस्व विभाग को दी जिस पर एस डी एम शैलेन्द्र बडोनिया द्वारा नायब तहसीलदार को जांच के निर्देश दिए। जनपद सीई ओ को भी ग्राम पंचायत मे बिना अनुमति उत्खनन होता पाए जाने पर मशीन जप्त करने की कारवाई के लिए कहा गया।

पटवारी ने की मशीन की तलाश- नायब तहसीलदार के निर्देश पर हल्का पटवारी अंशुल कापसे रमली पहुँचे, जहाँ अवैध उत्खनन हुआ वहा पंचनामा बनाया और मशीन की तलाश करना शुरू किया तो कुछ समय बाद वही जेसीबी मशीन एक किसान के खेत की नाली बनाते हुए पटवारी को मिल गई। मशीन चालक ने तालाब मे खुदाई करना कबूल भी कर लिया, लेकिन पटवारी द्वारा मशीन जप्त करने की कोई कार्यवाही नही की बल्कि जांच और समाधान ऑन स्पाट कर दिया। जिसके बाद जिन लोगो द्वारा उत्खनन की जानकारी दी गई थी वे प्रत्यक्षदर्शी स्वयं बता रहे की मशीन पर पटवारी ने जगह पर क्या जुर्माना लगाकर छोड़ा लेकिन इस मामले से रेत उत्खनन परिवहन के वाद राजस्व विभाग पर सवाल उठने लगे है। बीते 15 दिन पूर्व इन्ही पटवारी के हल्के मे भारी मात्रा मे तिलक सिसोदिया का अवैध रेत भंडारण का खनिज विभाग ने पकड़ा था और 2 लाख जुर्माना की कार्यवाही भी की। इधर जिस जगह 60 ट्राली से अधिक रेत स्टॉक थी जानकारी के बाद पटवारी अंशुल कापसे ने कोई कार्यवाही नही की जबकि रात मे उक्त स्टॉक से रेत हटा ली गई और इनके हल्के मे सबसे ज्यादा रेत का अवैध धंधा फल फुल रहा है ।

करवाएंगे जांच-एस.डी.एम- इस मामले एसडीएम शैलेन्द्र बडोनिया ने मामले की जांच करने की बात कही है उनका कहना है की जब जेसीबी मशीन उत्खनन मे लिप्त थी, तो जप्ती की कार्यवाही की जानी थी क्योंकि उनके द्वारा ही मामले में जांच के निर्देश दिये थे ।

कर्ज से परेशान युवक ने फांसी लगाकर की आत्महत्या, मिला सुसाइड नोट

बैतूल। कोतवाली थाना क्षेत्र के ग्राम भारत भारती में कर्ज से परेशान युवक ने फांसी लागकर आत्महत्या कर ली है। पाढर चौकी प्रभारी दिनेश कुमरे ने बताया कि बुधवार की रात की भारत- भारती में युगलकिशोर पिता चिंतामन खपरिये उम्र 30 वर्ष ने कमरे में रस्सी का फंदा बनाकर फाँसी लागकर आत्महत्या की है। मृतक के पास सुसाइड नोट मिला है। सुसाइड नोट में कर्ज से परेशान होकर आत्महत्या करने की बात कही है। यहां भी लिखा है कि वह कर्ज से बहुत परेशान हो गया और वह किसी को परेशान नही करना चाहता है। कर्ज से परेशान होकर फाँसी लगाकर आत्महत्या कर रहा हूं। मृतक का गुरुवार को जिला अस्पताल में पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौप दिया है। पुलिस आत्महत्या मामले की जांच में जुटी है।

गौनापुर वाटर पार्क में पुलिस की छापामार कार्रवाई

महाराष्ट्र की 11 महिलाओं सहित 45 लोगों को पुलिस ने लिया हिरासत में, मामला दर्ज

संजय द्विवेदी, बैतूल/ असलम अहमद मुलताई। मध्यप्रदेश महाराष्ट्र की सीमा से लगे मुलताई क्षेत्र में प्रभात पट्टन चौकी के आगे गौनापुर के नेचर्स प्राइड वाटर पार्क एंड रिसोर्ट पर बीती बुधवार रात्रि लगभग 1 बजे मुलताई और बैतूल जिले के अन्य थानों की पुलिस ने छापामार कार्रवाई करते हुए 34 पुरुषों और नागपुर की 11 महिलाओं को अवैध रूप से शराब के साथ पार्टी करते हुए पकड़ा। पुलिस ने छापामार कार्रवाई करते हुए अनैतिक गतिविधियों में शामिल मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र के 45 महिला-पुरुषों को हिरासत में लेकर इनके विरुद्ध अपराध कायम किया है। पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्छल एन झारिया ने उक्त मामले में जानकारी देते हुए बताया कि छापामार कार्रवाई में पकड़े लोगों में 11 महिलाएं भी शामिल है। जिनके खिलाफ भी कार्रवाई की गई है। 11 महिलाओं में सभी बालिग है और मामला विवेचना में है, और रिसोर्ट मालिक से लेकर सभी पर उचित कार्रवाई जारी है।

इधर पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार मुखबिर की सूचना मिलने पर ग्राम गौनापुर के पास बने वाटर फाल एण्ड रिसोर्ट में रेड कार्यवाही उपरांत शराब के नशे मे मदमस्त मिले शराब पीकर पार्टी कर रहे लोगों का कृत्य धारा 36 (बी) आबकारी अधिनियम के तहत पाया जाने से मौके पर धारा 41-ए सी.आर. पी.सी. के अंतर्गत सूचना पत्र दिये गये तथा मैनेजर अमित मुडे द्वारा बिना लाइसेंस के अवैध रूप से शराब संग्रहण एवं पिलाये जाने का कृत्य धारा 34(1), 36 (ए) आबकारी अधिनियम के अंतर्गत पाया जाने से उक्त धाराओं के अंतर्गत पंजीबद्ध किया तथा रात्रि 10.00 बजे के बाद भी म्यूजिक सिस्टम पर तीव्रता से साउंड बजाने से संचालक अमित मुंडे का कृत्य कोलाहल अधिनियम की धारा 7/15 के अंतर्गत पाये जाने से म्यूजिक सिस्टम को जप्ती पंचनामा तैयार किया गया एवं आरोपी अमित मुडे को धारा 41-ए सी.आर.पी.सी. के तहत सूचना नोटीस दिया गया।अवैध शराब के संग्रहण एवं पिलायी जाने के संबंध में आबकारी अधिनियम की धारा 34 (1), 36 (ए), 36 (बी) कोलाहल अधिनियम की धारा 7/15 के अंतर्गत पाया जाने से पृथक से वापसी उपरांत अपराध पंजीबध्द किये जा रहे है।

नाचने के लिए नागपुर से बुलाई गई थी महिलाएं - घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार पुलिस को सूचना प्राप्त हुई कि नैचर्स प्राइड वाटर पार्क एंड रिसोर्ट प्रभात पट्टन चौकी के आगे में अवैध रूप से शराब एवं नाच गाने की पार्टी चल रही है जिसमें कुछ महिलाएं भी शामिल है। उपरोक्त सूचना वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराकर कार्यवाही हेतु थाना प्रभारी आमला व थाना प्रभारी आठनेर जो कि फोर्स के साथ उस समय हाईवे पर भ्रमण में थे को सूचना से अवगत कराकर मुलताई बुलवाकर विवेचना किट, स्टेशनरी, टर्च, कैमरा आदि लेकर प्राइड वाटर पार्क एंड रिसोर्ट पहुंचकर घेराबंदी कर देखा तो पाया कि उपरोक्त अनुसार पुरूष एवं महिला म्युजिक सिस्टम की तेज आवाज में रात्रि 11.45 बजे के करीब समय होने के बावजूद शराब के नशे में धुत होकर नृत्य कर रहे थे तथा कुछ व्यक्ति व महिलाऐ हाथो में गिलास लिये तथा कुछ व्यक्ति व महिला टेबल पर गिलास रखकर बोतले से उड़ेलकर शराब का सेवन कर रहे थे। यह कि पार्टी बद कराकर पूछताछ की तो बताया कि उपरोक्त सभी पुख्य पांढुर्णा एवं आस-पास के रहने वाले है तथा महिलाऐ नाचने के लिये नागपुर से बुलाई गई है।पूछताछ करने पर नैचर्स प्राइड वाटर पार्क एण्ड रिसोर्ट के मैनेजर अमित मुडे के माध्यम से बुकिंग कर अवैध शराब पार्टी करने वाले एवं कर्मचारियो द्वारा संचालित किया जाना बताया गया, मौके पर मिली अवैध शराब, शराब की खाली बोतले, काँच व डिस्पोजल गिलास, पानी की बोतले मौके पर समक्ष साक्षीगण विधिवत जप्ती पंचनामा बनाकर जब्त की गई ।

परदे के पीछे पांढुर्णा का बड़ा डिस्ट्रीब्यूटर- प्राप्त जानकारी के अनुसार यह पार्टी पांढुर्णा निवासी खाद एवं बीज के एक बड़े डिस्ट्रीब्यूटर की ओर से अरेंज की गई थी। इसलिए पकडाए आरोपियों में 20 से अधिक पुरुष आरोपी पांढुर्णा नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र में खाद बीज की खरीदी एवं बिक्री से जुडे है। सिर्फ 3 आरोपी महाराष्ट्र के वरूड क्षेत्र के है, शेष सौंसर तहसील के है। अपना असली नकली माल खपाने हेतु ललचाने के उद्देश्य से इन 34 खाद बीज क्रेताओं को वाटर पार्क में बुलाकर उनके सामने शराब की नदियां बहाई गई, नागपुर से महिलाओं को बुलाकर उन्हें विक्रेताओं के साथ शराब पिलाने एवं नचवाने के पीछे पांढुर्णा के एक बड़े खाद बीज के डिस्ट्रीब्यूटर की प्रमुख भूमिका रही है। लेकिन आरोपियों में शराब पार्टी के आयोजक पांढुर्णा के डिस्ट्रीब्यूटर का नाम नहीं है।

शराब, कांच के गिलास एवं डिस्पोजल जब्त- मुलताई पुलिस ने पुरुषों एवं नागपुर से बुलाई गई महिलाओं की चल रही शराब एवं डांस पार्टी के मौके पर अवैध शराब, शराब की खाली बोतलें, कांच एवं डिस्पोजल गिलास और पानी की बोतलों का पंचनामा बनाकर जब्त किया। शराब और डांस पार्टी कर रहे 34 पुरुषों एवं 11 महिलाओं को शराब के नशे में मदमस्त होकर पार्टी करने पर धारा 36 (बी) आबकारी अधिनियम के तहत मौके पर धारा 41 एसीआरपीसी के अंतर्गत सूचना पत्र दिए गए।

कार्रवाई में शामिल पुलिस टीम- उक्त वाटर पार्क पर की गई छापामार कारवाई के दौरान थाना प्रभारी राजेश सातनकर, एसआय सुनील सरेयाम, एसआय छत्रपाल धुर्वे, एएसआय श्रीराम मांडवी, आर. पुष्पा धुर्वे, प्रआर सोनू ठाकुर, आर मोनिका तिवारी, आर नरेंद्र कुशवाह, आर सत्येंद्र पाल, आर चंद्रकांत, आर विवेक चौरे तथा चालक आर सेवाराम पवार शामिल थे।

खड़े ट्राले में पीछे से जा घुसी कार, एक की मौत, पांच घायल, ट्रक चालकों ने किया चक्काजाम

बैतूल/ मुलताई। नागपुर नेशनल हाईवे 47 पर ग्राम कोल्हया के पास आज गुरुवार सुबह अचानक से एक कार सड़क किनारे खड़े ट्राले में पीछे से जाकर घुस गई। जिसके चलते ट्राले में ग्रीसिंग कर रहा एक व्यक्ति एवं ट्राला चालक गंभीर रूप से घायल हो गए। कुछ देर बाद चालक ने वहीं दम तोड़ दिया। जबकि कार में सवार चार लोग घायल हो गए। वहीं कार चालक हादसे के बाद मौका पाकर फरार हो गया। प्राप्त जानकारी अनुसार ग्राम कौड़िया चिचोली निवासी नंदलाल पुत्र सालक राम उम्र 50 वर्ष अपने बेटे दीपक, बहु शिवकली और दोस्त निर्भय पुत्र सुखदेव के साथ इलाज कराने

के लिए किराए की कार करके नागपुर जा रहे थे। तभी अचानक कोल्हिया के पास उनकी कार एक ट्राले से जा टकराई। हालांकि जब हादसा हुआ तब वह सभी लोग सो रहे थे। उन्हें इस संबंध में नहीं पता कि हादसा कैसे हुआ। वहीं हादसे के बाद मौके से गुजर रही एनएचएआई की एंबुलेंस को रोककर घायलो को तत्काल अस्पताल पहुंचाने के लिए कहा गया। लेकिन एंबुलेंस चालक द्वारा शिफ्ट चेंज होना बताकर घायलों को अस्पताल नहीं पहुंचा। जिसके चलते मौके पर मौजूद ट्रक चालकों ने हंगामा कर नेशनल हाईवे 47 पर अपने ट्रक आड़े कर दिए और चक्का जाम कर दिया। स्थिति को देखते हुए मौके पर तत्काल ही पुलिस पहुंची और नेशनल हाईवे पर से ट्रकों को हटाया गया। दूसरे वाहन से घायल और मृतक को मुलताई नगर के सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया। फिलहाल ट्राला चालक मृतक का नाम पता नही चल पाया है। वही ट्राले में ग्रीसिंग कार्य कर रहा घायल मुलताई ग्राम देवरी का निवासी बताया जा रहा है।

मूंग उपार्जन के लिए ऑनलाइन पंजीयन 5 जून तक : कलेक्टर

5 क्विंटल प्रति एकड़ पैदावार का अनुमान

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने बताया कि बैतूल जिले में मूंग की बहुत अच्छी पैदावार होने का अनुमान है और किसानों को चाहिए कि वे केन्द्र सरकार की समर्थन मूल्य योजना के तहत समर्थन मूल्य पर अपनी उपज बेचकर योजना का लाभ लें। कृषि को प्रोत्साहित करने और किसानों को किसी प्रकार के नुकसान से बचाने के लिए मूंग के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपार्जन हेतु ऑनलाईन पंजीयन 5 जून तक कराया जा सकेगा। जिले के किसान सहकारी समितियों, एम.पी. ऑनलाइन कियोस्क, कॉमन सर्विस सेंटर, लोक सेवा केन्द्र एवं साइबर कैफे के माध्यम से पंजीयन करा सकते हैं।

उपसंचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास आनंद बडोनिया ने बताया कि इस वर्ष ग्रीष्म काल में कृषकों को मूंग की खेती के लिए लगातार प्रेरित किया गया है तथा विभाग से भी किसानों के खेतों में मूंग की नई किस्म शिखा के प्रदर्शन डलवाये गये। यह किस्म विशेष रोग से पीला मोजेक रोग के प्रति सहनशील होने से कृषकों को इस बार 5 क्विंटल प्रति एकड़ मूंग की उपज होने का अनुमान है।

उल्लेखनीय है कि जिले में गत वर्ष 2022-23 में 5100 हेक्टेयर में मूंग फसल की खेती गर्मी में हुई थी। परंतु इस वर्ष ग्रीष्म काल में कृषकों द्वारा 11 हजार 200 हेक्टेयर में मूंग की खेती की गई है। पंजीयन से उपार्जन कर कृषक एक एकड़ की उपज 5 क्विंटल से अनुमानित आधार पर मूंग खेती दर लगभग 16000 प्रति एकड़ होने से खेती पर व्यय को निकालकर कृषक 20 हजार रूपए प्राप्त कर सकते है।

कृषक मीरा ने 5-6 क्विंटल उपज होने की जताई संभावना- घोड़ाडोंगरी विकासखंड के ग्राम कोयलारी की महिला कृषक मीरा पति सुग्रीव ने खेत में मूंग की फसल बोई है। खेत पर प्रदर्शन का अवलोकन करने पहुंचे अधिकारियों

को कृषक मीरा ने बताया कि अभी हमारी फसल 45 दिन की हुई है। फसल में अच्छी फल्ली लगी है। जून माह में फसल की कटाई की जाएगी, जिसमें 5-6 क्विंटल उपज संभावित है।

ग्राम जुवाड़ी के कृषक मूंग की फसल से संतुष्ट- ग्राम जुवाड़ी के कृषक श्री मनोज तुमराम की फसल का अवलोकन किया गया। कृषक ने बताया कि उन्होंने पहली बार ग्रीष्मकाल में मूंग की फसल लगाई है। फसल देखकर कृषक संतुष्ट है। कृषि विभाग ने जिले के सभी मूंग कृषकों को 5 जून के पूर्व न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपज क्रय हेतु पंजीयन कराने की अपील की है।

मूंग उपार्जन के लिये पंजीयन 5 जून तक- जिले में आगामी 5 जून तक किसान मूंग फसल के उपार्जन के लिए पंजीयन करा सकते हैं। पंजीयन करने से पहले किसानों के आधार नंबर का वेरिफिकेशन लिंक मोबाइल नंबर पर प्राप्त ओटीपी या बायोमेट्रिक डिवाइस से किया जाना आवश्यक है। पंजीयन के समय किसानों को बैंक खाता नम्बर एवं आईएफएससी कोड की जानकारी भी उपलब्ध करानी होगी। किसानों का पंजीयन भू अभिलेख में दर्ज खाता एवं खसरे में दर्ज नाम का मिलान आधार कार्ड में दर्ज नाम से होने पर ही हो सकेगा। सिकमी एवं बटाईदार श्रेणी के किसानों का पंजीयन सहकारी समिति एवं सहकारी विपणन संस्था द्वारा संचालित पंजीयन केन्द्र पर किया जाएगा। पंजीयन केन्द्र पर किसान को आधार संबंधी दस्तावेज, आधार से पंजीकृत मोबाइल नंबर तथा सिकमी नामे की प्रति साथ में लेकर आना अनिवार्य है। पंजीयन हेतु किसानों से आधार नंबर से बैंक खाता एवं मोबाइल नंबर को लिंक कराकर उसे अपडेट रखने की अपील की है।

बुद्ध पूर्णिमा पर आज विवेकानंद घाट पर स्नान करने वाले स्नानार्थियों का रहा जमघट...

नर्मदापुरम। ऐसा माना जाता है कि बुद्ध पूर्णिमा पर भगवान बुद्ध के रूप में भगवान विष्णु का नौवें अवतार का जन्म हुआ था। इस दिन को 'वेसाक' उत्सव के रूप में मनाते हैं जो वैशाख शब्द का अपभ्रंश है। श्रद्धालु पवित्र नदियों में स्नान ध्यान कर पुण्य लाभ अर्जित करते हैं। बुद्ध पूर्णिमा पर आज नर्मदा के सभी घाटों पर स्नानार्थियों की भीड़ रही, ऐसे मौके पर अब मुख्य घाट पर स्नान ध्यान करने वालों की तरह ही स्नानार्थियों की भीड़ सदर बाजार स्थित विवेकानंद घाट पर एकत्रित होने लगी, यहां घाट पर लोगों द्वारा स्नान करना पसंद किया जाने लगा। मुख्य घाट की तरह यहां का घाट ज्यादा विकसित नहीं लेकिन उससे कुछ कम भी नहीं..! मुख्य घाट के भांति घाट पहुंच मार्ग के बीच यहां सलीकेदार और कतारबद्ध व्यवस्थित मंदिरों के श्रंखला बरबस श्रद्धालुओं को यहां आकृषित करती है। फिर मुख्य घाट के भांति बड़े क्षेत्रफल वाले विवेकानंद घाट पर सुबह से ही स्नानार्थियों का जमघट जमने लगा। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मुख्य घाट पर नाले से गिरते गंदे पानी की भांति यहां दूर-दूर तक पानी में कोई गंदगी दिखाई नहीं देती, नर्मदा के निर्मल साफ स्वच्छ पानी में स्नान कर श्रद्धालु यहां शांति महसूस करते हैं साथ ही स्नान के बाद भिक्षुओं को अन्नादि दान कर सुकून महसूस करते। बुद्धपूर्णिमा पर आज उदयाचल होते भगवान भुवन भास्कर के उदायचंल के दौरान स्नानार्थियों की भीड़ स्नान ध्यान और दान आदि करते हुए मनोहारी दृश्य...

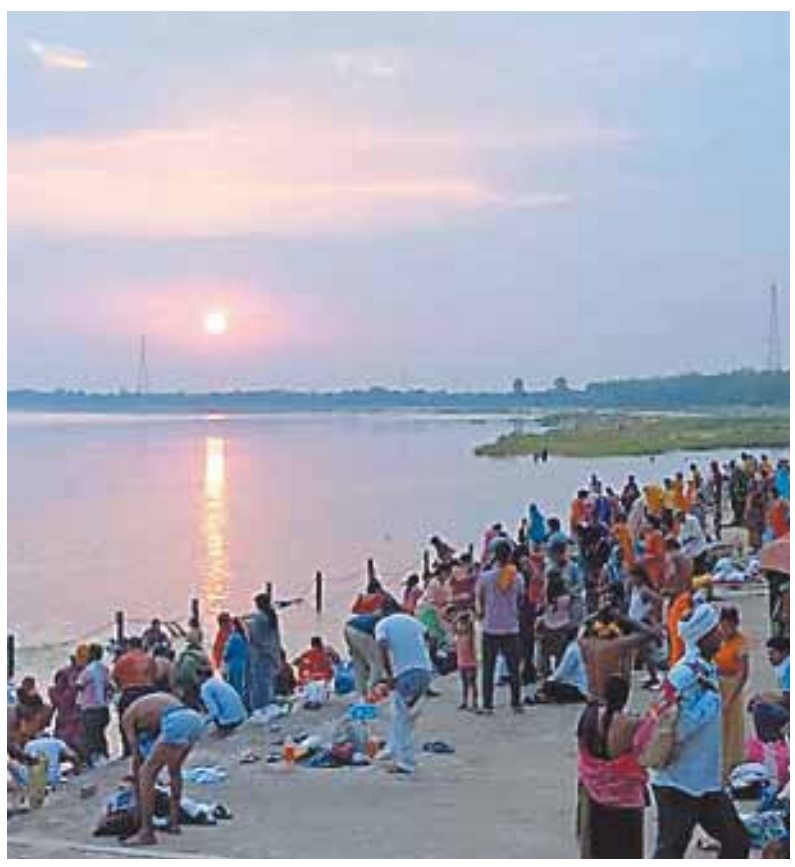

त्रिलोकनाथ शिव मंदिर से दो दानपेटियां चोरी, घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद

बैतूल। शहर के व्यस्ततम कॉलेज चौक स्थित त्रिलोकनाथ शिव मंदिर में अज्ञात चोरों ने दो दानपेटियां चोरी कर ली। चोरी की घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। चोरी की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और निरीक्षण किया। सीसीटीवी फूटेज के आधार पर पुलिस अज्ञात चोर की तलाश कर रही है। कॉलेज चौक स्थित प्रसिद्ध त्रिलोकनाथ शिव मंदिर में मंगलवार की रात को अज्ञात चोर ने मंदिर के मुख्य द्वार का ताला तोड़कर मंदिर में रखी दो दानपेटियां चोरी कर ली। चोरी की घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। फूटेज में एक व्यक्ति मंदिर में आते हुए दिखाई दे रहा है और वह मुख्य द्वारा के गेट के पास आकर बैठ जाता है और वह ताला तोड़ने लगता है। ताला तोड़ने के बाद मंदिर में रखी दोनों दान पेटियां लेकर चला जाता है। जब सुबह मंदिर समिति और अन्य लोग पूजा अर्चना के लिए पहुंचे तो मुख्य गेट का ताला टूटा देखकर सबसे होश उड़ गए। जब मंदिर के भीतर जाकर देखा तो छोटी और बड़ी दानपेटियां गायब थी।

चोर ने त्रिशूल से तोड़े मंदिर के ताले - चोर मंदिर के ताले तोड़ने के लिए त्रिशुल का इस्तेमाल किया है। मंदिर समिति के सदस्यों के मुताबिक चोर ने ताला तोड़ने के लिए त्रिशूल सागौन दरबार के शिव मंदिर से लाया है। जब कुछ लोगों ने देखा तो बताया कि त्रिलोक शिव मंदिर के सामने पड़ा त्रिशूल सागौन दरबार के शिव मंदिर का है। चोर ने सागौन दरबार से त्रिशुल लाकर त्रिलोकनाथ शिव मंदिर का ताला तोड़ा और दानपेटियां चोरी कर ली। मंदिर समिति के सदस्य कैलाश बुंदेले, मोनू चौहान ने बताया कि मंदिर की कई दिनों से दानपेटियां नहीं खोली थी। कोई बड़े आयोजन होने पर भी दानपेटियों को खोला जाता है। दानपेटियों में लगभग 6 से 7 हजार रूपए होने की संभावना है।

व्यस्ततम स्थान पर भी दे दिया चोरी को अंजाम- कॉलेज चौक शिव मंदिर में व्यस्त स्थान पर भी चोर ने चोरी की घटना को अंजाम दे दिया है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि चोरों के हौंसले कितने बुलंद है। यहां चौक 24 घंटे लोगों की आवाजाही बनी रहती है। इसके बाद भी चोर ने आसानी से चोरी कर ली। घटना से ऐसा लग रहा है कि चोरों को पुलिस का जरा भी भय नहीं है। शहर में चोरियां थमने का नाम नहीं ले रही है। पुलिस की रात्रि गश्त पर भी सवाल उठने लगे है। सीसीटीवी फूटेज के अनुसार अज्ञात चोर ने रात ढाई बजे से सुबह 4 बजे के बीच चोरी की घटना को अंजाम दिया है।

प्रो. विशम्भरनाथ मिश्र : लीक से हटकर फैसले लेने वाले महंत

जन्मनदिन पर विशेष

राजेन्द्र शर्मा

संकट मोचन मंदिर के वर्तमान महंत और आईआईटी बीएचयू के इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र अपनी आंखों में चमक, कहन में वजन और अद्भुत निर्णयात्मक क्षमता वाले ऐसे विराट व्यक्तित्व हैं, जिन्हें चुनाव के इस मौसम में हर राजनैतिक दल प्रभावित करना चाहता है। 'इंडिया गठबंधन' ने उन्हें वाराणसी से प्रत्याशी बनाने का आफर दिया तो तीन दिन पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी संकट मोचन मंदिर में जा पहुंचे पर प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र तो अपनी ही ढब के हैं, जिनका आज 58वां जन्मदिन है ।

काशी की परम्परा के प्रबल पैरोकार, एक पुत्र पुष्क्र मिश्र और एक बेटी सुमेधा के पिता, संकट मोचन मंदिर के महंत, अखाड़ा गोस्वामी तुलसीदास जी के संचालक, पर्यावरणविद् ,आईआईटी बीएचयू के इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र की हर रोज इतनी व्यस्तताएं हैं कि चौबीस घंटे कम पड़ते हैं, ऐसे में चुनावी राजनीति के लिए न वक्त है और ना उनकी कोई इच्छा।

प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र काशी और काशी की सनातन धर्म परम्परा, संगीत के संरक्षक महादेव भगवान शंकर की नगरी की कला संस्कृति परम्परा और आधुनिक ज्ञान विज्ञान के संगम के साथ साथ काशी के गंगा -जमुनी तहजीब के ब्रांड एंबेसडर हैं और काशी की परम्पराओं के प्रति समर्थित हैं । सरल, सहज स्वभाव के प्रो. मिश्र खांटी बनारसी हैं,सत्ता के शीर्ष दुर्गों की मर्यादित आलोचना करने में कोई झिझक न रखने के कायल प्रो. मिश्र बिना किसी लाग लपेट के अपनी बात कहने के लिए जाने जाते हैं। देश की प्रधानमंत्री के संसदीय क्षेत्र के मतदाता प्रो. मिश्र साफ साफ कहते हैं कि सरकारें हमारे सहयोग के लिये हैं, हम पर शासन के लिये नहीं।

संकट मोचन मंदिर के 13वें महंत के रुप में संकट मोचन संगीत समारोह के 90वें आयोजन से कमान संभालने वाले इस आयोजन को उन्होंने अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कराने में कोई कोई कसर नहीं छोड़ी है। जानकार लोग बताते हैं कि एक जमाने में रामपुर सहसवान घराने के उस्ताद राशिद खान ने बनारस घराने के कुछ कलाकारों के बीच घरानों को लेकर हुई कहा सुनी में बनारस में कभी न गाने का निर्णय उस्ताद राशिद खान ने लिया परन्तु यह प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र की दूरदर्शिता ही थी कि उन्होंने 91वें आयोजन के लिए उस्ताद राशिद खान को दूरभाष पर आमंत्रित किया तो उस्ताद राशिद खान

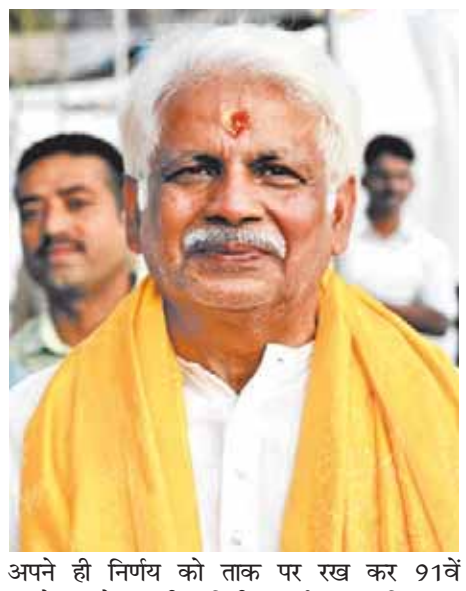

अपने ही निर्णय को ताक पर रख कर 91वें आयोजन में अपनी हाजिरी लगाई। महंत विशम्भर नाथ मिश्र की सोच, उनकी जिदद् और बिना किसी मलिनता के जीवन को जीने की शैली के मुरीद उस्ताद राशिद खान ने अपने बेटे अरमान खान की गंडाबंध की रस्म का आयोजन किया तो अपने एक मौलवी के साथ महंत विशम्भर नाथ मिश्र को भी पूरे सम्मान के साथ आमंत्रित किया। महंत विशम्भंर नाथ मिश्र की मौजूदगी में ही अरमान खान की गंडाबंध रस्म की अदायगी हुई। वर्ष 2014 से संकट मोचन संगीत समारोह में अपनी हाजिरी लगाने के सिलसिले को उस्तद राशिद खान ने अपने जीवन के अंतिम संकट मोचन संगीत समारोह वर्ष 2024 तक बरकरार रखा।

मंहत विश्वंभर नाथ मिश्र ने संकट मोचन संगीत समारोह को राष्ट्र की परिधि से भी बाहर निकालते हुए इस समारोह के द्वार पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान के कलाकारों के लिये भी खोलने का साहसिक निर्णय लिया। इस कड़ी की शुरुआत पाकिस्तान के गजल गायक गुलाम अली ने की थी।

अप्रैल 2020 में दुनिया भर पर कोविड 19 का कहर मंडरा रहा था। अप्रैल में ही संकट मोचन संगीत समारोह के 97वां संभावित परन्तु तीन, चार दिन, सात दिन की अवधि के लिए लॉक डाउन के लिए बढ़ती अवधि संकट मोचन संगीत समारोह के कर्ताधर्ता महंत प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र के जीवन का सबसे कठिनतम समय बन गयी थी। जिद्दी और लीक से हटकर फैसले करने के लिए ख्यात महंत विशम्भर नाथ मिश्र की रातों की नीदें गायब थी। उनकी चिंता थी कि उनके बाबा महंत अमरनाथ मिश्र ने 1923 को जिस बिरवे को रोपा था और 2012 तक उस बिरवे को उनके पिता ने बहुत परिश्रम से सहेजते हुए उसे राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर संकट मोचन संगीत समारोह के रुप में प्रतिष्ठित कर दिया था, उसकी अनवरत 96 साल की परम्परा को लॉक डाउन के इस अंधकार भरे समय में टूटने से कैसे रोका गया। ऐसे अंधेरे समय में भी महंत प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र अविचलित नहीं हुए। उस समय उन्होनें अपने आप को ही चुनौती देकर पूछा था कि 97वां संकट मोचन संगीत समारोह गर नहीं हुआ तो मैं काहे का महंत विशम्भर नाथ मिश्र। खुद को दी गयी चुनौती में हर बार की तरह महंत विशम्भर नाथ मिश्र विजयी हुए और संकट मोचन संगीत समारोह का 97वां आयोजन डिजीटली आयोजित किया गया।

शास्त्रीय संगीत के नये कलाकारों को ढूंढने, उन्हें प्रोत्साहित करने का दायित्व संकट मोचन संगीत समारोह का ही मानते हैं। एक सौ एक वें आयोजन में ही महंत प्रो. विशम्भर नाथ मिश्र ने गुंदेचा बंधुओं की प्रस्तुति में स्वयं पखावज बजाकर श्रोताओं को चौका दिया। प्रो. मिश्र अव्वल दर्जे के जिद्दी हैं। उनके साहसिक फैसलों की कई बार आलोचना भी हुई परन्तु दृढ़ संकल्पित प्रो. विशम्भर नाथ इन आलोचना के बारे मे कहते हैं कि कतिपय लोगों की सुनेगें तो काम नही कर पाएंगे।

समर्पण निधि संग्रह अभियान में प्रत्येक कार्यकर्ता का ज्यादा से ज्यादा योगदान हो: दीपक शर्मा अभियान प्रभारी

समर्पण निधि संग्रह अभियान का जिले के प्रत्येक मंडल में शुभारंभ हुआ

धार। समर्पण निधि संग्रह अभियान को कार्यकर्ता मेहनत से करेंगे पूरा हमें पूरा विश्वास है कि कार्यकर्ताओं के परिश्रम के बल पर जिले में 23 मई से 25 मई तक चलने वाला समर्पण निधि का विशेष अभियान जिले के प्रत्येक मंडल में चलाया जा रहा है। भारतीय जनता पार्टी अन्य राजनीतिक दलों से इसलिए अलग है, क्योंकि विचार और संगठन के विस्तार के लिए हमारे कार्यकर्ता ही रीति - नीति तय करते हैं। पार्टी जो भी अभियान प्रारंभ करती है उसे सफल बनाने में पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता सामूहिकता के साथ पूरी जी-जान से जुट जाता है। कार्यकर्ताओं की इसी सामूहिक शक्ति के आधार पर समर्पण निधि संग्रह अभियान सफल होगा। यह बात भाजपा के पूर्व जिला महामंत्री श्याम नायक ने बुधवार को भाजपा जिला कार्यालय में नगर मंडल की कामकाजी बैठक में कही। बैठक शुभारंभ भारतमाता पितृ पुरुष पं. दीनदयाल उपाध्याय व डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन के साथ आरंभ हुआ।

बैठक में वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ शरद विजयवर्गीय, पूर्व जिला महामंत्री श्याम नायक,

जिला उपाध्यक्ष विश्वास पांडे, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, आजीवन सहयोग निधि जिला प्रभारी दीपक शर्मा, आजीवन सहयोग निधि विधानसभा सह प्रभारी मोहित तातेड़, भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष विपिन राठौर, मनीष प्रधान,कैलाश पिपलोदिया मंचासीन रहे।

अभियान जिला प्रभारी दीपक शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता आधारित संगठन है हम सभी कार्यकर्ताओं के बल पर और समर्पण भाव से ही आज भाजपा देश और दुनिया का की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है, आजीवन सहयोग निधि हम सभी कार्यकर्ताओं का वर्ष में एक बार अर्थ रूपी समर्पण है । समर्पण निधि संग्रह अभियान में प्रत्येक कार्यकर्ता का ज्यादा से ज्यादा योगदान हो ओर संगठन के हर एक कार्यकर्ता के मन में यह भाव हो की यह मेरी पार्टी हैं।

भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष विपिन राठौर ने कहा कि हम सभी कार्यकर्ता तन मन के साथ-साथ धन से भी समर्पित होकर सहयोग करना आजीवन सहयोग निधि अभियान हैं उन्होंने आजीवन सहयोग निधि में सभी कार्यकर्ताओं की सहभागिता होकर अपने लक्ष्य को पूरा करने हेतु आग्रह किया ।

मंडल कामकाजी बैठक में मंडल महामंत्री राजेश डाबी , जयराज देवड़ा और सन्नी होड़ा सहित मंडल पदाधिकारी व राजेश हारोड़, राकेश दुर्गेश्वर, हुकुम लश्करी, सोनिया राठौर, गौरव जाट, अंकित भावसार, दीपेंद्र ठाकुर, आशुतोष विजयवर्गीय, देवेंद्र रावल, नमन रावल, लक्ष्मीनारायण नायक, सुरेश प्रजापत, नरेंद्र राठौर, देवांग पंवार, अजय राठौर, अतुल फकीरा, अमित शर्मा, अभय वसुनिया, दिनेश पटेल, नितिन चौहान, सोनू ठाकुर, प्रज्ञा ठाकुर, अनुसूईया वैष्णव, विष्णु राठौर, समीर बैग, शफीक जमा खान, कमलेश बिजवा, महेश कदम, प्रतिभा शर्मा, पंकज जाधव, हरीश आर्य, अनिता बौरासी, अनिल राठौर, शशिकांत भालेराव, अमरसिंह चावड़ा, कन्हैया ठाकुर आदि भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे ।

फ्लैक्स बिछाकर सोने को मजबूर थे पूर्व सैनिक अब मिला वृद्धाश्रम में आश्रय

धार। देश की सीमा पर दुश्मन से संघर्ष करने वाला सैनिक अब अपने घर के लिए संघर्षरत है। यह सत्य घटना सैनिक बिक्रम सिंह की है, हल्दानी नैनीताल के रहने वाले सैनिक 25 वर्ष पहले महूँ में अपनी सेवाएं देते थे। उसी दौरान इंडोरमा विजयनगर पिथमपुर में अपना छोटा सा मकान बना लिया। महू से ट्रांसफर होने व बेटी की शादी होने से मकान का सौदा ढाई लाख में पिगडम्बर निवासी मदन सिंह चौहान से कर लिया।

अनुपस्थिति का फायदा उठाकर मदन सिंह चौहान ने फर्जी रजिस्ट्री से मात्र 60 हजार देकर मकान पर बलपूर्वक कब्जा कर लिया व नोटरी में कीमत भी एक लाख बीस हजार कर दी। उक्त मकान मदन सिंह ने सुलावड निवासी चंदर सिंह को बाले बाले बेच दिया। बिक्रम सिंह के अनुसार उनके हस्ताक्षर भी फर्जी कर व गवाह भी 10 जून 99 को उन्हें बना दिया जबकि उन दिनों वे यहां थे ही नहीं वे अपने पैतृक गांव हल्द्वानी जिला नैनीताल थे। फर्जी रजिस्ट्री में पूर्व प्लाट विक्रयकर्ता दिनेश पिता जगन्नाथ वर्मा के साथ मिलकर धोखाधड़ी की है।

अपने हक के लिए संघर्षरत सैनिक बिक्रम सिंह ने पुलिस व स्थानीय प्रशासन आदि में कई शिकायते की। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, कलेक्टर आदि को गुहार लगाई, सब ने त्वरित कार्यवाही का आश्वासन दिया। बार बार नैनीताल से धार ना आने के कारण एक बैंग लेकर पूर्व सैनिक बिक्रम सिंह आजकल जिला विधिक प्राधिकरण कार्यालय धार आ गए। कई राते आफिस व बरामदे में फ्लैक्स पर सोकर काटने के बाद आखिरकार सचिव जिला विधिक जिला न्यायाधीश की मदद से उन्हें श्रद्धालय वृद्धाश्रम में आश्रम मिल गया। निःशुल्क सुविधाजनक आवास, बेहतर भोजन से बिक्रम सिंह को प्रारंभिक राहत मिली बस अब उनकी आंखों में अपने हक के मकान या शेष राशि का इंतजार है। जानकारी स्वयं बिक्रम सिंह पिता स्व गोविंद सिंह ने बताई।

बुद्ध पूर्णिमा पर भाजपा ने माल्यार्पण कर भगवान गौतम बुद्ध को याद किया

धार। भाजपा जिला कार्यालय में बुद्ध पूर्णिमा पर भगवान गौतम बुद्ध की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर भाजपा नेताओं ,अनुसूचित जाति मोर्चा पदाधिकारी ने उन्हें याद किया। इस दौरान जिला कार्यालय मंत्री जगदीश जाट, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, दीपक शर्मा ,अनुसूचित जाति मोर्चा जिला अध्यक्ष पूनम चंद फकीरा,हरीश आर्य अमन फकीरा सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने भगवान बुद्ध को याद किया। अनुसूचित जाति

मोर्चा जिला अध्यक्ष पूनम चंद फकीरा ने कहा कि गौतम बुद्ध, जिन्होंने सत्य की खोज में अपना राजसी जीवन त्याग दिया, विश्व को अहिंसा, करुणा और मध्यमार्ग का संदेश दिया। उनके द्वारा स्थापित बौद्ध धर्म ने अनेक लोगों को आंतरिक शांति और सच्चे ज्ञान की ओर मार्गदर्शित किया है। भगवान बुद्ध के उपदेशों में ध्यान, आत्मसंयम और दूसरों के प्रति दया का महत्व प्रतिपादित है। उनके जीवन से यह शिक्षा मिलती है कि सच्ची खुशी बाहरी सुखों में नहीं, बल्कि आत्मज्ञान और आत्मसंयम में है। आज के युवा गौतम बुद्ध से सीख सकते हैं कि अपने भीतर की शक्ति और करुणा को पहचानो, और सत्य की खोज में आगे बढ़ो।

लू- तापघात से बचाव संबंधी जानकारी

नरसिंहपुर। स्वास्थ्य विभाग ने आम नागरिकों को लू- तापघात से बचाव के लिए समसमायिक सलाह दी है। स्वास्थ्य विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार तेज बुखार के साथ मुंह का सूखना, चक्कर व उल्टी आना, कमजोरी के साथ शरीर में दर्द होना, शरीर का तापमान अधिक होने के बावजूद पसीने का न आना, सिर में भारीपन एवं दर्द का अनुभव होना, अधिक प्यास लगना व पेशाब कम आना, भूख कम लगना और बेहोश होना लू- तापघात के लक्षण है। इनके बचाव के लिए बहुत अनिवार्य हो तो घर से बाहर जाये, धूप में निकलने से पहले सिर एवं कानों को कपड़े से अच्छी तरह से ढक लें, पानी अधिक मात्रा में पिये, अधिक समय में धूप में न रहे, बच्चे, बुजुर्ग एवं बीमार व्यक्ति घर से कम निकले विशेषकर दोपहर 12 बजे से अपरान्ह 4 बजे के मध्य घर से बाहर न जाये, गर्मी के दौरान नरम, मुलायम, सूती हल्के ढीले- ढाले वस्त्र पहनें, धूप में चश्मा, छाता, टोपी एवं जूता पहनकर ही घर से बाहर निकले, अधिक पसीना आने की स्थिति में ओआरएस का घोल, लस्सी, मट्ठा एवं फलों का रसों का सेवन करें, गरिष्ठ एवं मसालेदार भोजन से बचें, यात्रा के समय पानी की बोतल, ओआरएस का पैकिट साथ में रखे। लू- तापघात के लक्षण दिखने पर हितग्राही को तत्काल नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र पर उपचार के लिये लावें।लू- तापघात से कृषक, वाहन चालक, यात्री, छात्र, खिलाड़ी या धूप में ज्यादा मेहनत व भ्रमण करने वाले व्यक्ति, मजदूर वर्ग, हाथ ठेले पर सब्जी बेचने वाले, पर्यटक, यातायात पुलिस आदि जनमानस पर अधिक प्रभाव पड़ सकता है।

पानी की समस्या को लेकर नगर पंचायत में फोड़े थे मटके

जुझारू कांग्रेस नेता पुष्पराजसिंह पटैल पर शासकीय कार्य में बाधा डालने का मामला दर्ज

हीरालाल गोलानी सोहागपुर

हमेशा की तरह इस बार भी पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष एवं 2023 में सोहागपुर विधानसभा प्रत्याशी रहे पुष्पराजसिंह पटैल पर पुलिस ने शासकीय कार्य में बाधा डालने को लेकर पुलिस ने मामला दर्ज किया है। उक्त मामला नगरपालिका अधिकारी जीएस राजपूत की रिपोर्ट पर श्री पटैल के साथ अंबेडकर वार्ड पार्षद पति एवं पूर्व पार्षद मोहन कहार पर भी उक्त प्रकरण दर्ज हुआ है। उल्लेखनीय है कल अंबेडकर वार्ड में पानी की समस्या को लेकर ब्लाक एवं नगर कांग्रेस के तत्वावधान में वार्ड की महिलाओं ने नगर के मध्य बहनें वाली पलकमती नदी जिसे साबरमती बनने की घोषणा हुई है। इस पलकमती नदी में घास उग आई है। वहीं नगर पंचायत के करीबन 12 गंदे नालों का बदबुदाकर पानी पलकमती नदी में सालों से गिरता है। इसी कारण कभी विकीपीडिया में सबसे सुंदर पलकमती नदी नाला बनाकर रह गई है। मंगलवार को इसी साबरमती बनने वाली नदी का गंदा पानी भरकर महिलाओं ने नगर पंचायत परिषद में पानी की समस्या को लेकर मटके फोड़ डालें। बड़े मजे की बात तो यह है कि इस आन्दोलन में पूर्व नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष संतोष मालवीय के अलावा कई पार्षद गण,कांग्रेस के कई पदाधिकारियों भी शामिल थे। लेकिन मात्र दो पर ही मामला दर्ज किया गया है। ज्ञातव्य है कि पुष्पराजसिंह पटैल क्षेत्र के ऐसे जुझारू नेता हैं जिसके आव्हान पर सैकड़ों किसान सड़कों पर उतर आते हैं। उल्लेखनीय एक बात यह भी है कि उनके

प्रत्येक आन्दोलन पर राजनैतिक विद्वैशता के कारण लगभग अभी तक लगभग 15 मामले दर्ज हो चुके हैं। प्रशासन भी श्री पटैल को अपना जनमत बढ़ाने एवं सुर्खियों में बने रहने के लिए बैठे बैठाए मुद्दे दे देती है। यह सब कुछ ही सालों से स्थानीय नौसखिया भाजपाइयों के इशारे पर होता है। इसी कारण सोहागपुर ब्लाक में भाजपा का गिराफ गिरता जा रहा है। वहीं पिपरिया में बिजली विभाग एवं किसान के मामले में भी आदिवासी एक्ट पर गिरफ्तार करके करीबन एक महीने की जेल भी हो चुकी है। लेकिन जैसे जैसे श्री पटैलअप पर राजनैतिक विद्वैशता का दबाव बढ़ते गया। वैसे वैसे श्री पटैल का जनमत भी निरंतर बढ़ता गया।इसी कारण श्री पटैल को 2023 में कांग्रेस ने सोहागपुर विधानसभा से प्रत्याशी घोषित किया था। जिसमें चुनाव में श्री पटैल 1762 मतों से पराजित हो गए थे।

विगत वर्षों पूर्व आन्दोलन में रुकना पड़ा था स्वर्गीय सरताजसिंह को

पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पराजसिंह पटैल जनमत बढ़ाने का मुद्दा हाथ से नहीं जाने देते।यही उनकी खासियत है। ऐसा ही वाकिया विगत वर्षो पूर्व ग्राम शोभापुर में किसानों की बिजली एवं खाद ,बीज की समस्याओं को किसान आन्दोलन किया था। जिसमें मटकुली जाते पूर्व सांसद स्वर्गीय सरताजसिंह भी जाम फंस गए थे। इस संवाददाता को याद है कि श्री पटैल ने किसानों की एक एक समस्याएं उसको सुनाई थी। उनकी प्रत्येक बात का सर्मथन स्वगीर्य सरताजसिंह ने किया था। उक्त छाया चित्र इस प्रतिनिधि के पास सुरक्षित है।

राजनैतिक विद्वैशता

पूर्व नपाध्यक्ष संतोष मालवीय ने बताया कि पुष्पराजसिंह पटैल पर राजनैतिक विद्वैशता के कारण शासकीय कार्य में बांधा डालने का मामला दर्ज किया गया है। वहीं पूर्व पार्षद मोहन कहार पर इसलिए केस दर्ज कराया गया है कि उनकी पार्षद पत्नी ने नगर पंचायत अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के विवादास्पद चुनाव को न्यायालय में चुनौती दी हुई है। जिसका मामला न्यायालय में लंबित है। जिसमें चुनाव आयोग के नियमों के विरुद्ध बगैर ब्लड रिलेशन के भाजपा नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने मतदान किया था।श्री मालवीय ने आरोप लगाया है कि श्री कहार पर एन केन तरीके से दबाव बनाया जाता है।

भीषण गर्मी में तरसते लोग

पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पराजसिंह पटैल ने सुबह सवेरे संवाददाता को बताया कि भीषण गर्मी में बूंद बूंद पानी को तरसते लोगों की मांग जनहित में उठना जुर्म है। तो मैं यह जुर्म बार बार करता रहूंगा। आपने आगे कहा कि अंबेडकर वार्ड से नर्मदा जल योजना का जल प्रदाय नगर के वार्डों में यहीं से पहुंचाया जाता है।नगर पंचायत परिषद की जल आपूर्ति टंकी अंबेडकर वार्ड में है। इस पानी की टंकी से प्रेशर के साथ जल प्रदाय होता है। लेकिन अंबेडकर वार्ड वासी पानी को तरसें यह कहां का इन्साफ है? मैंने ऐसा कोई कार्य नहीं किया। जिससे शासकीय कार्य में बाधा हो। यदि जल समस्या , बिजली की समस्या समाधान के लिए मांग करना शासकीय कार्य में बाधा है ।तो मैं गुनहगार हूं।

एनएसयूआई ने पुतला फूंककर ज्ञापन सौंपा

नरसिंहपुर। मध्यप्रदेश एनएसयूआई के प्रदेश अध्यक्ष आशुतोष चौकसे के आव्हान पर प्रदेश मे हुए नर्सिंग घोटाले की जांच कर रही एजेंसी मध्यप्रदेश सीबीआई जो लगातार संदेह के घेरे में है उसके अधिकारी एक के बाद एक रिश्वत लेते गिरफ्तार हो रहे हैं। इसे लेकर जिला एनएसयूआई के द्वारा विरोध प्रदर्शन करते हुए पुतला फूंककर ज्ञापन सोपा गया। ज्ञापन में मांग की गई है कि पूरे मध्य प्रदेश में ब्लैकलिस्टेड किए गए नर्सिंग कॉलेज जिन्हें मध्यप्रदेश सीबीआई के इन्ही भ्रस्ट अधिकारियों की सह पर क्लीन चिट दे दी गई है उनकी पुनः जांच दिल्ली सीबीआई द्वारा करवाई जाए क्योंकि यह सभी अधिकारी जो जांच के दौरान रिश्वत लेते पकड़े गए हैं इन्हीं के द्वारा ही ब्लैकलिस्टेड कॉलेज को क्लीन चिट देने मे मदद की गई थी इसलिए संपूर्ण मध्य प्रदेश के सभी नर्सिंग कॉलेज जो ब्लैकलिस्ट किये गए उनकी जांच पुन सीबीआई द्वारा कराई जाएसीबीआई द्वारा कराई । उक्त मौके पर जिला कांग्रेस अध्यक्ष नरेंद्र राजपूत, पूर्व विधायक सुनील जायसवाल, ब्लॉक अध्यक्ष अमित राय, नीलू राय , चंद्रप्रकाश यादव , सुनील श्रीवास्तव , गुड्डा सोनी , मिकी राय , अजय दुबे , मप्र एनएसयूआई सोशल मीडिया के चेयरमैन अंकुर बटरी , पूर्व जिला अध्यक्ष एनएसयूआई विवेक पटेल , मिलिंद साहू , अमित श्रीवास्तव, जितेंद्र लोधी , प्रियंक कहार, अनूप शुक्ला, सारांश यादव , सोहन जाट, अरबाज खान गोल्डी खान अभिषेक गुप्ता, अंकित पटेल, समीर खान, अमित श्रीवास्तव, आयुष गोस्वामी, हर्षवर्धन विश्वकर्मा के एसआई की कई पदाधिकारी कार्यकर्ता मौजूद थे।

म.प्र.में लू का अलर्ट

भोपाल सीजन में सबसे हॉट, 44.4 डिग्री पारा इंदौर ने की 8 साल के रिकॉर्ड की बराबरी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में गुरुवार को भी भीषण गर्मी का दौर जारी रहा। खासकर मालवा-निमाड़ और ग्वालियर-चंबल इलाके भट्टी की तरह तप रहे हैं। प्रदेश में गुना सबसे गर्म रहा। यहां रिकॉर्ड 46.6 डिग्री पारा दर्ज किया गया।

भोपाल में दिन का अधिकतम तापमान 44.4 डिग्री रहा। जो इस सीजन में सबसे ज्यादा है। वहीं इंदौर ने 8 साल पुराने रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। यहां दिन का तापमान 44.5 डिग्री पहुंच गया। 2016 में 19 मई के दिन इतना ही तापमान रिकॉर्ड किया गया था। शिवपुरी में गुरुवार को दिन का पारा 44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। लेकिन शाम करीब 6 बजे मौसम बदल गया। यहां तेज हवा के साथ बूंदाबांदी हुई।मौसम विभाग भोपाल के सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया, 24-25 मई से पूरे प्रदेश में तेज गर्मी रहेगी। भीषण लू का अलर्ट भी जारी किया है।

इससे पहले बुधवार को भी भीषण गर्मी रही। रतलाम में पारा 45 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। लगातार दूसरे दिन रतलाम प्रदेश में सबसे गर्म रहा।

वहीं, भोपाल और इंदौर सीजन के सबसे हॉट रहे। भोपाल में 44.4 डिग्री और इंदौर में टेम्प्रेचर 44.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। ग्वालियर में 43.7 डिग्री, उज्जैन में 43.8 डिग्री और जबलपुर में पारा 42 डिग्री रहा।

भीषण गर्मी के साथ आज आंधी-बारिश भी

मौसम विभाग ने भीषण गर्मी के अलावा बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट में आंधी-बारिश का अलर्ट भी जारी किया है।

इसलिए ऐसा मौसम

सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. सिंह ने बताया, राजस्थान के ऊपर चक्रवाती हवाओं का घेरा है। ट्रफ लाइन भी गुजर रही है। इसके चलते बंगाल और अरब सागर की खाड़ी से आ रही नमी बादल के रूप में सक्रिय है। साथ में दक्षिण-पश्चिम बंगाल की खाड़ी के हिस्से में निम्न दाब क्षेत्र है। इस वजह से भी गर्मी का असर बढ़ा हुआ है।

शिवराज सिंह के छोटे बेटे की सगाई

भोपाल के जैन परिवार की बेटी बनेगी पूर्व सीएम के घर की बहू

भोपाल (नप्र)। पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान के घर जल्द बहू आने वाली है। मंगलवार को उनके छोटे बेटे कुणाल सिंह चौहान की सगाई हुई है। जिसकी तस्वीरें गुरुवार को सामने आई है।

भोपाल के जाने माने डॉ. इंद्रमल जैन की पोती रिद्धि जैन से कुणाल का रिश्ता हुआ है। रिद्धि के पिता का नाम संदीप जैन है। कुणाल और रिद्धि साथ में पढ़े हैं।

सादे समारोह में हुई सगाई की रस्में- सगाई समारोह की तस्वीरें भी सामने आई हैं। जिसमें पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान के साथ उनकी पत्नी साधना सिंह चौहान और जैन परिवार के सदस्य नजर आ रहे हैं। बेहद सादे तरीके से सगाई की रस्में पूरी की हैं। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के 74 बंगला स्थित सरकारी आवास बी-8 के पीछे निशात कॉलोनी में उनकी होने वाली बहू का घर है।

बता दें कि शिवराज सिंह चौहान के दो बेटे हैं। बड़े बेटे का नाम कार्तिकेय है, जबकि छोटे बेटे का नाम कुणाल है। कुणाल राजनीति से दूर रहते हैं। जबकि बड़े बेटे कार्तिकेय चौहान अपने पिता की तरह राजनीति में काफी सक्रिय हैं।

भोपाल के बैरागढ़ में रातभर बिजली गुल

फाल्ट होने से 5 घंटे तक सप्लाई बंद रही; गर्मी से लोग हो गए परेशान

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बैरागढ़ (संत हिरदाराम नगर) में रातभर बिजली गुल रही। फाल्ट होने की वजह से करीब 5 घंटे तक सप्लाई बंद रही। इधर, रात में टेम्प्रेचर 30 डिग्री रहा। तेज गर्मी की वजह से लोग परेशान हो गए। कई लोगों ने तो घर के बाहर ही रात गुजारी। इधर, रात में ही कांग्रेस नेता नरेश ज्ञानचंदानी ने अफसरों के सामने आपत्ति जताई। इसके बाद फाल्ट ढूंढने की शुरुआत हो गई।

कांग्रेस नेता ज्ञानचंदानी ने बताया कि रात डेढ़ बजे ही बैरागढ़ इलाके में बिजली गुल हो गई। रात में ही बिजली कंपनी के स्थानीय अधिकारियों से संपर्क किया, लेकिन बात नहीं हो गई। इस पर एजीएम समीर शर्मा से बात की। उन्होंने रात में ही टीम भेजी गई। सुबह साढ़े 6 बजे तक बिजली व्यवस्था बहाल हो पाई। ज्ञानचंदानी ने बताया कि स्थानीय स्तर पर स्टॉफ की कमी के कारण सुधार कार्य में समय लग रहा है। बैरागढ़ में रात में ऐसा ही हुआ। यहां बिजली गुल होने पर सिटी से टीम आती है। बिजली बंद रहने से लोग परेशान होते रहे। रात उन्होंने घर के बाहर ही गुजारी।

ट्रांसफार्मर पर लोड बढ़ गया था, इस कारण फाल्ट हुआ- इस मामले में एजीएम शर्मा ने बताया कि लोड बढ़ने की वजह से ट्रांसफार्मर में फाल्ट हो गया। वहीं, 33 केवीए लाइन भी बंद हो गई। इस कारण टीम रात में ही जुटी रही। फाल्ट मिलते ही उसे सुधरवाया गया। इसके बाद बिजली सप्लाई शुरू कर दी गई।

महिला प्रोफेसर पर बोलेरो चढ़ाई

सागर में जानबूझकर हिट एंड रन की आशंका; नंबर प्लेट नहीं थी, ड्राइवर चेहरे पर कपड़ा बांधे था

सागर (नप्र)। सागर के देवरी में शासकीय नेहरू महाविद्यालय की प्रोफेसर को बोलेरो ने टक्कर मार दी। वे 10 फीट दूर गिरीं। प्रोफेसर जिला अस्पताल में भर्ती हैं। घटना बुधवार शाम की है। गुरुवार को इसका सीसीटीवी सामने आया। फुटेज देखकर ऐसा लग रहा है कि प्रोफेसर पर जानबूझकर बोलेरो चढ़ाने की कोशिश की गई है।

दरअसल, फुटेज में बोलेरो कॉलेज के पास पहले से खड़ी नजर आ रही है। जैसे ही प्रोफेसर कॉलेज के सामने वाली रोड क्रॉस कर दूसरी तरफ पहुंचीं, ठीक तभी बोलेरो उन्हें टक्कर मारते हुए निकली।

कार 6-7 बार पलटी, 20 फीट दूर गिरा मासूम

राजगढ़ में बैंक मैनेजर और उनके नाती-नातिन की मौत; शॉपिंग पर जा रहे थे इंदौर

सारंगपुर (नप्र)। राजगढ़ जिले के सारंगपुर में एक कार बेकाबू होकर पलट गई। इस हादसे में दो बच्चों समेत तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि 3 लोग घायल हो गए। इनमें से एक की हालत गंभीर बनी हुई है।

हादसा गुरुवार सुबह करीब 10 बजे हुआ। कार ब्यावरा से इंदौर की ओर जा रही थी। कार की स्पीड इतनी तेज थी कि हाइवे से उतरने के बाद 6 से 7 पलटी खाई। कार में सवार 4 साल का बच्चा उछलकर करीब 20 फीट दूर जा गिरा। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। कार में ही सवार 2 साल की बच्ची ने अस्पताल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया। वहीं कार चला रहे शख्स की इंदौर में इलाज के दौरान मौत हो गई।

दोनों बेटियों, नाती-नातिन को छोड़ने जा रहे थे बैंक मैनेजर- ब्यावरा की ग्रामीण बैंक में पदस्थ बैंक मैनेजर दिनेश शर्मा (65) कार चला रहे थे। उनके साथ उनकी बड़ी बेटी दीपिका (35) पति शुभम शर्मा निवासी खरगोन, दीपिका की बेटी निषिका (2) सवार थे। साथ ही छोटी बेटी पल्लवी (32) पति सनी शर्मा निवासी धामनोद और पल्लवी की 4 साल का बेटा इधांत, 9 साल की बेटी इदिका कार में मौजूद थे। दोनों बेटियां गर्मी की छुट्टी में पिता दिनेश शर्मा से मिलने ब्यावरा आए थे।

दिनेश शर्मा अपनी दोनों बेटियों और नाती-नातिन को लेकर इंदौर जा रहे थे। ताकि उन्हें वहां से शॉपिंग कराकर उनके ससुराल छोड़ सके। लेकिन इंदौर पहुंचने से पहले ही सारंगपुर में उनकी कार पलट गई।

इनमें से 4 साल के नाती इंधात की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि 2 साल की निषिका ने शाजापुर के अस्पताल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया। बैंक मैनेजर दिनेश शर्मा और उनकी छोटी पल्लवी को गंभीर हालत के चलते इंदौर रेफर किया गया। यहां दिनेश शर्मा की भी मौत हो गई। वहीं इदिका और दीपिका भी घायल हैं, उन्हें सारंगपुर के अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

उज्जैन में 18 मंदिर-मस्जिदों के हिस्से हटाए

अतिक्रमण तोड़ने पहुंची टीम; कहीं धरना तो कहीं लोगों ने स्वेच्छा से तोड़ना शुरू किया

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में चौड़ीकरण में आड़े आ रहे धार्मिकस्थलों और मकानों के अतिक्रमण को प्रशासन की टीम हटाने की कार्रवाई कर रही है।

मुस्लिम समाज के लोग इसके विरोध में उतर आए। महिलाएं मस्जिद के सामने ही सड़क पर बैठ गईं। नगर निगम और पुलिस के अधिकारियों ने समझाया, तब समाज के लोगों ने खुद ही मस्जिद के हिस्से को गिराने का निर्णय लिया। इधर, लालबाई फूलबाई चौराहे पर दिग्विजय हनुमान मंदिर को शिफ्ट किया जाना है। इसके विरोध में हिंदू संगठनों के लोग धरने पर बैठ गए। कार्रवाई रोक दी गई है। निगम अधिकारी समझाने की कोशिश कर रहे हैं। वहीं कुछ लोगों ने स्वेच्छा से अपने मकान का अतिक्रमण वाला हिस्सा तोड़ना शुरू कर दिया है।

केडी गेट से लेकर इमली तिराहा तक जून 2023 में चौड़ीकरण का काम शुरू हुआ था। बीच में 13 मंदिर, 1 मजार, 2 मस्जिद, 2 जैन मंदिर जद में आ रहे हैं। 32 मकानों की गैलरी और आगे के हिस्से भी तोड़े जाने हैं। इसके बाद इस रास्ते पर पोल पर लाइन खींचते हुए सेंट्रल लाइट लगाई जाएगी और दूसरे अधूरे काम पूरे किए जाएंगे।

प्रभावित हिस्सों को हटाने सुबह 5 बजे पहुंची टीम- प्रभावित हिस्सों को हटाने के लिए आज सुबह 5 बजे नगर निगम की टीम, पुलिस बल के साथ पहुंची। मार्ग 15 मीटर चौड़ा किया जाना है। लोकसभा चुनाव की अधिसूचना जारी होने से पहले मुख्यमंत्री मोहन यादव ने मार्ग से अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए थे। नगर निगम कमिश्नर आशीष पाठक, एडीएम अनुकूल जैन, एडिशनल एसपी जयंत राठौर सहित तीन सीएसपी और चार थानों के टीआई मौके पर पहुंचे।

काउंटिंग एजेंट्स के ट्रेनर तैयार करेगी कांग्रेस

25 मई को 27 लोकसभाओं से 100 अभिकर्ता भोपाल बुलाए, जानिए क्या है मतगणना की तैयारी

भोपाल (नप्र)। 4 जून को होने वाली लोकसभा चुनाव की मतगणना के पहले कांग्रेस सतर्क है। काउंटिंग में गड़बड़ी आशंका को देखते हुए कांग्रेस मप्र की 27 लोकसभा सीटों के काउंटिंग एजेंट्स की ट्रेनिंग के लिए मास्टर ट्रेनर तैयार करेगी। 25 मई को भोपाल में प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में 27 लोकसभाओं के करीब 100 मास्टर ट्रेनर्स को एक्सपर्ट के जरिए ट्रेनिंग दी जाएगी।

27 लोकसभाओं के कैंडिडेट्स के वर्कर होंगे ट्रेंड- एमपी कांग्रेस के चुनाव आयोग कार्य विभाग के प्रभारी जेपी धनोपिया ने बताया कि पीसीसी चीफ जीतू पटवारी को भोपाल में हुई लोकसभा प्रत्याशियों की 20 तारीख को बैठक आयोजित हुई थी। बैठक में चर्चा हुई थी कि इस मतगणना के संबंध में बारीकी से निगरानी और जांच की आवश्यकता है। कई तकनीकी बिंदुओं पर प्रशिक्षण की जरूरत है।

इन सब को लेकर 25 मई को भोपाल के कांग्रेस कार्यालय में सभी लोकसभाओं इंदौर और खजुराहो को छोड़ दिया जाए तो हर प्रत्याशी के दो-तीन लोगों को यहां ट्रेनिंग दी जाएगी। उन्हें तकनीकी कारण बताए जाएंगे कि कैसे 80-85 साल के लोगों के वोट देखे जाएंगे, कैसे पोस्टल बैलेट की गिनती होगी, कैसे ईवीएम का रखरखाव किया जाएगा, कैसे उसकी गणना होगी, कैसे पर्चियां की गिनती की जाएगी। इन सारी चीजों के बारे में बारीकी से जानकारी देने के लिए यहां प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में ट्रेनिंग देंगे।

मास्टर ट्रेनर करेंगे काउंटिंग एजेंट्स को ट्रेंड

धनोपिया ने बताया कि भोपाल में ट्रेनिंग के बाद मास्टर ट्रेनर जो वह यहां से सीख कर समझ कर जाएंगे। सब भ्रांतियां समझने के बाद वह आगे लोकसभा की मतगणना के अभिकर्ता नियुक्त किए जाने हैं। हर लोकसभा क्षेत्र में औसतन दो से ढ़ाई हजार मतदान केंद्र है, सभी के अलग-अलग एजेंट नियुक्त होते हैं। इन सभी काउंटिंग एजेंट्स को मतगणना की बारीकियां बताई जाएंगी।

4 जून को भोपाल में बनेगा कंट्रोल रुम

4 जून को भोपाल में प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में एक कंट्रोल रुम स्थापित होगा। जिसमें हमारे प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, वरिष्ठ नेता कमलनाथ , दिग्विजय सिंह मौजूद रहेंगे। कहीं भी कुछ भी समस्या होती है तो हम चुनाव आयोग से संपर्क करके समस्या का हल करेंगे।

फार्म 17सी से होगी क्रॉस मैचिंग

धनोपिया ने कहा- हमारी तैयारी है कि जिन-जिन जगह पर मतदान केंद्रों से फॉर्म 17सी प्राप्त हुए हैं। हम समरी बनवा कर उनको कंसोलिडेटेड कर रहे हैं। हर मतदान केंद्र से एक 17सी का फॉर्म मिलता है जिसमें मशीन का नंबर होता है, मतों की संख्या होती है और कितने मत डाले वह होता है। उसकी समरी बनाकर हम मतगणना करते समय ईवीएम मशीन के साथ 17सी फॉर्म का टैली करेंगे। देखेंगे कि कोई अंतर तो नहीं आ रहा, अंतर होगा तो हम शिकायत करेंगे। अगर 17सी फॉर्म के साथ हमारी मतगणना की संख्या मिल जाती है तो तो उसके बाद जो भी बढ़ाने का फर्जीवाड़ा हुआ है वह मायने नहीं रखता।

भोपाल के होटल की थाली में निकला कॉकरोच

मैनेजर को बताया तो भी मानने से किया इनकार; फूड इंस्पेक्टर से की शिकायत

भोपाल (नप्र)। भोपाल के घोड़ा नक्कास स्थित एक होटल के खाने की थाली में कॉकरोच निकला। मरा हुआ कॉकरोच देख ग्राहक चौंक उठे। यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। वहीं, फूड इंस्पेक्टर से भी शिकायत की गई है।

खाने की थाली में कॉकरोच निकलने पर ग्राहकों ने हंगामा कर दिया। ग्राहक इब्राहिम अली दाऊदी ने बताया, मंगलवार देर रात वे अपने दो साथी प्रभु पटेल और सचिन करोड़े के साथ घोड़ा नक्कास स्थित होटल में खाना खाने गए थे। उन्होंने 190 रुपए वाली थाली ऑर्डर की थी। जैसे ही वेटर ने थाली दी, सलाद में मरा हुआ कॉकरोच निकला। इस पर मैनेजर के सामने विरोध दर्ज कराया है। हालांकि, वे कॉकरोच की बात मानने को तैयार नहीं थे, लेकिन हमने वीडियो बना लिए थे। जिन्हें फूड इंस्पेक्टर को सौंपे हैं। ताकि, कार्रवाई हो सके। यह जनता के स्वास्थ्य से जुड़ा मामला है।

ग्राहक बोले-सीसीटीवी फुटेज देख लें- थाली में कॉकरोच निकलने के बाद ग्राहकों ने काफी देर तक हंगामा किया। उन्होंने इसे स्वास्थ्य से खिलवाड़ बताया है। दूसरी ओर, मैनेजर ने ग्राहकों को समझाइश भी दी। मैनेजर का कहना था कि सलाद में कॉकरोच नहीं था, लेकिन ग्राहकों ने होटल में लगे सीसीटीवी फुटेज देखने की बात कहीं। ताकि, सच्चाई सामने आ सके।

किचन में घुस गए ग्राहक- थाली में कॉकरोच मिलने के बाद ग्राहक होटल के किचन में भी चले गए और सफाई की हकीकत देखी। उन्होंने ग्राहकों को परोसे जा रहे सलाद को भी देखा। इसका वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

शिकायत मिलने पर कार्रवाई करेंगे- इस मामले में सीनियर फूड इंस्पेक्टर देवेंद्र दुबे ने बताया कि मामले में अभी शिकायत नहीं मिली है। जैसे ही शिकायत मिलेगी कार्रवाई की जाएगी। इधर, होटल की तरफ से मामले में पक्ष सामने नहीं आया है। हालांकि, हंगामे के दौरान मैनेजर ने कॉकरोच की बात से साफ इनकार कर दिया।